Daily
THE PHOTON NEWS
सच के हक में...
द फोटोन न्यूज Published from Ranchi
Ranchi ● Wednesday, 17 January 2024 ● Year : 02 ● Issue : 01 ● Ranchi Edition ● Page : 12 ● Price : 3 ● www.thephotonnews.com E-Paper : epaper.thephotonnews.com

सुविचार

श्रम और पूंजी दोनों मिलकर आश्चर्यजनक काम कर सकते हैं।

स्ट्रीमिंग को एक्सप्लोर करना चाहती हूं

SHARE

सेंसेक्स	:	73,128.77
निफ्टी	:	22,032.30

SARAFA

सोना	:	5,965
चांदी	:	78.00

(नोट : सोना 22 कैरेट प्रति ग्राम)

BRIEF NEWS

नशे में धुत होकर एके-47 लहराने वाला बॉडीगार्ड सस्पेंड

RANCHI : नशे में धुत होकर एके-47 राइफल लहराने वाले बॉडीगार्ड को एसएसपी ने तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया। यह घटना सोमवार की रात अरगोड़ा थाना क्षेत्र के अशोकनगर रोड नंबर-2 के पास हुई थी। एक महिला नेत्री का बॉडीगार्ड तनवीर खान नशे में धुत होकर एक व्यक्ति के साथ गाली-गलौज किया और उसपर सर्विस रायफल भी तान दिया। घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर अरगोड़ा पुलिस ने पहुंच कर बॉडीगार्ड को हिरासत में ले लिया था।

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में भूकंप के झटके

JAMMU : जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में मंगलवार को एक बार फिर भूकंप के झटके महसूस किए गए। रिक्टर पैमाने पर इस भूकंप की तीव्रता 3.6 मापी गई। भूकंप के झटके महसूस होते ही लोग अपने घरों से बाहर निकल आए। इसके चलते किसी तरह के जानमाल के नुकसान की फिलहाल सूचना नहीं मिली है।

लाल सागर में नहीं थम रहे हूती विद्रोहियों के हमले

NEW DELHI : लाल सागर में हूती विद्रोहियों का हमला थमने का नाम नहीं ले रहा है। दूसरी ओर इस संकट के बाद विश्व व्यापार पर भी खतरा मंडराने लगा है। समुद्री मार्ग से माल ढुलाई की दरें 600 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं। लाल सागर में माल्टा के ध्वज लगे पोत पर मंगलवार को मिसाइल से हमला किया गया जिसमें जहाज क्षतिग्रस्त हो गया। यूनान के अधिकारियों ने यह जानकारी दी। हमले की किसी भी समूह ने तत्काल जिम्मेदारी नहीं ली है लेकिन इसका शक यमन के हूती विद्रोहियों पर गया है। यूनान के जहाजरानी एवं द्वीप नीति मंत्रालय ने कहा कि ह्यजोग्राफियाह्व नामक पोत उत्तर से स्वेज नहर की ओर जा रहा था तभी इसपर हमला किया गया। मंत्रालय ने कहा कि पोत पर कोई सामान नहीं था और यह क्षतिग्रस्त हुआ है। इसके चालक दल में यूक्रेन के 20, फिलीपीन के तीन और जॉर्जिया का एक नागरिक शामिल है।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह सर्वे पर रोक

NEW DELHI : मथुरा की श्रीकृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह परिसर का सर्वे के इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है। मंगलवार को मुस्लिम पक्ष की याचिका पर सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने यह निर्णय लिया। कोर्ट ने हिंदू पक्ष की ओर से हाईकोर्ट में दाखिल अस्पष्ट आवेदन पर भी सवाल उठाए हैं। कोर्ट ने हिंदू पक्ष से कहा कि सर्वे कमिश्नर की नियुक्ति के लिए एक अस्पष्ट आवेदन दायर नहीं कर सकते हैं। इसका मकसद स्पष्ट होना चाहिए।

कोल लिंकेज केस में ईडी ने की कार्रवाई

कोयला कारोबारी इजहार गिरफ्तार

CRIME REPORTER RANCHI : कोल लिंकेज केस में ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) ने कोयला कारोबारी इजहार अंसारी को अरेस्ट कर लिया। बताया जा रहा है कि शाम 7:50 बजे इनकी गिरफ्तारी हुई। ईडी के अधिकारियों ने मंगलवार की सुबह से हजारीबाग और रामगढ़ स्थित ठिकानों पर छापेमारी की। हजारीबाग के लोहसिंघना थाना क्षेत्र स्थित कोयला कारोबारी इजहार अंसारी के ठिकानों पर ईडी ने दूसरी बार छापेमारी की है। ईडी की टीम सुबह 7 बजे कोयला व्यवसायी इजहार अंसारी के आवास पर पहुंच गयी थी। ईडी की आठ सदस्यीय टीम ने छापेमारी की। छापेमारी दल के साथ सीआरपीएफ के जवान भी थे। इससे पहले इजहार अंसारी के यहां 3 मार्च 2023 को ईडी की छापामारी हुई थी।

ईडी ने पहली बार 14 ठिकानों पर की थी छापेमारी

प्रवर्तन निदेशालय की टीम ने 3 मार्च 2023 को इजहार अंसारी के आवास समेत 14 ठिकानों पर छापेमारी की थी। मिल्लत कॉलोनी स्थित घर में छापेमारी के दौरान घर में 3.58 करोड़ रुपए नकद बरामद किए गए थे। जेएसएमडीसी के कोयला लिंकेज से संबंधित कागजात भी जब्त किए गए थे। हजारीबाग डेमोटांड़, बरही, पंचमाधव, जरबा, 15 माइल स्थित फैक्ट्री और रामगढ़ जिले के बोंगाबार में फैक्ट्री समेत अन्य स्थानों पर छापेमारी की गयी थी।

- हजारीबाग और रामगढ़ स्थित ठिकानों पर ईडी ने की छापेमारी
- छापेमारी के बाद एजेंसी ने कारोबारी को हजारीबाग से दबोचा

हजारीबाग स्थित आवास में छापेमारी के दौरान बाहर खड़ा जवान व इनसेट में कोयला कारोबारी इजहार अंसारी की फाइल फोटो।

निलंबित आईएएस पूजा सिंघल से जुड़ा है मामला

कोल लिंकेज प्रकरण से जुड़े मामले को लेकर इजहार अंसारी के ठिकाने पर ईडी की टीम छापेमारी कर रही है। बताया जाता है कि निलंबित आईएएस पूजा सिंघल जब खनन सचिव थीं, उस समय इजहार अंसारी ने बड़े पैमाने पर कोयले से अवैध कमाई की थी। इजहार अंसारी के नाम पर 12 से अधिक शेल कंपनियां है। इन्हीं शेल कंपनियों के नाम पर कोयला तस्करी के पैसों को इधर-उधर किया जाता था। ईडी की टीम इजहार अंसारी की सभी शेल कंपनियों के दस्तावेज को हासिल कर जांच में जुटी है। इस मामले में ईडी ने पिछले दिनों राज्य भर में 14 ठिकानों पर छापेमारी की थी।

रामगढ़ की कोयला फैक्ट्री में भी दस्तक : हजारीबाग के अलावा, रामगढ़ जिला स्थित फैक्ट्री पर भी ईडी की छापेमारी चली। मालूम हो कि कुजू ओपी क्षेत्र के बोंगबार में इजहार अंसारी की कोयले की फैक्ट्री है।

इधर, समन के बावजूद ईडी कार्यालय नहीं पहुंचे सीएम के प्रेस सलाहकार अभिषेक प्रसाद उर्फ पिंटू

साहिबगंज में हुए अवैध खनन मामले में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के प्रेस सलाहकार अभिषेक प्रसाद उर्फ पिंटू प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के समन के बावजूद मंगलवार को ईडी कार्यालय नहीं पहुंचे। हालांकि, काफी देर तक ईडी के अधिकारी अभिषेक प्रसाद का इंतजार करते रहे लेकिन वह अबतक नहीं पहुंचे हैं। ईडी ने गत छह जनवरी को समन जारी कर प्रेस सलाहकार को 16 जनवरी को ईडी के क्षेत्रीय कार्यालय पूछताछ के लिए बुलाया था।

एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर में बेटियों का कारनामा

इटली को 5-1 से हराकर भारत शान से सेमीफाइनल में, जर्मनी से होगा भीड़ंत

PHOTON NEWS RANCHI : एफआईएच महिला हॉकी कवालीफायर में इटली को 5-1 से हराकर भारत ने शान से सेमीफाइनल में प्रवेश किया। अब भारत का मुकाबला गुरुवार को जर्मनी से होगा। भारत ने मैच के पहले ही मिनट में पेनल्टी कॉर्नर हासिल किया और उदिता ने उसे गोल में बदलकर टीम को बढ़त दिला दी। भारत की ओर से दूसरा गोल दीपिका ने 41वें मिनट में कर भारत की बढ़त को दोगुनी कर दी। यह पेनाल्टी शूटआउट था। झारखंड की बेटी सलीमा टेटे ने मैच के 45वें मिनट में एक शानदार फिल्ड गोल कर भारत की बढ़त को 3 तक पहुंचा दिया। भारत के लिए आखिरी क्वार्टर में चौथा गोल नवनीत कौर ने किया। पांचवा गोल भारतीय टीम को दर्शकों का भरपूर साथ मिला और पूरा स्टेडियम खचाखच भरा था।

5-1 से भारत ने इटली को

01 मिनट में ही मिला पेनल्टी कॉर्नर

41 वें मिनट में बढ़त हुई दोगुनी

45 वें मिनट में सलीमा का कमाल

05 वें गोल में दर्शकों का मिला साथ

टीम के सभी खिलाड़ियों ने दिखाई अपनी स्ट्रेंथ : सविता

भारतीय टीम की कप्तान सविता ने कहा कि हमें पता था कि हमें बड़े अंतर से जीतना है। इसे ध्यान में रख कर हम तैयारी कर रहे थे। उसी सोच के साथ हम ग्राउंड में आए। हमने अपनी अटैकिंग स्ट्रेंथ के साथ शुरूआत की। पूरी टीम ने अपनी स्ट्रेंथ दिखाई। अगले मुकाबले के बारे में उन्होंने कहा कि जर्मनी अच्छी टीम है। हम अपनी स्ट्रेंथ के साथ अपनी हॉकी खेलने का प्रयास करेंगे। उनके स्ट्रेंथ को डिफेंस करने का भी प्रयास करेंगे। निक्की प्रधान ने कहा कि पहली हार के बाद कहीं न कहीं आत्मविश्वास में कमी आई थी। लेकिन हमने एक टीम बन कर खेला। सभी ने अपना बेहतर खेल दिखाया। रांची के दर्शकों के सपोर्ट के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। उन्होंने भी हमारा खूब हौसला अफजाई की है।

मंत्री सत्यानंद भोक्ता का डिस्चार्ज पिटीशन खारिज

RANCHI : एसीबी के विशेष न्यायाधीश प्रकाश झा की अदालत ने मंगलवार को कृषि घोटाला मामले में तत्कालीन कृषि मंत्री सह वर्तमान नियोजन मंत्री सत्यानंद भोक्ता के डिस्चार्ज पिटीशन को खारिज कर दिया है। मामले में जल्द ही उन पर आरोप तय किया जाएगा। इससे पूर्व अदालत ने छह जनवरी डिस्चार्ज पिटीशन पर सुनवाई के बाद आदेश सुरक्षित रख लिया था। अदालत ने मंगलवार को अपना सुरक्षित आदेश सुनाया। मंत्री सत्यनाद भोक्ता ने आरोप मुक्त करने के लिए आठ दिसंबर 2022 को ही डिस्चार्ज पिटीशन अदालत में दाखिल की है।

ज्ञानवापी में टैंक की सफाई करें : SC

कहा- संरचना से छेड़खानी न हो, 2022 में मिली थी शिवलिंगनुमा आकृति

बड़ा फैसला

AGENCY VARANASHI : वाराणसी में ज्ञानवापी परिसर में बने टैंक की 20 महीने बाद सफाई होगी। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को इसका आदेश दिया है। कोर्ट ने कहा कि टैंक की सफाई डीएम वाराणसी की देख-रेख में होगी। इस दौरान टैंक में बनी संरचना से छेड़खानी नहीं होनी चाहिए। ज्ञानवापी के वजूस्थल में बने टैंक में मई 2022 में कमिश्नर सर्वे के दौरान कथित शिवलिंगनुमा आकृति मिली थी। हिंदू पक्ष ने दावा किया था कि यह शिवलिंग है। जबकि मुस्लिम पक्ष यानी अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी ने इसे फव्वारा बताया था। इसके बाद 17 मई 2022 को वाराणसी कोर्ट ने इस वजूस्थल को सील करने का आदेश दिया था।

- मंगलवार को सुनवाई के दौरान अदालत ने सफाई का आदेश दिया
- 84 दिनों तक चला ज्ञानवापी परिसर का एएसआई सर्वे
- एएसआईने तीन हिस्सों में तैयार की रिपोर्ट

कोहरे के कारण फ्लाइट में अब नहीं होगी देरी

सभी मेट्रो एयरपोर्ट पर वार रूम होंगे स्थापित

AGENCY NEW DELHI : कोहरे से उत्पन्न व्यवधानों को देखते हुए यात्रियों की असुविधा को कम करने के लिए सोमवार को सभी एयरलाइनों को मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी की जा चुकी है। नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने मंगलवार को सोशल मीडिया एक्स पर इस बात की जानकारी दी। मंत्री ने एक्स पर लिखा है कि इन एसओपी के अलावा सभी 6 मेट्रो हवाई अड्डों के लिए प्रतिदिन तीन बार घटना की रिपोर्टिंग मांगी गई है। यात्री असुविधा के संबंध में किसी भी मुद्दे का तुरंत समाधान करने के लिए 6 मेट्रो हवाई अड्डों पर हवाई अड्डों और एयरलाइन ऑपरेटरों द्वारा 'वॉर रूम' स्थापित किए जाएंगे। चौबीसों घंटे पर्याप्त सीआईएसएफ जनशक्ति की उपलब्धता सुनिश्चित की जाएगी। मंत्री ने यात्रियों को आश्वस्त करते हुए लिखा कि मैं सभी को आश्वस्त करना चाहूंगा कि कोहरे से संबंधित प्रभाव को कम करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं।

- सभी एयरलाइनों के लिए मानक संचालन प्रक्रिया जारी
- 6 मेट्रो हवाई अड्डों के लिए प्रतिदिन तीन बार घटना की रिपोर्टिंग मांगी गई

माल्या-नीरव-संजय को लंदन से लाने की तैयारी

NEW DELHI : भारत सरकार के भगोड़े अपराधियों को लंदन से लाने की तैयारी कर रही है। इसमें बंद हो चुकी किंगफिशर एयरलाइंस के मालिक विजय माल्या, हीरा व्यवसायी नीरव मोदी और आर्म्स डीलर संजय भंडारी शामिल हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, इन्हें लाने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), सीबीआई और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) की टीम लंदन जाएगी। सूत्रों के मुताबिक, विदेश मंत्रालय के सीनियर अफसरों की टीम और ब्रिटेन स्थित भारतीय हाईकमीशन के बीच लंदन में मीटिंग शेड्यूल्ड है। इस मीटिंग में ब्रिटेन के अफसर भी शामिल होंगे। इसमें भारत के अधिकारी ये जानकारी जुटाएंगे कि इन भगोड़े अपराधियों ने लंदन और अन्य देशों में कौन सी प्रॉपर्टीज में पैसा लगाया और कहां-कहां ट्रांजैक्शन किया। भारत और ब्रिटेन के बीच आपस में जानकारियां साझा करने के लिए म्यूचुअल लीगल असिस्टेंस ट्रीटी (एमएलएटी) है। इसी संधि के तहत भगोड़े आर्थिक अपराधियों को लेकर दूसरे देश से इन्फॉर्मेशन हासिल की जाती है।

कोलकाता से रांची आ रही शिवम बस में 29 लाख रुपये की लूट, तीन लोगों का सिर फोड़ा

अपराधियों ने मुख्य रूप से सब्जी कारोबारियों को बनाया अपना निशाना

CRIME REPORTER RANCHI : रांची टाटा राष्ट्रीय राजमार्ग के दशम फॉल थाना क्षेत्र में कोलकाता से रांची आ रही शिवम बस डब्ल्यू बी 41 जे 9253 में सवार लोगों के साथ अपराधियों ने हथियार के बल पर 29 लाख 24 हजार रुपये लूट लिया। अपराधियों ने मुख्य रूप से सब्जी कारोबारियों को अपना निशाना बनाया। अन्य यात्रियों के साथ लूटपाट की घटना नहीं हुई है। चार अपराधियों ने हथियार और चाकू के बलपर लूटपाट की घटना को अंजाम दिया। पुलिस का कहना है कि दशम फॉल थाना क्षेत्र के नावाडीह के पास बस पहुंची तो बस में सवार अपराधियों ने हथियार के बल बस को रुकवा दिया।

इन कारोबारियों के साथ हुई लूटपाट

सादिक आलम 20 हजार, मो गुफरान 1 लाख 80 हजार, अजय कुमार पिस्का नगड़ी 60 हजार, मो शाहिद चान्हो 78 हजार, अयोध्या महतो नगड़ी 1 लाख, ओम महतो नगड़ी 70 हजार, राजेंद्र साहू बेड़ों 1 लाख 60 हजार, फिरोज आलम इटकी 1 लाख 50 हजार, सुकेश गुप्ता पिस्का 2 लाख, जियाउल हक केरो लोहरदगा 2 लाख, जलेश्वर महतो नगड़ी 2 लाख, विक्रम महतो नगड़ी 50 हजार, महावीर महतो नगड़ी 1 लाख, मो इख्तियार बेड़ो 4 लाख, इंद्रशेखर सिंह पिस्का 10 हजार, टिंकू कुमार सिंह पिस्का नगड़ी 2 लाख 20 हजार,मो शकील बेड़ो 1 लाख, रियाज खान बेड़ों 1 लाख, ट्रक का भाड़ा 2 लाख 76 हजार। कारोबारियों के अनुसार अनुसार कुल 29 लाख 24 हजार की लूट हुई।

कोलकाता में हथियार के साथ बस में सवार हो गए थे अपराधी

अपराधियों ने पहले हथियार से बस चालक मो नौशाद, खलासी अब्दुल सत्तार का सिर फोड़ दिया। खलासी अब्दुल सत्तार अंसारी ने बताया कि बुंडू फ्लाई ओवर के पास से 2 स्कूली लड़कियों को बस में बैठाया गया था। खलासी लड़कियों के पास भाड़ा लेने पहुंचा तो एक अपराधी से सिर पर वार कर दिया। खलासी इसके बाद बेहोश हो गया। चालक ने डर से बस रोक दी। इसके बाद चारों अपराधी जंगल की ओर भाग निकले। घटना की सूचना पाकर ग्रामीण एसपी मनीष टोप्पो घटना स्थल पर पहुंचे और घटना के बारे में जानकारी ली। बस के खलासी अब्दुल सत्तार के अनुसार कोलकाता के बाबुघाट में बस में 38 यात्री बैठे थे। कोलकाता के बाद कोई यात्री बस में सवार नहीं हुआ था। चारों अपराधी कोलकाता से ही बस में सवार हो गए थे। अपराधियों को पता था कि तीनों सब्जी कारोबारी के पास पैसा है। मौके देखकर अपराधियों ने दशम फाल इलाके में लूट की घटना को अंजाम दिया। लूट की घटना के बाद इटकी और बेड़ो से दशम फाल थाना पहुंचे कारोबारियों ने ग्रामीण एसपी को बताया कि कोलकाता से वह पैसा लेकर बस में सवार हुए थे। जिस प्रकार बस में लूट की घटना को अंजाम दिया गया उससे यह स्पष्ट होता है कि अपराधी कोलकाता से ही कारोबारियों के पीछे लग गए थे।

बोले- आजकल पूरा देश राममय प्रभु श्रीराम सुशासन के प्रतीक, गांधीजी भी रामराज्य की बात करते थे

राम राज्य का विचार ही सच्चे लोकतंत्र का विचार : प्रधानमंत्री

AGENCY AMRAWATI : अयोध्या में प्राणप्रतिष्ठा से ठीक 6 दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो दिन के आंध्र प्रदेश-केरल दौरे पर हैं। मंगलवार को उन्होंने लेपाक्षी पहुंचकर 486 साल पुराने वीरभद्र मंदिर में पूजा की। मंदिर परिसर में बैठकर पीएम मोदी ने राम भजन भी किया और रंगनाथ रामायण पर आधारित कठपुतलियों के जरिए प्रदर्शित रामकथा भी देखी। इसके बाद, पीएम मोदी सत्यसाई जिले के पलासमुद्रम पहुंचे। जहां उन्होंने नेशनल एकेडमी ऑफ कस्टम, इनडायरेक्ट टैक्स एंड नार्कोटिक्स (एनएसीआईएन) इंस्टीट्यूट का इनॉगरेशन किया। यहां मोदी ने कहा कि आज पूरा देश राममय है। खुद महात्मा गांधी भी देश में राम राज्य की बात करते थे। उन्होंने कहा था- राम राज्य का विचार ही सच्चे लोकतंत्र का विचार है। पीएम मोदी मंगलवार शाम को केरल पहुंचे। जहां उन्होंने कोच्चि के एनार्कुलम में रोड शो किया।

क्या है एनएसीआईएन : आंध्र प्रदेश में एनएसीआईएन की स्थापना को केंद्र सरकार ने आंध्र प्रदेश पुनर्गठन अधिनियम 2014 के तहत मंजूरी दी थी। 2022 में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कैंपस के भूमि भूजन में हिस्सा लिया था। तब निर्मला ने कहा था कि इंस्टीट्यूट के लिए पहले चरण में 729 करोड़ रुपये खर्च किए जायेंगे। आईएएस अधिकारियों को जिस तरह मसूरी के लाल बहादुर शास्त्री एकेडमी और आईपीएस अधिकारियों को हैदराबाद के सरदार वल्लभाई पटेल एकेडमी में ट्रेनिंग दी जाती है।

पीएम के संबोधन की बड़ी बातें

- पहले हमारे यहां प्रोजेक्ट्स को अटकाने, लटकाने और भटकाने की प्रवृत्ति रही है, जिस कारण से देश को बहुत नुकसान हुआ है।
- पहले बिजनेस से जुड़े लोगों को परेशान किया जाता था। हमने जीएसटी के रूप में देश को नई व्यवस्था दी। इनकम टैक्स को आसान बनाया।
- इन सारे रिफॉर्म के कारण आज देश में रिकॉर्ड टैक्स कलेक्शन हो रहा है।
- बीते 10 साल में हमारी सरकार ने लागत का ध्यान रखा है और योजनाओं को समय पर पूरा करने पर जोर दिया है।
- 2014 में 2 लाख तक की इनकम टैक्स फ्री थी। हमने इसे बढ़ाकर 7 लाख पहुंचा दिया। 2014 के बाद से हमारी सरकार ने जो टैक्स में छूट दी और सुधार किए।

प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम मोदी-आरएसएस का फंक्शन : राहुल गांधी

KOHIMA : भारत जोड़ो न्याय यात्रा के तीसरे दिन राहुल गांधी नगालैंड की राजधानी कोहिमा पहुंचे। उन्होंने कहा कि 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाला रामलला के प्राण-प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का फंक्शन है। इसे पूरी तरह से चुनावी कलेवर दिया गया है। भाजपा ने इसका जवाब देते हुए कहा कि वे ख्याली दुनिया में रहते हैं। हिंदू धर्म के जो लीडर/अथॉरिटी हैं, उन्होंने कहा है कि वो इस राजनीतिक कार्यक्रम में नहीं जा पाएंगे। इसलिए कांग्रेस अध्यक्ष ने वहां जाने से इनकार किया था। जहां तक धर्म की बात है, हम सभी धर्मों के साथ हैं। हम ये कहना चाहते हैं कि कांग्रेस पार्टी से जो भी जाना चाहे, वो जा सकता है। जो सचमुच धर्म को मानते हैं, वो धर्म के साथ 'पर्सनल रिश्ता' रखते हैं।

डीपफेक पर लगाम लगाने की तैयारी में भारत सरकार

सात दिनों में जारी होंगे नये आईटी नियम

AGENCY NEW DELHI : आए दिन कोई ना कोई सिलिब्रिटी डीपफेक के शिकार हो रहें है। आपको बता दें टाटा ग्रुप के मुखिया रतन टाटा, इन्फोसिस के फाउंडर नारायण मूर्ति सहित रश्मिका मंदाना, काजोल, कैटरीना कैफ, आलिया भट्ट सहित कई और शख्सियत भी डीपफेक की शिकार हो चुकी हैं और ऐसे में समय-समय पर इन्हें सामने आकर अपना स्टैंड भी क्लियर करना पड़ा है। ऐसे में डीपफेक को लेकर अब सरकार ने सख्त कदम उठाया है। आपको बता दें कि अगले सात दिनों के अंदर सरकार नई आइटी नियम लाने वाली है। इस नियम में सख्त कदम उठाए जाएंगे और सख्ती से कार्रवाई भी होगी। अब टीम इंडिया के पूर्व महान क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर ने एक डीपफेक वीडियो का भंडाफोड़ किया है। इस डीपफेक वीडियो में दिखाया गया है कि उनकी बेटी सारा तेंदुलकर ऑनलाइन वीडियो गेम के जरिए काफी कमाई करती हैं।

BRIEF NEWS

जेसीबी वाहन की बैट्री चोरी मामले में दो गिरफ्तार

KODERMA : जेसीबी वाहन से बैट्री चोरी मामले में दो लोगों कोई गिरफ्तार किया गया है। एसपी अनुदीप सिंह ने मंगलवार को प्रेस वार्ता में बताया कि 15 जनवरी को यह सूचना प्राप्त हुई कि तिलैया थाना क्षेत्र से अज्ञात चोरों द्वारा एक जेसीबी की बैट्री की चोरी कर ली गई है। इस घटना के उद्भेदन के लिए तिलैया थाना प्रभारी विनोद कुमार के नेतृत्व में एक टीम का गठन किया गया। गठित टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर त्वरित कार्रवाई करते हुए दो अभियुक्तों को चोरी की गई बैट्री, बैट्री खोलनें में इस्तेमाल किये जाने वाले औजार, घटना में प्रयुक्त दो मोटरसाईकिल एवं दो मोबईल के साथ गिरफ्तार किया। गिरफ्तार अभियुक्त में से एक अखलाख अंसारी का पूर्व में भी अपराधिक इतिहास रहा है, इसके विरूद्ध हजारीबाग जिले के बरही थाना में चोरी के दो मामले एवं लोहसिंघना थाना में चोरी का एक मामला दर्ज है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार अखलाख अंसारी (23) और मो शमशेर (25) शामिल है। वहीं इस बाबत 2 मोटरसाईकिल, 1 चोरी की गई बैट्री, 2 मोबाईल, बैट्री खोलनें में इस्तेमाल किये जाने वाले औजार बरामद किया गया है।

सड़क दुर्घटना में अधेड़ की मौत

RAMGARH : कुजू ओपी क्षेत्र के बोंगाबार नीम टोला के समीप बाईपास सड़क पर स्कूटी दुर्घटना में स्कूटी सवार एक अधेड़ की मौत हो गई। जानकारी के अनुसार दिगवार हथमारा निवासी सलीम अंसारी (58) कुजू कोलियरी स्थित अपनी दुकान से वापस स्कूटी पर सवार होकर घर लौट रहे थे। इस दौरान अज्ञात वाहन की चपेट में आने से स्कूटी दुर्घटनाग्रस्त हो गया और सलीम गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची कुजू पुलिस ने ग्रामीणों के सहयोग से उसे इलाज के लिए एंबुलेंस से रामगढ़ सदर अस्पताल भेजा, जहां इलाज के क्रम में उसकी मौत हो गई। कुजू पुलिस ने उसका अंत्यपरीक्षण कर शव परिजनों को सौंप दिया। इसके बाद परिजनों ने स्थानीय कब्रिस्तान में शव का मिट्टी मंजिल किया।

हजारीबाग उपायुक्त ने सड़क सुरक्षा जागरुकता रथ किया रवाना

HAZARIBAGH : जिले में सड़क सुरक्षा माह के तहत मंगलवार को उपायुक्त नैन्सी सहाय ने समरहणालय परिसर से जागरुकता रथ को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। उपायुक्त ने कहा कि रथ जिले के विभिन्न प्रखण्डों में भ्रमण कर सड़क सुरक्षा को लेकर लोगों जागरूक करेगा। साथ पूरे माह भर जिले के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में कई तरह की प्रतियोगिताएं आयोजित किया जाएगा। इसके अलावा सड़कों पर चलने वाले वाहन चालक व आम राहगीरों को भी सड़क सुरक्षा नियमों की जानकारी देकर जागरूक करने पर विशेष फोकस किया जायेगा। इस काम में परिवहन विभाग, पुलिस- ट्रैफिक पुलिस, अभियंत्रण विभाग, शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संगठनों की भागीदारी होगी। इस अवसर पर जिला परिवहन पदाधिकारी वैद्यनाथ कामती सहित कई अन्य मौजूद थे।

होल्डिंग नंबर नहीं मिलने से जमीन की रजिस्ट्री पर लगा प्रतिबंध समाप्त

सात दिनों में आवंटित नहीं हुआ होल्डिंग नंबर तो जमीन की हो जाएगी रजिस्ट्री

PHOTON NEWS RAMGARH : रामगढ़ छावनी परिषद क्षेत्र में होल्डिंग नंबर नहीं मिलने की वजह से जमीन की रजिस्ट्री पर लगा प्रतिबंध समाप्त हो गया है। लेकिन हर रजिस्ट्री से पहले छावनी परिषद को इसकी सूचना निबंधन कार्यालय द्वारा दी जाएगी। मंगलवार को जिला अवर निबंधक मनोजीत कुमार ने अधिवक्ताओं के प्रतिनिधिमंडल को इस बात की जानकारी दी।

अधिवक्ताओं के प्रतिनिधिमंडल के साथ मनोजीत कुमार। ● फोटोन न्यूज

अधिवक्ता संघ का प्रतिनिधिमंडल जब उनसे मिलने पहुंचा तो जिला अवर निबंधन ने बताया कि छावनी परिषद क्षेत्र में जमीन की रजिस्ट्री पर लगा रोक खत्म हो गया है। जिस भी व्यक्ति को अपनी जमीन के रजिस्ट्री करानी है वह अपने पूरे दस्तावेज तैयार कर निबंधन कार्यालय में जमा करा दें। उस जमीन के रजिस्ट्री से पहले होल्डिंग नंबर आवंटित करने के लिए एक ईमेल छावनी परिषद को किया जाएगा। अगर 7 दिनों के अंदर छावनी परिषद कार्यालय से होल्डिंग नंबर आवंटित नहीं होता है तो उस जमीन के रजिस्ट्री बिना होल्डिंग नंबर के ही कर दी जाएगी।

जिला अधिवक्ता संघ का प्रतिनिधिमंडल संघ के अध्यक्ष आनंद अग्रवाल की अध्यक्षता में जिला अवर निबंधन पदाधिकारी मनोजीत कुमार से जाकर मिला। उनसे राज्य सरकार के आदेश के आलोक में उपायुक्त रामगढ़ के निदेर्शानुसार छावनी परिषद के आठों वार्ड की रजिस्ट्री का कार्य शुरू करने का अनुरोध किया। इस अवसर पर जिला अधिवक्ता संघ के संयुक्त सचिव शंभूनाथ प्रसाद, पूर्व उपाध्यक्ष झलक देव महतो, अधिवक्ता प्यारी महतो उपस्थित थे।

आर्म्स एक्ट मामले में दोषी चार आरोपियों को तीन साल की सजा

PHOTON NEWS DUMKA : न्यायिक दंडाधिकारी, प्रथम श्रेणी सार्थक शर्मा की अदालत ने मंगलवार को आर्म्स एक्ट में दोषी करार देते हुए हंसडीहा के चार अपराधियों को तीन-तीन साल की सजा एवं जुमार्ना किया है। अपराधियों में जयकांत यादव, मुजाहिद अंसारी, विभास चौधरी एवं आनंद राउत है। न्यायालय ने अभियुक्तों को आर्म्स एक्ट 25(1-बी) के दोषी पाते हुए तीन साल और पांच हजार रुपया जुमार्ना की सजा सुनाई। जुमार्ना नहीं जमा करने पर तीन माह की अतिरिक्त सजा काटनी होगी। वहीं आर्म्स एक्ट 26 (1) में भी न्यायालय ने तीन साल की सजा एवं 5 हजार जुमार्ना किया है।

जुमार्ना नहीं देने पर तीन माह अतिरिक्त सजा भुगतनी होगी। सभी सजाएं साथ-साथ चलेंगी। मामले में 9 गवाहों की गवाही गुजरी। बचाव पक्ष की ओर से अधिवक्ता दीपक यादव व सरकार की ओर से एपीपी भवेंद्र सोरेन ने बहस की।

जानकारी के अनुसार नौ मार्च 21 को हंसडीहा थाना प्रभारी आकृष्ट अमन को पता चला कि जलवे पहाड़ के पास एक बाइक में दो युवक खड़े हैं। दोनों संदिग्ध प्रतीत हो रहे हैं। थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे तो दोनों बाइक से भागने लगे। पुलिस ने पीछा कर बमनखेता गांव के जयकांत यादव व मुस्लिम मुहल्ला के मुजाहिद अंसारी को धर दबोचा। तलाशी में दोनों के पास से तमंचा मिला। पूछताछ में दोनों ने स्वीकार किया कि आठ मार्च को हंसडीहा निवासी विभास चौधरी व आनंद राउत के साथ मिलकर एक ट्रक के साथ साथ लूटपाट की थी।

जिला मुख्यालय पर दलित शोषण मुक्ति मंच का धरना

खरखार में दलितों पर हमले के दोषियों की गिरफ्तारी की मांग

PHOTON NEWS KODERMA : जिले के नवलशाही थाना क्षेत्र अंतर्गत खरखार पासवान टोला में दबंगों के द्वारा दलित परिवार के महिला सहित अन्य लोगों के साथ मारपीट करने एवं जाति के नाम से गाली-गलौच करने की घटना के 15 दिन बीत जाने के बावजूद अब तक गिरफ्तारी नहीं होने पर दलित संगठनों में रोष है। हमलावर दबंगों को अविलंब गिरफ्तार करने की मांग पर जिला मुख्यालय में एसपी कार्यालय के समक्ष दलित शोषण मुक्ति मंच के बैनर तले मंगलवार को धरना दिया गया।

धरने पर बैठे दलित शोषण मुक्ति मंच के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

धरना का नेतृत्व दलित शोषण मुक्ति मंच के जिलाध्यक्ष दिनेश रविदास और सचिव शम्भु पासवान ने किया। अध्यक्षता पासवान जनकल्याण समिति के जिलाध्यक्ष बाला लखेन्द्र पासवान और संचालन प्रेम प्रकाश पासवान ने किया। वक्ताओं ने कहा कि झारखंड में दलितों पर अत्याचार लगातार बढ़ रहा है और प्रशासन की लापरवाही के कारण दबंगों का मनोबल बढ़ रहा है और पीड़ितों को न्याय नहीं मिल रहा है।

वक्ताओं ने कहा कि यदि जल्द ही अभियुक्तों की गिरफ्तारी नहीं हुई तो अनिश्चितकालीन रोड जाम और आमरण अनशन करने के लिए बाध्य होगें। धरना के बाद पीड़िता के साथ सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल पुलिस अधीक्षक से मिला और अपराधियों की गिरफ्तारी की मांग से संबंधित ज्ञापन सौंपा। एसपी अनुपदीप सिंह ने जल्द कार्रवाई करने का आश्वासन दिया।

दिव्यांगों के बीच सांसद ने बांटा ट्राई साइकिल, जरूरतमंदों को दिया कंबल

लक्ष्य सही हो तो संसाधन भी मिल जाते हैं, तभी विकास संभव है : जयंत सिन्हा

PHOTON NEWS RANCHI : लक्ष्य सही हो तो संसाधन भी मिल जाते हैं। तभी जनहित का कार्य संभव हो पता है। यह बात मंगलवार को रामगढ़ शहर के ब्लॉक कार्यालय के पास एक समारोह में सांसद जयंत सिन्हा ने कही। इस समारोह में उन्होंने 10 दिव्यांगों के बीच ट्राई साइकिल और 500 जरूरतमंदों कोई भी कंबल का वितरण किया। सांसद जयंत सिन्हा ने कहा कि हमारा लक्ष्य जनहित, देशहित और समाजहित है। उन्होंने महात्मा गांधी का उल्लेख करते हुए कहा कि जब आपका लक्ष्य सही है तो आपको हर साधन उपलब्ध होगा और आपको हमेशा सफलता मिलेगी।

ट्राई साइकिल व कंबलों का वितरण करते जयंत सिन्हा। ● फोटोन न्यूज

हजारीबाग में बनकर तैयार हो गया अक्षय पात्र, राज्यपाल करेंगे उद्घाटन : कार्यक्रम के दौरान सांसद जयंत सिन्हा ने कहा कि राज्य का पहला अक्षय पत्र हजारीबाग में बनकर तैयार हो गया है। जिसका उद्घाटन 19 जनवरी को राज्यपाल के कर कमल से होगा। उन्होंने बताया कि इस अक्षय पत्र से जिले की एक लाख बच्चों को पोषण आहार मिलेगा। विद्यालयों में बच्चों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए केंद्र सरकार 6. 20 रुपए राज्य सरकार को देती है। इसमें राज्य में काम कर रही अन्य कंपनियां 8 रुपए की सहयोग राशि जोड़ रही है। जिससे बच्चों को वह पोषण आहार मिलेगा जो बाजार में 40 से 50 रुपए में भी नहीं मिलता है।

जनता ने दिया आशीर्वाद, तो हर सुख दुख में शामिल रहते हैं जयंत : भाजपा नेता प्रकाश मिश्रा ने कहा सांसद जयंत सिन्हा हमेशा जनता के सुख-दुख में शामिल रहते हैं। यह हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता का ही आशीर्वाद है कि उन्हें सांसद महारत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जिला अध्यक्ष प्रवीण मेहता ने सांसद महारत्न पुरस्कार से जयंत सिन्हा के नाम की घोषणा पर भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओ की तरफ से बधाई और शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि रंजीत पाण्डेय, नगर अध्यक्ष शिव कुमार महतो, भाजपा नेता रंजीत कुमार सिन्हा, नारायण चंद भौमिक, जिला मंत्री राजेन्द्र कुशवाहा, वरुण सिंह सहित कई लोग मौजूद थे।

विधायक कमलेश ने जपला-नबीनगर पथ की रखी आधारशिला, 49 करोड़ से बनेगी 16 किमी सड़क

PHOTON NEWS PALAMU : जिले के हुसैनाबाद की सबसे महत्वपूर्ण जपला-नबीनगर पथ के निर्माण कार्य का शिलान्यास मंगलवार को विधायक कमलेश कुमार सिंह ने किया। मौके पर विधायक कमलेश कुमार सिंह ने कहा कि काफी प्रयास के बाद झारखंड सरकार ने जपला-नबीनगर मुख्य पथ के चौड़ीकरण व मजबूतीकरण की स्वीकृति दी है। 15 किलोमीटर सड़क का निर्माण 49 करोड़ रुपये की लागत से किया जाएगा। उन्होंने कहा कि हुसैनाबाद की करीब सभी महत्वपूर्ण सड़कों को दुरुस्त कर दिया गया है। कुछ ग्रामीण सड़कों की निविदा निकल चुकी है। वर्ष 2024 में सभी सड़कों को दुरुस्त कर लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पथ की चौड़ाई 5.50 मीटर होगी जबकि सड़क निर्माण कार्य 18 महीने में पूरा करने का लक्ष्य है। उन्होंने कहा कि जल्द ही अन्य सड़कों का भी शिलान्यास कर कार्य शुरू कराया जाएगा।

शिलान्यास कार्यक्रम में उपस्थित विधायक व अन्य। ● फोटोन न्यूज

विधायक ने कहा कि इस सड़क के निर्माण हो जाने से हुसैनाबाद अनुमंडल क्षेत्र के अलावा बिहार के औरंगाबाद जिला के लोगों को भी लाभ होगा। विधायक ने इशारे-इशारे में विरोधियों पर प्रहार करते हुए कहा कि अब भी जिन्हें विकास नहीं दिख रहा है, वह अपनी आंखों का ऑपरेशन करा लें। उपस्थित लोगों ने सड़क निर्माण के लिए विधायक का आभार जताया। इस मौके पर विधायक प्रतिनिधि अजीत सिंह के अलावा एनसीपी कार्यकर्ता व जनता उपस्थित थे।

कांग्रेस की पदयात्रा में उमड़ी भीड़, पलामू गढ़वा से होकर गुजरेंगे राहुल गांधीः प्रभारी

PHOTON NEWS PALAMU : जिले के सतबरवा प्रखंड के बकोरिया से सतबरवा तक कांग्रेसियों ने मंगलवार को पदयात्रा तथा बाइक पर सवार होकर हजारों समर्थकों के साथ लोगों से मुलाकात की। इस दौरान कांग्रेसियों द्वारा वाद्य यंत्रों पर कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद, राहुल गांधी के अलावा निकाले गए न्याय यात्रा के समर्थन में नारेबाजी करते हुए लोगों के बीच गए और मेनिफेस्टो भी बांटा। बकोरिया में एनएच 75 से होते हुए कसियाडीह, पिपराकला, तुंबागडा, दुलसुलमा, जोड़ा गांव के बाद सतबरवा में पदयात्रा की। मेलाटांड काली मंदिर के समीप सभा की गई जिसकी अध्यक्षता प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष प्रमोद यादव ने की, संचालन जिला अध्यक्ष जैश रंजन पाठक उर्फ बिट्टू पाठक ने किया।

पदयात्रा में शामिल लोग। ● फोटोन न्यूज

मौके पर प्रदेश महासचिव सह पलामू जिला प्रभारी विनय सिन्हा उर्फ दीपू ने कहा कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा का मकसद वर्तमान केन्द्र सरकार से न्याय दिलाना है, जिन्होंने यहां के लोगों को महंगाई, बेरोजगारी, महिलाओं के साथ अत्याचार किया है।

पूजित अक्षत सह निमंत्रण पत्र वितरण कार्यक्रम संपन्न

2.18 लाख परिवारों से संपर्क साध कर पहुंचाया गया निमंत्रण पत्र

PHOTON NEWS PALAMU : अयोध्या के श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा को लेकर पूजित अक्षत सह निमंत्रण पत्र वितरण कार्यक्रम पलामू जिले में संपन्न हो गया है। 15 दिनों तक चले इस कार्यक्रम में 218321 परिवारों से संपर्क साध कर उनके तक निमंत्रण पत्र पहुंचाया गया। मंगलवार को विश्व हिंदू परिषद के जिला मंत्री सह पूजित अक्षत सह निमंत्रण पत्र

वितरण अभियान के जिला संयोजक दामोदर मिश्र ने जानकारी दी कि देश का सबसे बड़ा जन संपर्क अभियान पूजित अक्षत सह निमंत्रण पत्र वितरण 01 से 15 जनवरी तक पूरे देश में चलाया गया। पलामू जिले में भी सफलता पूर्वक पूणार्हुति हुआ।

सभी 23 प्रखंडों की 283 पंचायत-नगर पंचायत, नगर के सभी वार्ड्स और 1787 गांव में यह अभियान चलाया गया। जिला में 2 लाख 18 हजार 321 परिवारों के साथ संपर्क साध कर उनके घरों तक पूजित अक्षत सह निमंत्रण पत्र पहुंचाया गया।

झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा ने निकाली रैली, दिया धरना

PHOTON NEWS KHUNTI : झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा जिला समिति की ओर से मंगलवार को अपनी मांगों के समर्थन में रैली निकाली गई और जिला समाहरणालय के समक्ष धरना-ह्यप्रदर्शन किया गया। धरना प्रदर्शन के बाद झारखंड आंदोलनकारियों के संवैधानिक अधिकार सुनिश्चित करने के संबंध में राज्यपाल के नाम 15 सूत्री मांग पत्र उपायुक्त लोकेश मिश्रा को सौंपा गया।

ज्ञापन में झारखंड आंदोलनकारियों के जेल जाने की बाध्यता समाप्त करने, झारखंड आंदोलनकारियों की अलग पहचान करने, उन्हें राजकीय

धरना-प्रदर्शन में शामिल मोर्चा के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

मान सम्मान देने, आंदोलनकारियों को सम्मान राशि के रूप में प्रतिमाह 50-50 हजार रुपये देने, उनके नियोजन और रोजी रोजगार में क्षैतिज आरक्षण उत्तराखंड की तर्ज पर लागू करने, झारखंड आंदोलनकारियों का चिह्नितीकरण कार्य युद्ध स्तर पर करने, चिह्नित आंदोलनकारियों की संपुष्टि का कार्य तेजी से कर जल्द से जल्द जिला मुख्यालय व प्रखंड मुख्यालय में सूची भेजने, उनके नाम गजट में जल्द प्रकाशित करने, बकाये एरियर का भुगतान, आंदोलनकारियों के नाम चौक चौराहों पर शिलालेख के माध्यम से स्थापित करने, तमाड़ मोड़ खूंटी में जयपाल सिंह मुंडा की प्रतिमा स्थापित करने सहित अन्य मांगें शामिल हैं।

ज्ञापन में कहा गया है कि झारखंड अलग राज्य लंबे संघर्ष और शहादतों की बुनियाद पर हुआ है। यह कोई साधारण राज्य नहीं है। इसकी तुलना अन्य राज्यों में दी जानेवाली सुविधाओं और सम्मान से नहीं, बल्कि झारखंड की अपनी बेहतर एवं सम्मानजनक व्यवस्था बने, ताकि खुशहाल झारखंड समृद्धशाली झारखंड का हमारा लक्ष्य पूरा हो सके।

जागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर किया गया रवाना

वाहन चलाते समय सुरक्षा नियमों का रखें ध्यान : डीसी

PHOTON NEWS RAMGARH : संयुक्त परिवहन आयुक्त सड़क सुरक्षा परिवहन विभाग झारखंड की ओर से 15 जनवरी से 14 फरवरी तक सड़क सुरक्षा माह मनाए जाने को लेकर प्राप्त निर्देश के आलोक में मंगलवार को डीसी चंदन कुमार ने जिला समाहरणालय परिसर से सड़क सुरक्षा माह का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने जागरूकता वाहन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। मौके पर डीसी ने जागरूकता वाहन के माध्यम से जिले के भिड़भाड़ वाले स्थलों एवं

जागरुकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते उपायुक्त। ● फोटोन न्यूज

अन्य सार्वजनिक स्थलों पर लोगों को ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूक करने का निर्देश दिया। साथ ही सड़क सुरक्षा माह के तहत तैयार किया किए गए कैलेंडर एवं माह के दौरान मनाए जाने वाले विभिन्न दिवसों एवं आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की भी जानकारी लेते हुए कार्यक्रमों के सफल आयोजन को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। डीसी ने सभी जिले वासियों से वाहन का उपयोग करते वक्त सड़क सुरक्षा नियमों का अनिवार्य रूप से पालन करने एवं सुरक्षित रहने की अपील की।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन, विजेताओं को किया गया पुरस्कृत : सड़क सुरक्षा माह के तहत मंगलवार को जिला परिवहन कार्यालय में सड़क सुरक्षा संबंधित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मौके पर बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने क्विज प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। जिसके उपरांत मांडू प्रखंड अंतर्गत घाटों क्षेत्र की निवासी भूमि कुमारी एवं सारूबेड़ा क्षेत्र के निवासी पिंटू कुमार को प्रतियोगिता जीतने पर पुरस्कृत किया गया।

मौके पर जिला परिवहन पदाधिकारी दिवाकर प्रसाद द्विवेदी, पुलिस उपाधीक्षक मुख्यालय संजीव कुमार मिश्रा, प्रधान सहायक मनीष कुमार सिंह, सड़क सुरक्षा प्रबंधक विक्की आनंद, सड़क अभियंता ऋषिकांत सड़क सुरक्षा की टीम, जिला परिवहन कार्यालय के कर्मियों सहित अन्य उपस्थित थे।

महाराजा मदरा मुंडा फुटबॉल चैंपियन ट्रॉफी 2024 का शुभारंभ छह फरवरी से

PHOTON NEWS RANCHI : महाराजा मदरा मुंडा चैंपियन ट्रॉफी 2024 सीजन 4 का उद्घाटन मैच 6 फरवरी को होगी। तैयारी को ले कर सोमवार को महाराजा मदरा मुंडा स्टेडियम में आयोजन समिति का बैठक कांके प्रमुख सोमनाथ मुंडा की अध्यक्षता में किया गया। प्रखण्ड प्रमुख सोमनाथ मुंडा ने जानकारी देते हुए कहा कि, महाराजा मदरा मुंडा फुटबॉल चैंपियन ट्रॉफी का शुभारंभ 6 फरवरी को उद्घाटन और 14 फरवरी को फाइनल मैच खेला जाना है जिसमे झारखंड सहित दूसरे राज्य से भी टीम इस बार शामिल होंगे। इस वर्ष सीजन 4 में टूर्नामेंट का प्रथम पुरस्कार दो लाख पचास हजार, द्वितीय पुरस्कार दो लाख, तृतीय पारस्कर पचास हजार, चतुर्थ पुरस्कार पचास हजार के साथ प्रत्येक मैच में मैन ऑफ द मैच दिया जाएगा। मैन ऑफ द सीरीज मोटरसाइकिल दिया जाएगा। टूर्नामेंट में भाग लेने के लिए टीम के लिए प्रवेश शुल्क इक्कीस हजार रुपए रखा गया है। प्रवेश की अंतिम तिथि 31 जनवरी तक है।

फुटबॉल स्टेडियम में बैठे खिलाड़ी व आयोजन समिति के सदस्य। ● फोटोन न्यूज

बैठक में मुख्य रूप से कांके पूर्वी जिला परिषद सदस्य संजय महतो, आयोजन समिति के अध्यक्ष संजय मुंडा, सचिव अजय एक्का, कोषाध्यक्ष प्रेमकिशोर महतो, मदन महतो,अरुण मुंडा, ग्राम प्रधान, अजय महतो, भक्तु जी, विजय मुंडा, बबलू मुंडा, संदीप राम, राधा मुंडा, पंकज जी, वीरेंद्र मुंडा, नरेश पाहन, रंजन लकड़ा, श्याम उरांव, लक्ष्मण उराँव, मंगराज मिंज, छोटू मुंडा, शुशील टोप्पो, प्रकाश उराँव, सलाहकार फरीद खान आदि लोग उपस्तिथ थे

BRIEF NEWS

रांची जिला अनुकम्पा समिति की बैठक में दो प्रस्तावों पर सहमति

RANCHI : उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा ने मंगलवार को समाहरणालय में जिला अनुकम्पा समिति की बैठक की, जिसमें सामान्य और चौकीदार के आश्रित से संबंधित मामलों की समीक्षा की गई। इस दौरान दो प्रस्तावों को सहमति दी गई। इनमें ग्रामीण पुलिस चौकीदार के अनुकम्पा में एक की नियुक्ति और जिला अनुकम्पा समिति सामान्य में कुल दो की नियुक्ति की सहमति दी गई। बैठक में जिला स्थापना उप-समाहर्ता स्वेता वेद एवं सभी सम्बंधित अधिकारी उपस्थित थे।

पूर्व विधायक उमराव साधो कुजूर की जयंती 31 को

RANCHI : नामकुम बाजार टांड़ में पूर्व विधायक उमराव साधो कुजूर की जयंती 31 जनवरी को मनाई जाएगी। ट्रस्ट के अध्यक्ष चंदन कुजूर ने मंगलवार को बताया कि खिजरी के पूर्व विधायक स्व. उमरांव साधो कुजूर अपने जीवन काल में हमेशा समाज के सकारात्मक कार्य को दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभाई है। साथ ही बालक-बालिका के लिए फुटबॉल टूनार्मेंट का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया जाएगा।

आज 196 विद्यार्थियों को मिलेगी डिग्री

RANCHI : किसी भी विद्यार्थी के लिए डिग्री मिलना उसके करियर के लिए सबसे अहम दिन होता है। बुधवार को ऐसे 196 विद्यार्थियों को राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन और बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा के हाथों डिग्री प्रदान की जाएगी। राजधानी रांची के मोरहाबादी स्थित आर्यभट्ट सभागार में आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह की जानकारी देते हुए इक्फाई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ रमन कुमार झा ने कहा कि दीक्षांत समारोह में 2023 में विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में पास हुए 196 विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की जाएंगी। जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों में शीर्ष रैंकर्स और दूसरे स्थान पर रहे विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक और रजत पदक से सम्मानित किया जाएगा। 196 विद्यार्थियों में 10 पीएचडी के विद्यार्थी हैं जिन्हें डिग्री प्रदान की जाएगी। वहीं आठ विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल और आठ को सिल्वर मेडल प्रदान किया जाएगा। आर्यभट्ट सभागार में बुधवार को दिन के 11:30 बजे से आयोजित होने वाले दीक्षांत समारोह की तैयारी पूरी कर ली गई है।

नयी तकनीक से बनेगी 300 किमी सड़क

RANCHI : पीएमजीएसवाइ से ग्रामीण क्षेत्रों में नई तकनीक से सड़क बनाने का ट्रांयल सफल रहा। लगभग साढ़े तीन करोड़ की लागत से टेराजाइम केमिकल के प्रयोग से खूंटी पथ प्रमंडल सब डिवीजन क्षेत्र अंतर्गत तुंजू से गुटुहातू रोड का काम अंतिम चरण में है। 3.15 किमी लंबी यह सड़क पांच मीटर चौड़ी भी है। टेराजाइम ऐसा फॉमूर्लेशन है जो मिट्टी की भौतिक और रासायनिक विशेषताओं को बदल देता है। टेराजाइम मिट्टी के कणों के करीब के माध्यम से मिट्टी की स्थिरता में वृद्धि करता है। ऐसे में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से बननेवाली सड़कें अब काफी दिनों तक चलेंगी। केंद्र सरकार ने इसकी पहल खूंटी पथ प्रमंडल के माध्यम से बनाई जा रही पीएमजीएसवाइ सड़क से की है। अभी सड़क किनारे मिट्टी मोरम भराव का कार्य अंतिम चरण में है। झारखंड के खूंटी में ट्रायल की गयी यह सड़क सक्सेस रही और सरकार जल्द ही राज्य में 300 किमी सड़क इसी तकनीक से बनायेगी। विभाग का दावा है कि इस सड़क की मजबूती सालों तक रहेगी। खूंटी डिविजन के ग्रामीण विकास विभाग के कार्यपालक अभियंता और एसडीओ भी पीएमजीएसवाइ की बेहतर गुणवत्ता को लेकर आशान्वित हैं और कहते हैं कि पूर्व में बनी सड़क के मटेरियल को निकाल कर उसमें बेहतर गुणवत्तायुक्त टेराजाइम मिला कर सड़क का निर्माण कराया गया है। कहा जा सकता है कि सड़क के पुराने मटेरियल का न्यू टेक्नोलॉजी के माध्यम से रेनॉवेशन किया गया है।

atom美 ATOMY INDIA

RANCHI TEAM WARRIOR CENTRE

4th Floor, Shop No. 22, 23, 24 Roshpa Roshpa Tower, Main Road, Ranchi - 834001 Mob. 9334495776

ईडी के नाम पर डराया जा रहा हम लड़नेवाले लोग हैं : सुप्रियो

जेएमएम प्रवक्ता का विपक्ष पर निशाना, बोले- डरेंगे नहीं, लडेंगे

PHOTON NEWS RANCHI : जेएमएम के केंद्रीय महासचिव सह प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि वर्ष 2024 चुनाव का साल है। तीन से छह माह तक का समय हर राजनीतिक दल के लिए महत्वपूर्ण है। कहा कि मई के अंत तक नयी लोकसभा का गठन हो जायेगा। मार्च के दूसरे सप्ताह के बाद मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट लागू होगा। उसके बाद तिथियों की घोषणा होगी। इस दौरान सभी दल, अपने द्वारा किये गये कार्यों का प्रचार प्रसार करेंगे। इसे प्रभावित करने और डराने का काम किया जा रहा है। ईडी के नाम पर डराया जा रहा है, मगर हमलोग डरनेवाले नहीं है, लड़ने वाले लोग हैं। सुप्रियो भट्टाचार्य ने यह बातें मंगलवार को संवाददाता सम्मेलन में कहीं।

- 2024 चुनाव का साल, तीन से छह माह तक का समय हर राजनीतिक दल के लिए महत्वपूर्ण
- मार्च के दूसरे सप्ताह के बाद मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट लागू होगा
- मई तक नयी लोकसभा का हो जाएगा गठन

प्रेस कांफ्रेंस कर पत्रकारों से बातचीत करते सुप्रियो भट्टाचार्य।

लोकसभा चुनाव से पहले राजनीतिक दलों को डराने का काम किया जा रहा है : उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव से पहले राजनीतिक दलों को केंद्रीय एजेंसियां के माध्यम से डराने का काम किया जा रहा है। केंद्रीय एजेंसियों की कार्रवाई यह बता रही है कि पहले धर्म के नाम पर, फिर संप्रदाय के नाम पर, उसके बाद ईडी की कार्रवाई के नाम पर डराया जा रहा है। इसका ताजा उदाहरण सभी को देखने को मिल रहा है। आरोप लगाया कि राजस्थान और छत्तीसगढ़ में चुनाव आचार संहिता लागू होने के बाद ईडी की कार्रवाई चलती रही। जिसका फायद बीजेपी को मिला।

ईडी की कार्रवाई राज्य सरकार को परेशान करने के लिए की जा रही है : उन्होंने कहा कि ईडी के माध्यम से झारखंड में भी ऐसा ही करने का प्रयास चल रहा है। मगर यहां यह सब नहीं चलेगा। हम लड़नेवाले लोग हैं। जनता को सब पता है। ईडी के समन और नोटिस की जानकारी कैसे सार्वजनिक हो जाती है। जबकि किसी माध्यम से यह जानकारी पब्लिक डोमेन में नहीं डाली जाती है। इससे तो यही जाहिर होता है कि ईडी की कार्रवाई राज्य सरकार को परेशान करने के लिए की जा रही है। सुप्रियो ने कहा कि ईडी के खिलाफ राजनीतिक लड़ाई लड़ने को विवश किया जा रहा है। चुनाव को लेकर सीएम काफी व्यस्त रहते है। यह जानते हुए भी ईडी ने समन जारी किया। पूछा कि ईडी जानकारी दे कि किसके पास से क्या बरामद हुआ है।

भाजपा को सबक सिखायेगी जनता

उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता भाजपा के समझ गयी है। चुनाव में सबक सिखायेगी। जनता में ईडी की कार्रवाई को लेकर आक्रोश है। ईडी सिर्फ यहां भ्रम की स्थिति पैदा कर, विशेष राजनीतिक दल को फायदा पहुंचाने में लगी हुई है। सुप्रियो ने कहा, 14 जनवरी को ईडी ने समन जारी किया।

पत्नी के हत्या के दोषी पति को अंतिम सांस तक की सजा

CRIME REPORTER RANCHI : अपर न्यायायुक्त प्रकाश झा की अदालत ने मंगलवार को पत्नी की हत्या के दोषी पति पौलुस मुंडा को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। हत्या की यह घटना टाटीसिलवे थाना क्षेत्र में वर्ष 2020 में घटी थी। पीपी सिद्धार्थ सिंह ने बताया कि दोषी पौलुस अक्सर शराब के नशे में पत्नी से झगड़ा करता रहता था। उसने रॉड से मारकर पत्नी की हत्या कर दी थी। पुत्री प्रतिमा मुंडा के बयान पर प्राथमिकी की दर्ज की गई थी। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। तब से वह जेल में बंद है। मामले में अभियोजन पक्ष ने सात गवाहों की गवाही कराई।

प्रेमिका की हत्या मामले में आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा अनमोल वर्मा उर्फ कांटी दोस्त की हत्या मामले में भी दोषी करार : प्रेम प्रसंग में दोस्त की हत्या करने के आरोपी अनमोल वर्मा उर्फ कांटी को अदालत ने दोषी करार दिया है। अपर न्यायायुक्त दिनेश कुमार की अदालत ने दोषी अनमोल वर्मा की सजा के बिंदु पर सुनवाई के लिए 19 जनवरी की तिथि निर्धारित की है। हत्या का यह मामला साल 2019 का है। मामले में सुखदेवनगर थाना में प्राथमिकी दर्ज हुआ था।

अपील दायर करने में क्यों हुई देरी : हाईकोर्ट

RANCHI : जिमखाना क्लब की जमीन पर बन रहे न्यूक्लियस मॉल को लेकर एकल पीठ के आदेश के खिलाफ यूनियन ऑफ इंडिया की ओर से कैप्टन सुष्मिता बनर्जी की अपील /(एलपीए) की सुनवाई झारखंड हाई कोर्ट में सोमवार को हुई। मामले में हाई कोर्ट के न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद की अध्यक्षता वाली खंडपीठ ने केंद्र सरकार से स्पष्टीकरण मांगा है। कोर्ट ने शपथ दायर कर पूछा है कि अपील दायर करने में क्यों देरी हुई। प्रतिवादी चैलिश रियल स्टेट की ओर से अधिवक्ता सुमित गड़ोदिया,अर्पण मिश्रा ने पक्ष रखा। मामले की अगली सुनवाई फरवरी माह के तीसरे सप्ताह में होगी। दरअसल, मामले में हाइकोर्ट के न्यायमूर्ति रंगन मुखोपाध्याय की एकल पीठ ने प्रार्थी सेना के अधिकारियों की याचिका को 5 अप्रैल 2023 को खारिज कर दिया था।

दिनेश के सहयोगी से अभी और राज उगलवाएगी ईडी

निवेश कुमार की फिर मिली तीन दिनों की रिमांड

CRIME REPORTER RANCHI : पीएलएफआई सुप्रीमो दिनेश गोप के सहयोगी निवेश कुमार की पांच दिनों की रिमांड अवधि पूरी होने के बाद मंगलवार को ईडी कोर्ट में पेश किया गया। ईडी ने फिर से पूछताछ की आवश्यकता बताते हुए तीन दिनों की रिमांड अवधि बढ़ने का आग्रह किया। इस पर ईडी के विशेष जज दिनेश राय की कोर्ट ने निवेश से पूछताछ के लिए तीन दिनों की रिमांड ईडी को प्रदान की। इससे पूर्व गत आठ जनवरी को ईडी ने कोर्ट के माध्यम से ईडी ने निवेश को मेमो ऑफ अरेस्टिंग दिया था। इसके बाद बिरसा मुंडा जेल भेज दिया था। एनआईए ने पीएलएफआई उग्रवादी संगठन के खिलाफ झारखंड सहित चार राज्यों में 15 दिसंबर को छापेमारी की थी। इस दौरान एनआईए ने दो आरोपितों निवेश कुमार और सोनू पंडित उर्फ रमण को गिरफ्तार किया था। एनआईए ने पीएलएफआई उग्रवादी संगठन से जुड़े झारखंड, बिहार, मध्य प्रदेश और नई दिल्ली में कुल 23 स्थानों की तलाशी ली थी। इनमें झारखंड में 19 स्थान बिहार और मध्य प्रदेश में एक-एक स्थान और नई दिल्ली में दो स्थान शामिल हैं।

झारखंड में आज से हो सकती बारिश, अलर्ट

RANCHI : कड़ाके की ठंड व शीतलहरी के बीच झारखंड में मौसम का मिजाज बदलेगा। कोहरे से भी अभी राहत नहीं मिलने वाली है। 17 व 18 जनवरी को राज्य में बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग की मानें, तो पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला, सिमडेगा, रांची, बोकोरो, गुमला, हजारीबाग, खूंटी, रामगढ़, देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़, साहिबगंज जिले में कहीं-कहीं हल्के दर्जे की बारिश हो सकती है। 19 जनवरी तक घने कोहरे को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। हालांकि 22 जनवरी तक कोहरे से राहत नहीं मिलने वाली है। झारखंड में 17 व 18 जनवरी को दक्षिणी(पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला, सिमडेगा), मध्य (रांची, बोकोरो, गुमला, हजारीबाग, खूंटी, रामगढ़) एवं उत्तर पूर्वी (देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़, साहिबगंज) भागों में कहीं-कहीं हल्के दर्जे की बारिश हो सकती है। झारखंड में 17 से 19 जनवरी तक मध्यम से घने कोहरे की संभावना है। इसे लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है।

हेमंत सरकार ने ट्रांसजेंडरों की ली सुध, बेहतरी के लिए बनेगा बोर्ड, जिलास्तर पर गठित होगी कमेटी

सर्वजन पेंशन योजना के तहत राज्य में चलाई जा रही नौ योजनाएं : कृपानंद झा

PHOTON NEWS RANCHI : राज्य की हेमंत सोरेन सरकार ने ट्रांसजेंडरों की सुध ली है। झारखंड में ट्रांसजेंडरों के उत्थान के लिए बोर्ड का गठन किया जाएगा। इसके साथ ही हर जिले में उपायुक्त की अध्यक्षता में कमेटी का गठन किया जाएगा। वर्तमान में ट्रांसजेंडरों को ओबीसी-टू का दर्जा दिया गया है और विभाग उनके उत्थान के लिए एक समेकित योजना तैयार कर रहा है। मंगलवार को ये जानकारी महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग के सचिव कृपानंद झा ने सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय के कांफ्रेंस हॉल में पत्रकारों को दी। उन्होंने कहा कि विभागीय स्तर पर सामाजिक उत्थान की दिशा में मुख्यमंत्री के दिशा-निर्देश पर विभिन्न स्तर पर सामाजिक सुरक्षा के तहत कार्य किये जा रहे हैं। उन्होंने विभाग की योजनाओं की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि सर्वजन पेंशन योजना के तहत राज्य में कुल नौ योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनमें तीन योजनाएं केन्द्र संपोषित हैं एवं 6 योजनाएं राज्य सरकार द्वारा संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि पेंशनधारियों को ससमय लाभान्वित किया जा सके, इसके लिए सरकार ने अलग से 100 करोड़ का रिवॉल्विंग फंड का इंतजाम किया है।

- आंगनबाड़ी केन्द्र सक्षम आंगनबाड़ी केन्द्र के रूप में होंगे विकसित
- 29 हजार से ज्यादा सेविकाओं को स्मार्ट मोबाइल उपलब्ध कराया जाएगा
- विधवा पुनर्विवाह पर आर्थिक मदद मिलेगी

प्रेस कांफ्रेंस कर पत्रकारों को जानकारी देते कृपानंद झा व अन्य।

चार साल में पेंशनधारियों में 82% की वृद्धि

महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग के सचिव कृपानंद झा ने कहा कि झारखंड में चार वर्षों में राज्य के पेंशनधारियों में 82 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। 2023 में आपके अधिकार, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम के तहत कुल 6 लाख 56 हजार से ज्यादा पेंशन के आवेदन प्राप्त हुए हैं। राज्य में सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना के तहत किसी कारणवश ड्रॉप आउट हो रही बच्चियों को प्रोत्साहित करने के लिए और उन्हें शिक्षित बनाने के लिये 2023-24 में अब तक 6 लाख 21 हजार लाभार्थियों को योजना से आच्छादित किया गया है।

पतरातू थर्मल से बिजली उत्पादन जुलाई तक हो सकता है शुरू , एक यूनिट का काम पूरा

PHOTON NEWS RANCHI : पतरातू विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड में बन रहे सुपर थर्मल पावर प्लांट से जुलाई तक बिजली उत्पादन करने की संभावना है। इस दिशा में पीवीयूएनएल की ओर से काम तेजी से किया जा रहा है। जुलाई के अंत तक यहां एक यूनिट से बिजली उत्पादन शुरू करने की तैयारी है। यूनिट एक में लगभग काम पूरा हो चुका है। प्रबंधन की ओर से प्लांट को सिर्फ अंतिम रूप दिया जा रहा है। जिसके बाद जल्द ही पावर प्लांट का ट्रायल किया जायेगा।

बता दें एनटीपीसी और पीवीयूएनएल साथ मिल कर योजना पर काम कर रही है। जहां पांच पावर प्लांट का निर्माण किया जा रहा है। प्रत्येक यूनिट से 800 मेगावाट बिजली उत्पादन का लक्ष्य है। पांच यूनिट बन जाने से पतरातू से कुल चार हजार मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा। फिलहाल पहले चरण के तहत तीन यूनिट शुरू करने की योजना है। इसमें से भी जुलाइ में एक यूनिट शुरू करने पर जोर दिया जा रहा है। जिससे राज्य में बिजली की कमी को पूरा किया जा सके। पावर प्लांट निमार्ण में आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल में किया जा रहा है। जिसमें पर्यावरणीय नुकसान को ध्यान में रखते हुए बिजली उत्पादन किया जाना चाहिये।

85 फीसदी बिजली झारखंड को : एनटीपीसी और पीवीयूएनएल के एमओयू शर्तो के अनुसार पावर प्लांट से उत्पादित कुल बिजली का 85 फीसदी बिजली झारखंड को दी जायेगी। ऐसे में अगर एक यूनिट से औसतन 750 मेगावाट बिजली उत्पादन किया जाता है तो इससे लगभग 670 मेगावाट बिजली राज्य को मिलेगी। जिससे राज्य को गर्मी या त्यौहार के समय होने वाले बिजली कटौती का सामना नहीं करना पड़ेगा।

झामुमो के नेता ईडी को दे रहे धमकी : भाजपा

RANCHI : झामुमो महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य के बयान पर भाजपा ने पलटवार किया है। बीजेपी के प्रदेश महामंत्री प्रदीप वर्मा ने कहा कि एक तरफ सीएम 8 नोटिस के बाद ईडी को पूछताछ के लिए अपने पास बुलाते हैं। वहीं दूसरी ओर उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेता महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ईडी को धमकी दे रहे हैं। ऐसे में तो मुख्यमंत्री को कैबिनेट से यह भी निर्णय कर लेना चाहिए कि राज्य के किसी व्यक्ति को पूछताछ के लिए अधिकारी अपने ऑफिस में नहीं बुलाएं। अधिकारी पूछताछ के लिए घर जाएं। झामुमो के बयान से साफ झलक रहा है कि मुख्यमंत्री के पास ईडी के सवालों का जवाब नहीं है। प्रदीप वर्मा ने कहा कि ईडी ने बार-बार बताया है कि आखिर मुख्यमंत्री को वह क्यों बुला रही है, बावजूद इसके झामुमो जनता को दिग्भ्रमित करने में जुटा है।

फरार चल रहे अवर सचिव अनिल कुमार के घर पर पुलिस ने चिपकाया इश्तेहार

सरेंडर नहीं करने पर कुर्की जब्ती की भी दी चेतावनी

CRIME REPORTER RANCHI : फरार चल रहे अवर सचिव अनिल कुमार सिंह के घर पर पुलिस ने मंगलवार को इश्तेहार चिपकाया। पुलिस ने सरेंडर नहीं करने पर कुर्की जब्ती की भी चेतावनी दी है। कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोय के नेतृत्व में पंडरा ओपी की पुलिस ने बिहार के छपरा जिला स्थित अनिल सिंह के आवास पर इश्तेहार चिपकाया है। गौरतलब है कि बीते 12 दिसंबर 2023 को कृषि विभाग के अवर सचिव सह तत्कालीन हेहल सीओ अनिल कुमार सिंह के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी हुआ था। पंडरा में आदिवासी जमीन को फर्जी तरीके से रजिस्ट्री कराने के मामले में पूर्व सीओ अनिल कुमार सिंह के खिलाफ वारंट जारी हुआ है। इस मामले में कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए के नेतृत्व में पुलिस की टीम ने डोरंडा थाना क्षेत्र के रहने वाले चंद्र भूषण सिंह समेत कई अन्य लोगों को गिरफ्तार किया था। इन सभी पर आरोप है कि हेहल सीओ अनिल कुमार के सहयोग से करीब साढ़े चार एकड़ आदिवासी जमीन को संजय साहू नाम के व्यक्ति से रजिस्ट्री करा लिया था। इस मामले में भूषण प्रसाद सिंह समेत अन्य के खिलाफ पंडरा ओपी में बीते 24 मई 2017 को कांड संख्या 260/17 दर्ज किया गया था। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने हेहल सीओ अनिल कुमार सिंह के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की अनुमति दे दी थी। सीओ अनिल कुमार सिंह पर आय से अधिक संपत्ति मामले में सीएम ने प्राथमिकी दर्ज करने की अनुमति दी थी।

इश्तेहार चिपकाती पुलिस।

एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर : 17 वें मिनट पर एलिजाबेथ यीगर ने पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में किया तब्दील

रोमांचक मुकाबले में न्यूजीलैंड को 1- 0 से हराकर यूएसए सेमीफाइनल में

PHOTON NEWS RANCHI : एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर में यूएसए ने न्यूजीलैंड को 1-0 से हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया। पूल बी में सभी मैच जीतकर यूएसए सेमीफाइनल में पहुंची। मुकाबले का एकमात्र गोल यूएसए ने मुकाबले के 17 वें मिनट में किया। 17 वें मिनट पर एलिजाबेथ यीगर ने पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील किया। न्यूजीलैंड ने आखिरी मिनट तक वापसी की कोशिश की, लेकिन वो नाकाम रहे। मैच में 3 पेनाल्टी कॉर्नर यूएसए, जबकि 4 पेनाल्टी कॉर्नर न्यूजीलैंड ने हासिल किया थे। लगातार दूसरी हार के बाद न्यूजीलैंड की खिलाड़ियों की आंखों में आंसू थे। मीडिया से बात करते समय भी न्यूजीलैंड की कप्तान रो रही थी। उन्होंने कहा कि उन्हें इस प्रकार के रिजल्ट की उम्मीद नहीं थी। कहीं न कहीं कमी रह गई, इसका खामियाजा टीम को भुगतना पड़ा। पूल ए से सेमीफाइनल में जगह बनाने वाली दो टीमें जर्मनी और

जर्मनी का शानदार प्रदर्शन, चेक गणराज्य को दी करारी शिकस्त, 10-0 से जीता मैच

RANCHI : रांची के मारंग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रोटर्फ हॉकी स्टेडियम में हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर मैच में मंगलवार का दिन काफी अहम रहा है। पहला मैच जर्मनी और चेक गणराज्य के बीच खेला गया। मैच में जर्मनी के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। जर्मनी ने एकतरफा मुकाबले में चेक रिपब्लिक को हरा दिया। जर्मनी के तरफ से 10 गोल दागे गए जबकि चेक गणराज्य की टीम एक गोल भी नहीं कर सकी। जर्मनी और चेक पब्लिक के बीच खेले गए मैच में जर्मनी लगातार चेक रिपब्लिक पर भारी रहा। जर्मनी ने पहला गोल मैच शुरू होते ही दाग दिया। पूरे मैच में जर्मनी चेक रिपब्लिक पर भारी रहा। पहले गोल के तुरंत बाद तुरंत दूसरा गोल भी जर्मनी ने दाग दिया।

जापान ने चिली को रौंदा, 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में किया प्रवेश

RANCHI : एफआईएच हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर में जापान ने चिली को 2-0 से हराकर सेमीफाइनल में जगह बना लिया। पूल ए में जर्मनी के बाद जापान सेमीफाइनल में प्रवेश करने वाली दूसरी टीम बनी। मंगलवार को जापान और चिली के खिलाफ मुकाबला खेला गया। जापान ने आक्रामक खेल दिखाते हुए मुकाबले के एक मिनट में पेनाल्टी कॉर्नर जीतकर चिली पर दबाव बना दिया। जापान की काना उराता ने पेनाल्टी को गोल में बदलकर जापान 1-0 से लीड दिला दी। जापान के लिए दूसरा गोल मियु हसेगवा ने किया। चिली के डिफेंस को भेदकर मुकाबले के 23 वें मिनट में फाइल गोल दागकर स्कोर 2-0 कर दिया। मुकाबले के बाकी समय में जापान हावी रहा, लेकिन मुकाबले के अंत तक स्कोर 2-0 ही रहा।

BRIEF NEWS

पश्चिम सिंहभूम में पांच किलो का आईईडी बरामद

CHAIBASA : जिले में चल रहे नक्सल विरोधी अभियान में मंगलवार को गोइलकेरा थाना क्षेत्र के वनग्राम लेमसाडीह और बामियाबुरु जंगली इलाकों में सुरक्षाबलों ने एक पांच किलो का आईईडी बरामद किया। बाद में बम को उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता की मदद से नष्ट कर दिया गया। कोल्हान जंगल में बड़े माओवादी नेता सक्रिय हैं, जिनकी तलाश में सुरक्षाबल के जवान लगातार अभियान चला रहे हैं। माओवादी पुलिस पार्टी को नुकसान पहुंचाने के लिए आईईडी प्लांट कर रहे हैं लेकिन सुरक्षाबल के जवान हर बार नक्सलियों को मात दे रहे हैं।

श्रीमंदिर परिक्रमा परियोजना का उद्घाटन कल, तीन दिवसीय महायज्ञ शुरू

PURI : बहुप्रतीक्षित श्रीमंदिर परिक्रमा परियोजना का उद्घाटन 17 जनवरी को किया जाएगा। इसके लिए महायज्ञ शुरू हो गया है। यह मंदिर 108 ब्राह्मणों के मंत्रोच्चार से गूंज रहा है। चारों ओर जय जगन्नाथ की ध्वनि गूंज रही है। कल से तीन दिवसीय महायज्ञ शुरू हो गया है। मुख्य यज्ञकुंड वेदी पर अभिषेक के बाद घृत आहुति दीया जा रहा है। श्री परिक्रमा परियोजना की इस भव्य आयोजन को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी है। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए व्यापक सुरक्षा इंतजाम किए गए हैं।

अज्ञात युवती का शव बरामद हत्या की आशंका

ROURKELA : राउरकेला में मंगलवार को ब्राह्मणी तरंग पुलिस सीमा के तहत एक पुल के किनारे तुमरान नर्सरी के पास एक युवती का शव पुलिस द्वारा बरामद किया गया। पुलिस हत्या का मामला की आसंका कर रही है। महिला की पहचान अभी तक नहीं हो पाई है। महिला ने ट्रैकसूट और टी शर्ट पहनी हुई थी। पुलिस और वैज्ञानिक टीम मामले की जांच कर रही है।

मोतीलाल नेहरू पब्लिक स्कूल में मातृ-पितृ पूजन का आयोजन

JAMSHEDJPUR : मोतीलाल नेहरू पब्लिक स्कूल (एमएनपीएस) में योग वेदांत सेवा समिति एवं महिला उत्थान मंडल के संयुक्त तत्वावधान में अध्यक्ष पीएल गौतम द्वारा मातृ-पितृ पूजन दिवस का आयोजन किया गया। विद्यालय सभाकक्ष में मुख्य वक्ता द्वारा बच्चों के अभिभावकों की उपस्थिति में बच्चों को भारतीय संस्कृति के आलोक में अपने पूज्य गुरुजनों के प्रति आदर भाव की अनिवार्यता बताई गयी। कार्यक्रम में शामिल बालक-बालिकाओं ने अपने माता-पिता का श्रद्धा पूर्वक पूजन किया। उनकी आरती उतारी एवं अपनी सहज भावनाओं को अभिव्यक्त किया।

पुलिस ने चेन छिनतई गिरोह के चार सदस्यों को दबोचा

20 मोबाइल फोन, दो बाइक व 43 हजार नकदी जब्त

PHOTON NEWS SUNDARGARH : सुंदरगढ़ पुलिस ने 15 महिलाओं के गले से सोने की चेन, वैनिटी बैग और मोबाइल फोन लूटने वाले गिरोह के 4 सदस्यों को गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है। उनके पास से विभिन्न ब्रांड के मोबाइल फोन, 43 हजार रुपये नकद, लूटपाट में प्रयुक्त दो बाइक बरामद की गयीं। ये लुटेरे सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं को निशाना बनाते थे। जब कोई सड़क पर बात कर रहा होता तभी गिरोह के सदस्य बाइक पर आते थे और मोबाइल फोन लूट लेते थे। इसी तरह महिलाओं के गले से सोने की चेन और हाथों से वैनिटी बैग छीन कर भाग जाते । पुलिस ने घटना की जांच की और 4 अंतराजिया लुटेरों को गिरफ्तार

गिरफ्तार आरोपी को ले जाती पुलिस। ● फोटोन न्यूज

किया। इस संबंध में आगे की जांच जारी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, सुंदरगढ़ टाउन थाना पुलिस ने गले से सोने की चेन चुराने और बाजार या भीड़-भाड़ वाली जगहों से मोबाइल चोरी करने वाले चार अपराधियों को पकड़ने में कामयाबी हासिल की है। पुलिस ने उसके पास से दो मोटरसाइकिल, विभिन्न ब्रांडों के 20 स्मार्ट फोन और 43,500 रुपये नकद जब्त किये। गत 11 तारीख को एडीबी कॉलोनी की तनुजा कालो अपने बेटे के साथ स्कूटर से घर लौट रही थी, तभी डीआरडीए चौक के पास बदमासो ने बाइक पर आई और पीछे से उसके गले से सोने की चेन तोड़ ले उड़े । वहीं, एक अन्य मामले में कल केंदुपाड़ा इलाके की लिपिका महानंदिया बाजार से लौट रही थीं, तभी बाइक पर तीन बदमाश आए और उनका मोबाइल फोन और वैनिटी बैग लूट लिया। मामले की जांच के बाद टाउन थाना पुलिस ने चेन छिनतई के मामले में बिहार के दानापुर थाना क्षेत्र के मायेनपुरा के पिंटू कुमार और बिहार के मांझी थाना क्षेत्र के छपड़ा के राजीव कुमार सिंह को गिरफ्तार कर लिया, जबकि झारखंड के तालझारी थाना नयाटोली के संजू कुमार को एवं हरियाणा के फरीदाबाद क्षेत्र से मोबाइल लूट के मामले में टाउन थाना पुलिस ने संजय पाल को गिरफ्तार कर कोर्ट चलान किया। इन दोनों गिरोहों ने लंबे समय से सुंदरगढ़ में आतंक मचा रखा था।

राहुल गांधी की न्याय यात्रा से मिलेगी आर्थिक सामाजिक व राजनीतिक न्याय : गीता कोड़ा

PHOTON NEWS CHAIBASA : भारत जोड़ो न्याय यात्रा को लेकर जिला कांग्रेस कमिटी की बैठक मंगलवार को हुई। कांग्रेस भवन में आयोजित जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष चंद्रशेखर दास की अध्यक्षता में हुई। बैठक में भारत जोड़ो न्याय यात्रा को कैसे सफल बनाया जाय, इस पर चर्चा हुई है। भारत जोड़ो न्याय यात्रा झारखंड के तेरह जिलों में पहुँचेगी।

बैठक में उपस्थित गीता कोड़ा व अन्य। ● फोटोन न्यूज

बैठक में मुख्य रुप से उपस्थित सिंहभूम की सांसद सह झारखंड प्रदेश कांग्रेस कार्यकारी अध्यक्ष गीता कोड़ा ने कहा कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा में उन गरीब, गांव के नौजवानों, किसानों, दबे-कुचले लोगों, व्यापारियों, जिनके साथ केंद्र सरकार के द्वारा कहीं न कहीं अन्याय हुआ हो, उन्हें यात्रा में शामिल करवाने का लक्ष्य है। उनकी आवाज को सड़क से सदन तक पहुंचाने के लिए उनसे संपर्क स्थापित कर समन्वय करने के लिए कार्य करना है। यह यात्रा न सिर्फ कांग्रेसजनों की यात्रा है, बल्कि यह यात्रा उन जवानों के लिए है, जो भयंकर बेरोजगारी का दंश झेल रहे ह और सड़कों पर ठोकरे खा रहे है। यह यात्रा उन महिलाओं के लिए है, जो कहीं ना कहीं से अत्याचार की शिकार हुई है। झारखंड राज्य से पलायन कर अन्य राज्यों में खास कर भाजपा शासित राज्यों में शोषित हुई है, उनकी आवाज भी इस यात्रा तक पहुँचानी है। महंगाई की वजह से बुझते हुए चूल्हे, यहां तक की रोजमर्रा की जिंदगी चलाना भी जिनके लिए मुश्किल हुआ है, ऐसे लोगों की आवाज इस यात्रा तक पहुंचाना अनिवार्य है।

राहुल गांधी की यह यात्रा से आर्थिक न्याय , सामाजिक न्याय, राजनीतिक न्याय मिलेगी। बैठक में जगन्नाथपुर के विधायक सोनाराम सिंकु, झारखंड प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष देवेन्द्र नाथ चंपिया, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष अम्बर राय चौधरी, अनिता सुम्बरुई, निसार अहमद, नीतिमा बारी समेत अन्य उपस्थित थे।

विधायक ने जरूरतमंद बुजुर्गों के बीच बांटे कंबल, बोले-

जरूरतमंदों की सेवा ही मानवता की सेवा

PHOTON NEWS CHAIBASA : बढ़ते ठंड को देखते हुए विधायक दीपक बिरुवा ने अपने स्तर से मंगलवार को सदर प्रखंड अंतर्गत नरसंडा पंचायत के जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किया। कड़ाके की ठंड में कंबल लेने के लिए नरसंडा पंचायत के तोडांगबासा, बुंडू साई, सांगेसाई, जतरा गुटु, बारूगुटु, दियुरी साई, लतारसाई, ताला साई, मुंडासाई, गुटुसाई, बुरुसाई टोला के लोग पहुंचे हुए थे। जिन्हें विधायक के हाथों कंबल वितरण किया गया। ठंड में कंबल मिलते ही लोगों के चेहरे खिल गए। बढ़ रही कड़ाके की ठंड एवं सर्दी के मौसम को देखते हुए जरूरतमंद व्यक्तियों

बुजुर्ग महिला को कंबल देते विधायक दीपक बिरुवा। ● फोटोन न्यूज

को ठंड से बचाव के लिए लोगों के बीच 130 कंबलों का वितरण किया।

विधायक ने कहा कि अत्याधिक ठंड व शीतलहर से उत्पन्न होने वाली समस्याओं को देखते हुए असुरक्षित व्यक्तियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से कंबलों का वितरण किया जा रहा है। ताकि उन लोगों को ठंड से राहत मिले। ठंड के बढ़ते मौसम में लोगों की परेशानी को देखते हुए समय पर मदद पहुंचाई जा रही है। कड़ाके की ठंड में जरूरतमंदों की सेवा ही मानवता की सेवा है। ठंड के बीच कंबल पाकर लोगों के चेहरे में खुशी झलक आई। वही कंबल मिलने के बाद लोगों ने विधायक के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस दौरान विधायक ने लोगों की समस्याएं सुनी और समस्याओं के समाधान का भरोसा दिया। मौके पर झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह प्रखंड 20 सूत्री क्रियान्वयन समिति अध्यक्ष सतीश सुंडी, शिशिर सुंडी, तुराम सुंडी, लक्ष्मी सुंडी, सरिता सुंडी, नंदी सुंडी, मनोज सुंडी, संजय सुंडी समेत अन्य उपस्थित थे।

डीडीसी ने रास्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह का किया शुभारंभ, बोले-

जागरूकता रथ के माध्यम से गांव-गांव तक पहुंचाया जायेगा सड़क सुरक्षा का संदेश

PHOTON NEWS CHAIBASA : यातायात के नियमों के प्रति जागरूकता लाने के लिए 15 जनवरी से 14 फरवरी तक सड़क सुरक्षा माह मनाया जाएगा। इसके तहत मंगलवार को उप विकास आयुक्त संदीप मीणा ने आमजनों में यातायात के नियमों के प्रति जागरूकता लाने के लिए उपायुक्त कार्यालय परिसर से जागरूकता रथ रवाना किया। मौके पर डीटीओ केके राजहंस भी उपस्थित रहे।

मौके पर उप विकास आयुक्त संदीप मीणा ने बताया कि सड़क सुरक्षा का संदेश गांव-गांव तक जागरूकता रथ के माध्यम से पहुंचाया जायेगा। जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रो में सड़क सुरक्षा

जागरुकता रथ को रवाना करते डीडीसी व अन्य। ● फोटोन न्यूज

माह के समय विभिन्न कार्यक्रम के माध्यम लोगो को जागरूक किया जायेगा। साथ ही स्कूल कॉलेज में भी विभिन्न कार्यक्रम तथा प्रतियोगिता के माध्यम से सड़क सुरक्षा के प्रति विद्यार्थियों को किया जायेगा। जागरूक, नुकड़ नाटक , रन फॉर सेफ्टी, स्कूल अवेयरनेस प्रोग्राम, पोस्टर , बैनर , पम्फलाते इत्यादि के माध्यम से आम जनो को जागरूक किया जायेगा। हिट एंड रन के मामले में मुआवजा राशि प्रदान करने एवं गुड समारिटन योजना के तहत नेक नागरिक को प्रोत्साहित करने हेतु संबंधित योजना का व्यापक प्रचार प्रसार किया जायेगा। जिससे अधिक से अधिक लोग सरकार के इस महत्वकांक्षी योजना से लाभान्वित हो सके।

रामभक्तों के लिए टाटा से 29 जनवरी व 19 फरवरी को चलेगी स्पेशल ट्रेन

PHOTON NEWS JAMSHEDPUR : राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा की तैयारियां अपने आखिरी चरण में पहुंच चुकी हैं। 22 जनवरी को होने वाली भव्य प्राण प्रतिष्ठा के लिए सम्पूर्ण विश्व व्याकुल है। इसी क्रम में अयोध्या के लिए रेलवे की ओर से 29 जनवरी एवं 19 फरवरी को टाटानगर स्टेशन से दर्शन नगर आस्था स्पेशल ट्रेन चलायी जाएगी। इस यात्रा के तहत हजारों श्रद्धालुओं को राम मंदिर के विधिवत दर्शन करवाने की तैयारी की जा रही है। इसी क्रम में, मंगलवार को भाजपा जमशेदपुर महानगर एवं जमशेदपुर ग्रामीण की लोकसभा स्तरीय संयुक्त बैठक बिस्टुपुर स्थित तुलसी भवन के मानस सभागार में संपन्न हुई। इस दौरान सांसद विद्युत वरण महतो, पूर्व सांसद आभा महतो, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिनेशानंद गोस्वामी, प्रदेश मंत्री रीता मिश्रा, भाजपा जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष गुंजन यादव, ग्रामीण जिलाध्यक्ष सौरव चक्रवर्ती, जिला परिषद अध्यक्ष बारी मुर्मू, जिप उपाध्यक्ष पंकज सिन्हा, विनय लाल, बब्बन गुप्ता,

बैठक कर तैयारियों पर चर्चा करते भाजपाई। ● फोटोन न्यूज

अयोध्या दर्शन के लिए लगेगा 1300 रुपया किराया

बैठक में जमशेदपुर लोकसभा अंतर्गत विभिन्न मंडलों के बूथों से हजारों कार्यकताओं को आस्था स्पेशल ट्रेन के माध्यम से टाटानगर स्टेशन से दर्शन नगर के लिए 29 जनवरी एवं 19 फरवरी को एकसाथ ले जाया जाएगा। टाटानगर स्टेशन पर ट्रेन का समय सुबह 11:50 बजे है। जो अगले दिन सुबह 3:20 में दर्शन नगर पहुंचेगी। 20 बोगियों वाली इस आस्था स्पेशल ट्रेन के माध्यम से अयोध्याधाम में प्रभु श्रीराम के दर्शन के लिए भाजपा कार्यकताओं को इसकी जिम्मेदारी दी गई है। जिसमें जाने के लिए पहले श्रद्धालुओं का आधार कार्ड एवं अन्य जरूरी कागजात के साथ पंजीयन होगा। इसके बाद चयनित यात्रियों को परिचय पत्र दिया जाएगा। यात्रियों को ट्रेन खुलने से दो घंटे पहले स्टेशन आने एवं अपने साथ गर्म कपड़े एवं बिछावन साथ लाने का आह्वान किया गया है। श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या दर्शन के लिए आने-जाने का किराया 1300 रुपया रखा गया है। इस किराया शुल्क में राम भक्तों के लिए ट्रेन पर चढ़ने से लेकर अयोध्या दर्शन कराकर वापसी तक भोजन-पानी, ठहरने का प्रबंध किया गया है।

शशि भूषण भगत समेत पार्टी के तमाम वरीय नेताओं के संग विभिन्न मंडलों के अध्यक्ष शामिल थे।

बैठक में जानकारी देते हुए सांसद विद्युत वरण महतो ने बताया कि यह हर्ष की बात है कि अयोध्याधाम में प्रभु श्रीराम के दर्शन के लिए रेलवे की ओर से संचालित होने वाली स्पेशल ट्रेन में पहली ट्रेन जमशेदपुर लोकसभा को दी गई है।

सेक्टर-3 थाने में आमो पुलिस की बैठक, विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक कार्यकर्ता व नेता हुए उपस्थित

PHOTON NEWS ROURKELA : शहर के सेक्टर-3 थाना में आमो पुलिस की बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता सेक्टर-3 थाना प्रभारी प्रतिभा मंजरी साहू ने की और थाना क्षेत्र के विभिन्न क्षेत्रों के सामाजिक कार्यकर्ता और नेता उपस्थित थे। पुलिस अधिकारी ने सभी का स्वागत किया और उन्हें आमो पुलिस की मंशा से अवगत कराया और कहा कि पुलिस और आम जनता के सहयोग से अपराध को रोका जा सकता है। सबसे पहले हम सभी जागरूक होना चाहिए

और फिर दूसरों को जागरूक होने के लिए प्रेरित करने का अनुरोध किया। उपस्थित सभी लोगों से अपने-अपने क्षेत्र की समस्याओं के बारे में जानकारी दिया।

इस दौरान मार्केट कमेटी के कर्मियों ने बताया कि मार्केट क्षेत्र में कुछ चोरियां हुई हैं, जबकि थाना क्षेत्र मे कुछ मात्रा में चोरी हो रही है, इसके जवाब में पुलिस की ओर से बताया गया कि पेट्रोलिंग की जा रही है। कुछ प्वाइंट पर होम गार्ड की तैनाती की जा रही है। समिति को बाजार में सीसीटीवी लगाने और रात में निगरानी करने का प्रस्ताव दिया गया। इसमें बाजार समिति ने सभी से चर्चा के बाद सिकुर्त करने की जानकारी दी। सेक्टर 2 लाल बिल्डिंग मार्केट एरिया में शराबी खुले में बैठकर शराब पीते हैं और अपने वाहन सड़क पर पार्क कर ट्रैफिक की समस्या पैदा करते हैं।

अयोध्या राम जन्म भूमि व जगन्नाथ परिक्रमा का लोकार्पण

PHOTON NEWS ROURKELA : अयोध्या में 22 जनवरी को अयोध्या में राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा होने जा रही है। 17 तारीख को ओडिशा में आराध्य देव जगन्नाथ परिक्रमा परियोजना का शुभारंभ होने जा रहा है। इसके लिए सुंदरगढ़ जिला बीरमित्रपुर पुलिस की ओर से शांति समिति की बैठक की गयी

है। बीरमित्रपुर एसडीपी और सुशांत कुमार दास की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में थाना प्रभारी आशीष कुमार जेना भी मौजूद थे। इस बात पर चर्चा हुई कि शहर में शांति व्यवस्था के साथ यह कार्यक्रम कैसे किया जा सकता है। बीरमित्रपुर में शांति व्यवस्था कार्यक्रम कैसे संचालित होगा। इस पर उपस्थित शांति समिति के सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए।

बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम में मीडिया कप क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित

मीडिया ब्लू ने मीडिया रेड को 15 रनों से दी मात

PHOTON NEWS CHAIBASA : सिंहभूम जर्नलिस्ट एसोसिएशन की ओर से बिरसा मुंडा क्रिकेट स्टेडियम में आयोजित मीडिया कप क्रिकेट प्रतियोगिता में मीडिया ब्लू की टीम ने मीडिया रेड को 15 रनों से पराजित कर किताब पर कब्जा जमा लिया। एसआर ग्रुप के सौजन्य से आयोजित इस प्रतियोगिता में पहले बल्लेबाजी करते हुए मीडिया ब्लू की टीम ने निर्धारित 12 ओवर में 6 विकेट गंवाकर 103 रन बनाया। इस टीम की ओर से रमेश दास ने पांच चौकों की मदद से सर्वाधिक 38 रन बनाए। टीम के कप्तान राजीव नयनम ने दो चौके की मदद से 15 रन और मानस घोष ने एक चौका की मदद से 15 रन

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त करते विधायक। ● फोटोन न्यूज

बनाया। मीडिया रेड की ओर से गेंदबाजी करते हुए सुजीत कुमार ने तीन ओवर में 9 रन देकर तीन विकेट लिए, जबकि राजीव सिंह ने दो ओवर में 16 रन देकर एक विकेट लिए। जीत के लिए 103 रनों का पीछा करने उतरी मीडिया रेड की टीम 12 ओवर में चार विकेट खोकर 88 रन ही बना सकी। इस टीम की ओर से पांच चौके की मदद से सुकेश कुमार ने सर्वाधिक 29 रन, राजीव सिंह ने तीन चौके की मदद से 21 रन और सुजीत कुमार ने एक चौका और एक छक्का की मदद से 19 रन बनाया। मीडिया ब्लू की ओर से गेंदबाजी करते हुए हरि गोप ने तीन ओवर में 16 रन देकर दो विकेट लिए जबकि आनंद प्रियदर्शी ने तीन ओवर में 20 देकर एक विकेट लिया। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार मीडिया ब्लू के रमेश दास को दिया गया। विजेता मीडिया ब्लू की टीम को पश्चिमी सिंहभूम के उपायुक्त अनन्य मित्तल ने और उपविजेता टीम और मैन ऑफ द मैच रमेश दास को एसआर रूंगटा ग्रुप के निदेशक मुकुंद रूंगटा ने पुरस्कार प्रदान किया। प्रतियोगिता का शुभारंभ चाईबासा के विधायक दीपक बिरूवा ने किया। उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और बल्लेबाजी करके प्रतियोगिता का विधिवत शुभारंभ किया। पुरस्कार वितरण समारोह के मौके पर सिंहभूम जर्नलिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष गौरीशंकर झा ने अतिथियों का स्वागत किया और महासचिव दिलीप बनर्जी ने मंच संचालन किया। नेशनल यूनियन का जर्नलिस्ट के सचिव राजीव नयनम ने धन्यवाद ज्ञापन किया। पुरस्कार वितरण समारोह के मौके पर जिला ओलंपिक संघ के अध्यक्ष नितिन प्रकाश, पश्चिमी सिंहभूम चैंबर के अध्यक्ष राजकुमार ओझा, विकास चंद्र मिश्र, सिंहभूम जर्नलिस्ट एसोसिएशन के कोषाध्यक्ष उदय प्रताप सिंह, झारखंड यूनियन का जर्नलिस्ट के सदस्य आनंद प्रियदर्शी, सुनील कुमार सिन्हा सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

दो दिवसीय प्रतिभा चयन प्रतियोगिता शुरू, पहले दिन 200 से अधिक बालक-बालिकाओं ने लिया भाग

PHOTON NEWS CHAIBASA : पर्यटन कला संस्कृति खेलकूद एवं युवा कार्य विभाग अंतर्गत खेलकूद एवं युवा कार्य निदेशालय के निर्देशानुसार राज्य में पूर्व से संचालित सभी आवासीय कीड़ा प्रशिक्षण केंद्रों में प्रशिक्षकों के रिक्त स्थानों को भरने तथा नव स्वीकृत आवासीय कीड़ा प्रशिक्षण केंद्रों के लिए प्रशिक्षण के चयन हेतु प्रमंडल स्तर पर प्रतिभा चंयन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना है। कोल्हन प्रमंडल में पश्चिम सिंहभूम चाईबासा के सिंहभूम स्पोर्ट्स एसोसिएशन ग्राउंड चाईबासा में 16 एवं 17 जनवरी को तीरंदाजी एवं फुटबॉल के बालक एवं बालिका वर्ष 10 से 14

चयन प्रक्रिया में शामिल अभ्यर्थी। ● फोटोन न्यूज

आवासीय प्रशिक्षण केंद्रों के लिए एवं 16 से 20 सेंटर आफ एक्सीलेंस के लिए चयन प्रतियोगिता शुरू हो गई है। इस प्रतियोगिता में प्रथम दिन 200 से अधिक बालक एवं बालिकाओं ने भाग लिया।

प्रतिभा चयन प्रतियोगिता में जिला खेल पदाधिकारी दुमका तूफान कुमार पोद्दार एवं कोलकाता से असिस्टेंट कोच एकेडमिक कमलाकर मधु रेड्डी, कृष्णा मोहंती सीनियर कोच कोलकाता आदि मौजूद रहे।

3 लोगों की पीट-पीटकर हत्या

लाठी-डंडे बरसाते दिखे लोग सड़क पर घसीटा, पार्किंग विवाद में हत्या के बाद भड़की थी भीड़

एजेंसी

औरंगाबाद । बिहार के औरंगाबाद में तीन लोगों की हत्या का दिल दहला देने वाला वीडियो सामने आया है। पहले वीडियो में भीड़ तीन लोगों पर लात-घूंसे और लाठी-डंडे बरसती दिख रही है। पीटने के बाद घायल शख्स को भीड़ सकड़ पर घसीट रही है।दूसरे वीडियो में कार के आसपास शव दिख रहे हैं। गांव वाले बोल रहे हैं कि अरे ये तो गलत हो गया। कानून हाथ में नहीं लेना चाहिए था। हत्या का केस चलेगा।औरंगाबाद में सोमवार शाम तीन लोगों की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। जबकि, दो की हालत गंभीर है। ये सब पार्किंग विवाद को लेकर हुआ। कार सवार युवकों ने विवाद के बाद एक दुकानदार पर गोली चला दी।

जो दुकान में बैठे रामशरण चौहान (65) को जा लगी। रामशरण महुअरी गांव के रहने वाले थे। उनकी मौत के बाद भीड़ उग्र हो गई। पांचों झारखंड के पलामू जिले के हैदरनगर के रहने वाले थे।कार सवार पांचों युवकों को घेरकर पिटाई करना शुरू कर दिया। इनमें से दो की मौत घटनास्थल पर ही मौत हो गई। जबकि घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की पिटाई से गंभीर रूप से जख्मी हुए तीन युवकों को इलाज के लिए नबीनगर रेफरल अस्पताल ले गई।हां डॉक्टरों ने प्राथमिक इलाज के बाद उनकी स्थिति गंभीर देखते हुए औरंगाबाद सदर अस्पताल रेफर कर दिया। औरंगाबाद ले जाने के दौरान ही एक और युवक की मौत हो गई। मामला जिले के नबीनगर थाना क्षेत्र के तेतरिया मोड़ का है।दुकान के सामने खड़ी कर दी थी कारकार सवार युवकों ने दुकान के सामने गाड़ी खड़ी कर दी थी। मना करने पर इनमें से एक ने दुकानदार पर गोली चला दी। गोली दुकान में बैठे व्यक्ति को लगी, जिससे उसकी मौत हो गई।फायरिंग की आवाज सुनकर आसपास के लोग इकट्ठा हो गए और कार सवार पांचों लोगों को बाहर खींचकर पीटना शुरू कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर किया, लेकिन तब तक दो युवकों की मौत हो चुकी थी, जबकि तीन को गंभीर हालत में अस्पताल में ले जाया गया, जहां एक ने दम तोड़ दिया।झारखंड के रहने वाले थे कार सवार युवककार सवारों की फायरिंग में दुकान में बैठे महुअरी गांव के रामशरण चौहान की मौत हो गई। रामशरण चौहान दुकानदार के बगल में बैठे थे। सभी कार सवार झारखंड के पलामू जिले के हैदरनगर निवासी थे। मृतकों में झारखंड के पलामू जिला के हैदर नगर ब्लॉक रोड निवासी 18 वर्षीय मुजाहिद, हैदर नगर बाजार निवासी मो चमन और अरमान शामिल हैं। जबकि जबकि इस कर में सवार अजीत शर्मा उर्फ लड्डू शर्मा और वकील की हालत गंभीर बनी हुई है।

संक्षिप्त डायरी

बोरसी लगाकर सो रहे व्यक्ति की झुलस कर मौत

कटिहार । कटिहार में सोमवार देर रात खाट के नीचे बोरसी लगा कर सो रहे बीमार व्यक्ति की झुलस कर मौत हो गई। व्यक्ति पैरालिसिस से पीड़ित था। इस वजह से वो खुद को बचा नहीं पाया। वो लाचार अवस्था में खाट पर सोया था और घर वाले दूसरे कमरे में सो रहे थे।इसी दौरान बोरसी की आग उसके कपड़ों में लग गई। आग धीरे-धीरे खाट की रस्सी में लग गई। जिसके बाद पूरे खाट में आग लग गई। उसपर लाचार व्यक्ति जिंदा जलता रहा। उसकी चिल्लाने की आवाज सुनकर दूसरे कमरे से पत्नी दौड़कर आई। उसने आग पर काबू तो पा लिया पर 55 वर्षीय छोटे लाल सोरेन की जान नहीं बची। घटना फलका प्रखंड के भरसिया पंचायत गिरयामा गांव की है।घटना के बाद लोगों की भीड़ लग गई। मामले की जानकारी पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची फलका पुलिस ने घटनास्थल का मुआयना किया। फलका थाना अध्यक्ष मुन्ना पटेल ने कहा कि परिजनों के अनुसार मृतक 2 साल से पैरालिसिस बीमारी से ग्रसित था। वो खाट पर सो रहा था। घटना के वक्त उसकी पत्नी दूसरे कमरे में सो रही थी। पैरालिसिस के कारण वो अपने आप को आग से बचा नहीं सका।परिजनों ने पोस्टमॉर्टम से फिलहाल इनकार कर दिया है। मृतक की पुत्री झारखंड में रहती है उसके पहुंचने के बाद ही कोई निर्णय लिया जाएगा।

सड़क हादसे में दो की मौत, 8 घायल

औरंगाबाद । औरंगाबाद में हाइवा ने पीछे से ऑटो में जोरदार टक्कर मार दिया। इससे ऑटो में सवार दो लोगों की मौत हो गई। वहीं आठ लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना सोमवार देर रात की है। मृतकों की पहचान मदनपुर के मुख्य बाजार स्थित ठाकुर रोड निवासी शिवकुमार शर्मा (50) और मदनपुर थाना क्षेत्र के ही घोरहत निवासी हरेंद्र तिवारी (35) के रूप में की गई।वहीं घायलों की पहचान शैलेश तिवारी, रमाकांत तिवारी, हरेंद्र तिवारी, सुभाष तिवारी, नीरज तिवारी और बिट्टू सिंह जख्मी हो गए। घटना के बाद वहां मौजूद स्थानीय लोगों ने इसकी जानकारी पुलिस को दिया। सूचना पर पहुंची रिसियप थाना की पुलिस ने सभी घायलों को अस्पताल पहुंचाया। चिकित्सकों ने शिवकुमार और हरेंद्र को मृत घोषित कर दिया। वहीं सभी जख्मियों की हालत नाजुक देखते हुए उन्हें बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया। दोनों शवों को पुलिस अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के बाद आगे की कार्रवाई में जुटी है।मेला देखकर लौट रहे थे सभीऑटो में सवार सभी लोग मदनपुर से बिहार झारखंड के बॉर्डर स्थित दंगवार बाजार में मकर संक्रांति के अवसर पर लगने वाला मेला में गए थे। लौटने के क्रम में तेज रफ्तार हाइवा ने पीछे से ऑटो में टक्कर मार दिया। घटना के बाद मदनपुर में मातम का माहौल है।

सिमरिया पुल बंद रहने से आवागमन ठप

बेगूसराय । बेगूसराय और पटना के बीच सिमरिया में गंगा नदी पर बने राजेन्द्र सेतु के सड़क मार्ग पर मंगलवार की रात वाहनों का परिचालन पूरी तरह से बंद रहेगा। सड़क मार्ग की मरम्मत के कारण यह निर्णय लिया गया है। बेगूसराय से पटना और लखीसराय जाने वाले सभी वाहनों को जीरोमाइल से ही दलसिंहसराय की ओर मोड़ दिया जाएगा।पुल का मरम्मत कर रहे एजेंसी एसपी सिंगला के डीपीएम अरुण गुप्ता ने बताया कि राजेंद्र सेतु सड़क मार्ग के हाथीदह साइड के स्पेन संख्या-तीन के समीप मरम्मत होना है। इसके लिए राजेन्द्र सेतु के सड़क मार्ग पर चल रहे वनवे व्यवस्था को 16 जनवरी की रात 10 बजे से 17 जनवरी की सुबह 6 बजे तक के लिए पूरी तरह सील कर दिया जाएगा।इमरजेंसी वाहनों को मिलेगी एंट्रीइस दौरान केवल इमरजेंसी वाहनों को छोड़ किसी भी तरह का वाहनों का प्रवेश राजेंद्र सेतु के सड़क मार्ग से नहीं हो सकेगा। मरम्मत में जुटे अधिकारी ने बताया कि मरम्मत को लेकर रात भर सेतु के सड़क मार्ग को बंद रखने के लिए बेगूसराय और पटना जिला प्रशासन से पहले ही अनुमति ली जा चुकी है।एसपी योगेन्द्र कुमार ने बताया कि सिमरिया स्थित राजेन्द्र पुल के मरम्मत के कारण 16 जनवरी की रात 10 बजे से 17 जनवरी को सुबह 6 बजे तक यातायात अवरूद्ध रहेगा।

अस्पताल से 2 दिन का नवजात चोरी

एजेंसी

बेतिया । बेतिया गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज अस्पताल से 2 दिन का नवजात चोरी हो गया। जिस महिला पर शक है, उसने बच्चे को मालिश और मां की सेवा की थी। रात को सब सो गए तो वह बच्चे को लेकर गायब हो गई। आक्रोशित परिवार ने 1 घंटे तक हंगामा किया। प्रसव वार्ड में अफरा-तफरी मची रही। पुलिस के आने के बाद परिजन शांत हुए।अस्पताल के सीसीटीवी फुटेज में 2 संदिग्ध महिलाएं जाती दिख रही हैं। नवजात के पिता ने एक महिला पर शक जताया है। पुलिस इनकी तलाश कर रही है। रविवार की रात 8 बजे जीएमसीएचस के सी- ब्लॉक के थर्ड फ्लोर पर प्रसव वार्ड में संतपुर निवासी शेख मुराद अली की पत्नी माजदा खातून को प्रसव पीड़ा होने पर भर्ती कराया गया था। रात 11 बजे ऑपरेशन से बेटे को जन्म दिया।सोमवार को पूरा परिवार खुशियां मनाने में लगा रहा। मंगलवार की सुबह जब परिजन उठे तो बच्चा वार्ड से गायब था। नवजात का अब तक कोई सुराग नहीं मिला है।बच्चे के पिता शेख मुराद ने कहा कि रविवार को एक महिला वार्ड में आई। मेरी सास कुरैशा खातून से रिश्ते-नाते जोड़कर संपर्क बढ़ा लिया।हम लोग महिला के झांसे में आ गए। बच्चे के जन्म के बाद उसे तेल लगाना और पत्नी की सेवा करने लगी। रात में भी साथ में रही। जब हम लोग सुबह जगे, तो वह महिला गायब थी।शेख मुराद का कहना था कि पूरा विश्वास है कि उसी महिला ने अन्य लोगों के साथ मिलकर बच्चे को गायब किया है।

ससुराल में विवाहिता का मिला शव

एजेंसी

नालंदा ।नालंदा में बिन्द थाना क्षेत्र के जहाना गांव में दिनेश प्रसाद की (33) वर्षीया पत्नी रीना देवी का शव शनिवार की रात उसके घर से बरामद किया गया था। इस मामले में हिलसा थाना क्षेत्र के बारा बीघा गांव निवासी रीना देवी के पिता राजकुमार सिंह ने बिन्द थाना में हत्या की प्राथमिकी दर्ज कराया है। दर्ज एफआईआर के अनुसार 13 जनवरी की शाम 5:30 बजे

राजकुमार सिंह को फोन पर सूचना मिली कि उनकी पुत्री रीना देवी की मौत हो गई है। सूचना के उपरांत सपरिवार बेटी के ससुराल पहुंचे जहां शव घर के बरामदे में पड़ा हुआ था। आसपास के लोगों से पूछताछ किया गया तो उन लोगों ने बताया कि दिनेश प्रसाद एवं दिनेश प्रसाद के दोनों भाई एवं उसकी मां घर छोड़कर भाग गए हैं।दरअसल, अक्सर रीना देवी फोन कर बताती थी कि उसके साथ हमेशा ससुराली परिवार मारपीट और परेशान करता है। इसके पूर्व भी कई बार पति सास और देवर के साथ शांतिपूर्वक रहने के लिए समझौता हुआ था। उसके बाद भी रीना देवी को प्रताड़ित किया जाता था।

पड़ोसी ने 5 साल की बच्ची से किया दुष्कर्म

एजेंसी

मधुबनी ।मधुबनी में 5 साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म हुआ है। बच्ची शौच के लिए घर से बाहर निकली थी। तभी गांव के एक युवक ने उसे पकड़ लिया और घर से 500 मीटर दूर ले जाकर वारदात को अंजाम दिया। जिस जगह पर घटना हुई वो इलाका काफी सुनसान था, लेकिन बच्ची के शोर मचाने पर आसपास के लोग घटनास्थल की ओर आने लगे। जिन्हें देखकर आरोपी वहां से फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है। घटना लौकही थाना क्षेत्र की है।लोगों को आता देख आरोपी युवक भागा मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने मामले की जानकारी बच्ची के परिजनों को दी।

मासूम का परिवार जब मौके पर पहुंचा तो उन्होंने अपनी बच्ची को खून से लथपथ देखा। बच्ची का काफी ज्यादा चिल्ला रही थी। पीड़ित परिवार उसे लेकर लौकही थाना पहुंचा। जहां से उसे पीएचसी ले जाया गया।पीएचसी से चिकित्सकों ने उसे बेहतर इलाज के लिए मधुबनी सदर अस्पताल रेफर कर दिया। मामला रविवार देर शाम की है। सोमवार शाम जब पीड़िता को मेडिकल जांच के लिए सदर अस्पताल लाया गया तब मामला प्रकाश में आया।ग्रामीणों ने घटना की सूचना दी पीड़िता की मां ने कहा कि वो दरिंदा बच्ची को घर से थोड़ी दूर ले गया और पुआल के पास बच्ची के साथ मारपीट की और दुष्कर्म किया। बच्ची दर्द के कारण चिल्लाने लगी। तभी गांव के ही दो लोगों ने बच्ची की चिल्लाने की आवाज सुनी। जिसके बाद ग्रामीण उस ओर जाने लगे। जिन्हें देखकर आरोपी मनोज कुमार मंडल वहां से भाग गया। उन्हीं लोगों ने हमें मामले की सूचना दी।लौकही थाना अध्यक्ष ने बताया कि पीड़ित परिजन की तरफ से 5 वर्षीय मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म के संबंध में आवेदन दिया गया है। जिसके बाद आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

अयोध्या भेजी जा रही तुलसी जी की माला

एजेंसी

आरा । भोजपुर जिले से रेशम के धागे से बने रामलला के लिए तुलसी जी का माला अयोध्या भेजी जा रही है। इसके लिए जिले के संदेश प्रखंड के पंडुरा में तुलसी जी का 9 माला तैयार कर भेजा जा चुका है। ऐसे में अयोध्या में 22 जनवरी को श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान में भोजपुर भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहा है। 16 जनवरी से मंदिर में शुरू हो रहे अनुष्ठान के लिए रोज यहां से तुलसी जी की ताजा पत्तियों की माला भेजी जा रही है। हर माले का वजन लगभग एक किलो होगा। माले के साथ अनुष्ठान में बनने वाले

महाप्रसाद के लिए तुलसी के कोमल पत्ते भी भोजपुर से ही जाएगा।एक बीघे में तुसली जी की खेतीपंडुरा गांव के निवासी अभिजीत कुमार ने बताया कि रामलला के माले के लिए पंडुरा में खासतौर पर एक बीघे में तुलसी की खेती की गई है। पौधे की कलगी और पत्तियों से माला बनाने के लिए बेंगलुरु से तीन स्पेशलिस्ट कारीगर को बुलाया गया है। जो दिन रात काम करने में जुटे हुए है। उन्होंने बताया कि वो एक ट्रेडिंग समूह से जुड़े हुए हैं। उसी ग्रुप से जुड़े दोस्त बैंगलौर के मैसूर के रहने रघु कृष्ण मूर्ति ने पिछले साल जुलाई में उनसे श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा के लिए तुलसी जी की माला की आवश्यकता बताई थी। इसके बाद उन्होंने अपने घर पर बात की थी। महंथ की इच्छा जताने के बाद सेवा का मिला मौका अभिजीत कुमार ने बताया कि रघु ने हमारी बात अयोध्या मंदिर के महंथ गोपाल दास से कराई और उनकी यह इच्छा है कि भोजपुर से श्रीरामलला के लिए तुलसी जी का माला भेजा जाए। इसके बाद प्रभु श्रीराम की सेवा का अच्छा मौका मिल गया।

ड्रग्स तस्कर गिरफ्तार

फुलवारीशरीफ ।रामकृष्णानगर थाने की पुलिस ने बैरिया बस स्टैंड से दो ड्रग्स तस्करों को प्रतिबंधित कफ सिरप के साथ गिरफ्तार किया। एक तस्कर फरार होने में सफल रहा। उनके पास से 235 बोतल कफ सिरप बरामद किया गया। पुलिस को सूचना मिली कि बस से झारखंड से मधेपुरा कफ सिरप ले जाया जा रहा है।पुलिस ने उस बस से सुपौल के रूपेश कुमार और मधेपुरा के शाहरूख को गिरफ्तार किया। तीसरा तस्कर मधेपुरा का ही राकेश कुमार फरार होने में सफल हो गया। ये तस्कर छोटे-छोटे पैडलर को यह कफ सिरप ऊंचे दाम पर बेचते थे।झारखंड से 90

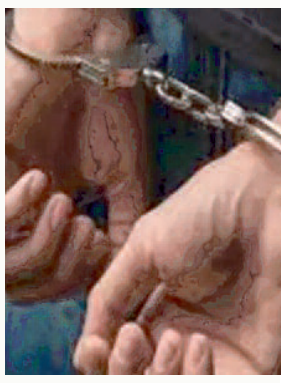

रुपए में खरीद कर मधेपुरा और आसपास के इलाकों में 150 रुपए में बेचते थे। दोनों के खिलाफ एनडीपीएस एक्स के तहत केस दर्ज किया गया है।

ट्रैक्टर पलटा, महिला की दबकर मौत

गोपालगंज । गोपालगंज जिले के बरौली थाना क्षेत्र मिलकिया गांव के पास सोमवार की देर रात गन्ना लदा अनियंत्रित ट्रैक्टर पलट गया। हादसे में पैदल चल रही एक महिला वाहन के नीचे दब गई और उसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई। वहीं, स्थानीय लोगों ने सूचना पुलिस को दी। हादसे के बाद ट्रैक्टर चालक मौके का फायदा उठाकर फरार हो गया। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। मृतका की पहचान मांझागढ़ थाना क्षेत्र के शेखपरसा गांव निवासी इम्ब्राहिम मियां की पत्नी आमना बीबी के रूप में की गई।48 घंटे में गन्ना लदे ट्रैक्टर ने दो लोगों की जान लीमांझागढ़ थाना क्षेत्र के शेखपरसा गांव के इम्ब्राहिम मियां की पत्नी आमना बीबी किसी कार्य

से मिलकिया गांव आई थी। सोमवार की रात पैदल ही वापस अपने घर जा रही थी। इसी बीच गन्ना लदा ट्रैक्टर पलट गया। जिसके नीचे दबने से उसकी मौत हो गई। पुलिस ने गन्ना लदे ट्रैक्टर-ट्रॉली को कब्जे में लेकर चालक की खोजबीन शुरू कर दी है। इससे पूर्व शनिवार की देर रात सिधवलिया थाना क्षेत्र के रामपुर गांव के समीप एनएच-27 पर गन्ना लदे ट्रैक्टर-ट्रॉली की चपेट में आने से बाइक सवार युवक की मौत हो गई थी।

घर में घुसकर साढ़े दस लाख कैश की चोरी

पूर्णिया । पूर्णिया में सांसद का इलाका ही सुरक्षित नहीं। बेखौफ चोरों ने इलाके के लोगों के नाक में दम कर रखा है। बाइक चोरी की बढ़ती घटनाओं के बीच शातिर चोरों ने एक घर में घुसकर साढ़े दस लाख रुपए कैश समेत सोने -चांदी के जेवरात कई महंगे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को मिलाकर करीब 15 लाख की चोरी की भीषण घटना को अंजाम दिया है। घर के लोग मकर संक्रांति को लेकर अपने पैतृक गांव गए थे, तभी मौका देख शातिर चोर घर में घुसे और चोरी की इस वारदात को अंजाम दिया। चोरी की ये घटना शहर के सदर थाना क्षेत्र के रामबाग इलाके से जुड़ी है। इसी इलाके में पूर्णिया सांसद संतोष कुशवाहा का आवास और जदयू का दफ्तर है।

हैरत की बात है कि शातिर चोरों ने घर में घुसकर कमरे में सो रही बीमार चल रहीं वृद्ध महिला के हाथ -पैर बांधे और उस कमरे में भी घुसकर बड़े ही इत्मीनान से चोरी की और फिर चोरी का सारा सामान लेकर चलते बने। घटना की सूचना मिलते ही सदर एसडीपीओ और सदर थानाध्यक्ष खुद मौके पर पहुंचे और मामले की छानबीन में जुट गए हैं।पीड़ित की पहचान शहर के सदर थाना क्षेत्र के रामबाग दुगार्मंदिर निवासी समीप जयशंकर यादव के रूप में हुई है। वो मूल रूप से धमदाहा के कुकरौन गांव के रहने वाले हैं। घटना की जानकारी देते हुए पीड़ित अरविंद कुमार सिंह ने बताया कि मकर संक्रांति का

त्योहार मनाने वे लोग एक रोज पहले रविवार रात करीब 8:30 बजे कार से परिवार समेत अपने पैतृक गांव कुकरौन गए हुए थे। परिवार संग मकर संक्रांति पर चूड़ा -दही और तिल आदि का सेवन कर घर में बैठकर एक -दूसरे से बातचीत कर रहे थे, कि तभी अचानक फोन बजा। कॉल कर पड़ोसी ने जानकारी दी कि उनके घर का दरवाजा टूटा है और देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि घर में चोरी हुई है। जिसके बाद वे बगैर देरी किए परिवार संग वापस पूर्णिया आ गए।घर आने पर देखा कि मुख्य दरवाजे का ताला टूटा है। अंदर कमरे में प्रवेश करने पर घर के नीचे के सभी कमरों का लॉक टूटा पाया। घर का सारा सामान इधर-उधर बिखरा था। अलमीरे में रखे साढ़े दस लाख कैश, सोने -चांदी के जेवरात, एलईडी टीवी समेत करीब 15 लाख की भीषण चोरी की घटना को अंजाम दिया है।पीड़ित ने बताया कि घर के इन नीचे के कमरे में उत्पात मचाने के बाद शातिर चोर घर के ऊपर वाले कमरे में घुसे गेट नॉक कर कमरे में सो रहीं वृद्ध सास को जगाया। उनकी सास बीते कुछ दिनों से बीमार चल रही थी। इनके हाथ-पैर बांधे और उनके कमरे में भी चोरी की वारदात को अंजाम दिया और फिर बड़े ही इत्मीनान से भाग निकले। चोरी की घटना को लेकर पुलिस को सूचना दी गई थी। जिसके बाद सदर एसडीपीओ पुष्कर कुमार, सदर थाना अध्यक्ष मनोज कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे थे।

बसपा अकेले रण में

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की सुप्रीमो मायावती ने उचित ही स्पष्ट कर दिया कि उनकी पार्टी 2024 का लोकसभा चुनाव अकेले ही लड़ेगी। इस घोषणा का सर्वाधिक असर 80 लोकसभा सीटों वाले उत्तर प्रदेश के परिणामों पर पड़ेगा। चूंकि मायावती अभी तक किसी भी गठबंधन में शामिल नहीं हैं, इसलिए भी उनका अलग चुनाव लड़ना जमीनी राजनीति को प्रभावित करेगा। पिछले आम चुनाव में बसपा राज्य में दूसरे नंबर की पार्टी थी और उसे 10 सीटें मिली थीं। हालांकि, यह बात भी गौर करने की है कि पिछला लोकसभा चुनाव बसपा ने समाजवादी पार्टी के साथ मिलकर लड़ा था। गठबंधन से ज्यादा लाभ बसपा को ही हुआ था, पर इस बार इन दोनों दलों के बीच समन्वय की सूरत नहीं बन पा रही है। वैसे, उत्तर प्रदेश में पिछले विधानसभा चुनाव में बसपा अलग होकर लड़ी थी और उसे केवल एक सीट पर जीत मिली थी। ऐसा माना जा रहा था कि भाजपा के खिलाफ बने विपक्षी ब्लॉक ह्यइंडियाह्ल में वह शामिल हो जाएंगी, पर लगता है, दोनों पक्षों की ओर से गठबंधन के ठोस प्रयास नहीं हुए और अपने-अपने फायदे की राजनीति ने अपना रंग दिखा दिया। दूसरी ओर, भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से बसपा दूर ही रही है। भाजपा और बसपा की मिली-जुली सरकार तो उत्तर प्रदेश में रह चुकी है, मगर सामाजिकता और विचारधारा, दोनों ही स्तर पर भाजपा और बसपा के बीच एक तरह की तल्खी शुरू से रही है। सोमवार को बसपा की घोषणा से शायद ही किसी को आश्चर्य हुआ होगा। वैसे इंडिया ब्लॉक के नेताओं को मायावती को साथ लेने के लिए ज्यादा प्रयास करने चाहिए था। यह भी ध्यान देने वाली बात है कि इंडिया ब्लॉक चूंकि फैसले लेने में काफी देरी कर रहा है, इसलिए बसपा जैसी अन्य संभावित सहयोगी पार्टियों के गठबंधन से बिदक जाने की आशंका बढ़ गई है। अब इंडिया की ओर से जितनी देरी होगी, उसे उतने ही ज्यादा नुकसान उठाने पड़ेंगे। मायावती का गठबंधन में शामिल न होना, वास्तव में भाजपा विरोधी वोटों के बंटवारे को ही बल प्रदान करेगा। मायावती ने लगे हाथ यह भी इशारा कर दिया है कि गठबंधन उनके लिए कभी फायदेमंद नहीं रहा है और इससे उन्हें नुकसान ही ज्यादा होता है। वैसे, उनकी इस दलील पर सियासी बहस संभव है। देश में शायद ही ऐसा कोई दल है, जिसने सियासी गठबंधन से लाभ नहीं उठाया हो। देश में अनेक दलों की सत्ता तो गठबंधन से ही संभव हुई है। हालांकि, बसपा का यह संकेत मानीखेज है कि चुनाव के बाद गठबंधन पर विचार किया जा सकता है। इसका मतलब यह हुआ कि आगामी लोकसभा चुनाव में बसपा अपने दम पर ज्यादा से ज्यादा सीटें जीतने की कोशिश करेगी, जिससे अन्य सभी पार्टियों के मत प्रतिशत पर असर पड़ेगा। मायावती का अपना वोट बैंक है और अगर वह मजबूती से लड़ेंगी, तो बड़े गठबंधनों के समीकरण को भी प्रभावित कर सकती हैं। सोमवार को 68 साल की होने के साथ उन्होंने ऐलान कर दिया है कि राजनीति से संन्यास लेने की उनकी कोई योजना नहीं है।

ठोस राजस्व

अब जबकि वित्तीय वर्ष 2023-24 में एक चौथाई से भी कम समय बचा है, सरकार ने अपने प्रत्यक्ष कर संग्रह के लक्ष्य का लगभग 81 फीसदी हिस्सा पूरा कर लिया है। इस 10 जनवरी तक रिफंड के बरक्स 14.7 लाख करोड़ रुपये का प्रत्यक्ष कर प्रवाह एक साल पहले की तुलना में 19.4 फीसदी ज्यादा रहा। अर्थशास्त्रियों का मानना है कि सरकारी खजाने का शुद्ध प्रत्यक्ष कर का कोष 17.2 लाख करोड़ रुपये के बजटीय अनुमान से बहुत ज्यादा नहीं तो लगभग एक लाख करोड़ रुपये अधिक हो जाएगा और पूरे साल की वृद्धि दर लगभग 18 फीसदी की होगी। वस्तु एवं सेवा कर प्रवाह के भी बजटीय गणित को मात देने की संभावना है और केंद्रीय बैंक के उदार लाभांश से गैर-कर राजस्व को बढ़ावा मिलने की स्थिति में, उत्पाद शुल्क से अपेक्षाकृत कम प्राप्तियों के बावजूद कुल राजस्व के बजट में की गई उम्मीदों से परे जाने की संभावना है। प्रत्यक्ष करों के तहत, कॉरपोरेट करों में जहां 12.4 फीसदी की वृद्धि हुई है वहीं व्यक्तिगत आयकर से 27.3 फीसदी ज्यादा राजस्व प्राप्त हुआ है। और यह विरोधाभास इस मूल्यांकन वर्ष में दाखिल किए गए आयकर रिटर्न की संख्या रिकॉर्ड स्तर (31 दिसंबर तक 8.2 करोड़) तक पहुंच जाने के मद्देनजर आने वाले सालों में भी जारी रह सकता है। इस साल घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के 5.9 फीसदी तक रखने के लक्ष्य को हासिल करने में एक छोटे अंतर से चूक सकने की आशंका के बीच, स्वस्थ राजस्व वृद्धि और कर दाखिल करने के आधार का सराहनीय विस्तार सरकार की राजकोषीय मजबूती की उम्मीदों को आगे बढ़ने में कुछ सहारा प्रदान करता है। यह केंद्र के लिए कराधान को कॉरपोरेट जगत और आम लोगों के वास्ते और ज्यादा सरल बनाने पर ध्यान देते हुए इसमें आगे और सुधार करने की गुंजाइश भी बनाता है। मसलन, अक्सर विवादों की वजह बनने वाली कंपनियों की विविध विदहोल्डिंग टैक्स की दरों को एक नहीं तो उनकी संख्या घटाकर उन्हें कम दरों वाला बनाया जा सकता है। स्रोत पर कर कटौती और संग्रह (टीडीएस और टीसीएस) की दरों, जिसमें विदेशी खर्चों पर नजर रखने के लिए बहु-विवादित शुल्क (लेवी) भी शामिल है, को कुछ हद तक नीचे लाया जा सकता है - कर अधिकारी, दरें चाहें जो भी हों, उनके बारे में खुफिया जानकारी हासिल करना जारी रख सकते हैं।

श्रीराम मंदिर सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अमृतकाल

ANALYSIS

श्याम जाजू

**धर्म, भाषा, रूपरेखा, शैली और विविध संस्कृतियों और जीवन शैलियों के बाद भी भारत एक है। उसकी आत्मा एक है। हम सब एक-दूसरे से अपनी सांस्कृतिक पहचान से जुड़े हुए हैं। इसी जुड़ाव को बढ़ाने की दिशा में प्रभु श्रीराम के मंदिर का निर्माण एक महत्वपूर्ण कदम है। अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर हमें अपनी साझी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रखने में मदद देगा। श्रीराम भारतीय संस्कृति के प्रेरणा पुरुष हैं। एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र हैं। हम भारतीय जिन सात्विक मानवीय गुणों को सदियों से पूजते आए हैं, वे सभी राम के व्यक्तित्व में निहित हैं। इसीलिए श्रीराम, मयार्दा पुरुषोत्तम हैं और हमारी आस्था के केंद्र में हैं। हमारे चेतन-अवचेतन मन में हैं और चिरकाल से इस देश के मानस में बसे हुए हैं। यहां राम सब के हैं और सब राम के हैं। चाहे पूरब हो या पश्चिम, उत्तर हो या दक्षिण, राम हमारे मानस में समाए हुए हैं। देश के किसी भी हिस्से में जाएं और आपको लोगों के नाम में राम मिलेगा-दक्षिण में रामय्या, रामचन्द्रन या रामनाथन हो या उत्तर में रामशरण, राम सिंह या रामदास, राम सभी में हैं। सुबह की राम-राम से लेकर जय सिया राम और जय श्रीराम हमारे लिए अभिवादन और अभिनन्दन हमारे व्यवहार में समाहित/सन्निहित हैं। भारत ही नहीं राम का संदेश भौगोलिक सीमाओं से परे, सार्वभौम और कालातीत है, उनकी प्रासंगिकता महज भारतीय उपमहाद्वीप तक ही सीमित नहीं है। रामकथा के अनगिनत संस्करण दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों जैसे थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, म्यांमार, लाओस में आज भी प्रचलित हैं। आज भी, भगवान राम और देवी सीता का चरित्र चित्रण इन देशों की लोक परंपराओं का हिस्सा हैं। आज यही राम हमारे मानस से निकल कर प्राकट्य में आ रहे हैं। परिणामतः पूरा देश राममय हो गया है। राम के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा हो रही है। अयोध्या अपने पुरातन वैभव की पुनः पाते हुए हमारी सांस्कृतिक राजधानी के रूम में प्रतिष्ठापित हो रही है। यह पूरे देश के लिए गौरव बोध का समय है। राम के आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एक लोकहितकारी न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था को जिसमे सभी के लिए शांति, न्याय और समानता हो, सुनिश्चित करती है। इसीलिए श्रीराम मंदिर का निर्माण न केवल भारतीय सांस्कृतिक एकता का एक अद्वितीय प्रतीक है, यह सुशासन और सामाजिक समरसता की ओर प्रवृत्त करने की दिशा में एक महती प्रयास भी है। मंदिर ही एक वह जगह होती है जहां सभी वर्गों, जातियों, और समुदायों के लोग एकत्र होते हैं और साझा व्यवहार करते हैं जिससे धर्मिक एकता का संवर्धन होता है। रामायण में श्रीराम की कथा ने सभी वर्गों और समुदायों को एक साथ लाने का संदेश दिया है तथा भारतीय समाज में धर्म, नैतिकता और सत्य के मूल्यों को प्रोत्साहित किया है। परिणामतः श्रीराम मंदिर निर्माण एक बड़े सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक संवाद का हिस्सा बन गया है जो भारतीय समाज को धार्मिक और सांस्कृतिक आधारों पर मजबूत करने का प्रयास कर रहा है। निःसंदेह समाज में एकता और सभी धर्म-सम्प्रदायों के बीच समरसता की ओर यह एक महत्वपूर्ण कदम है। इसी 22 जनवरी को होने वाले प्रतिष्ठा समारोह में वाल्मीकि और रविदास मंदिर के पुजारियों की उपस्थिति और महर्षि वाल्मीकि के नाम पर अयोध्याधाम हवाई अड्डे का नामकरण, माता शबरी के नाम पर भोजनालय, निषादराज के नाम पर अतिथि निवास, सामाजिक एकता, न्याय और सद्भाव का ही एक उदाहरण है। बौद्ध और जैन परंपराओं में भी इस नगरी का विशेष महात्म्य है। साथ ही अयोध्या के मुस्लिम समुदाय का मंदिर निर्माण की तैयारियों में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेना और फारूक अब्दुल्ला जैसों का यह कहना, कि राम केवल हिंदुओं के नहीं हैं, राम सभी के हैं, सचमुच एक महान परिवर्तन है। अयोध्या में नव निर्मित राममन्दिर मात्र मंदिर न केवल करोड़ों लोगों की आस्था, विश्वास और भारत के पुनर्जागरण का प्रतीक है बल्कि यह भारत की सोयी अस्मिता और आत्मविश्वास के जागरण का प्रतीक भी है। श्रीराम जन्म भूमि का आंदोलन हिन्दू समाज का आत्म साक्षात्कार है। यह इस बात का प्रमाण है कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिन्दू साढ़े पांच सौ बरस की लंबी लड़ाई लड़ और जीत सकते हैं। सच में अयोध्या में रामलला का भव्य और दिव्य मंदिर का निर्माण सभी भारतीय नागरिकों के लिए सदियों पुराने सपने के पूरे होने जैसा है। पांच सौ वर्षों बाद रामनगरी का वैभव व कीर्ति लौट रही है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के प्रमुख महंत श्री नृत्य गोपाल दास के शब्दों में, मंदिर निर्माण के साथ सिर्फ अयोध्या ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के भाग्य का नया सूर्य उदित होगा। निःसंदेह यह अवसर हर्ष और उल्लास का है। अयोध्या इस तरह प्रसन्न है, जैसे कि अपने आराध्य का पुनः प्राकट्य हो रहा हो है। सच में सामूहिक चेतना से जो काम होते हैं, उनमें अलग ही आनंद की अनुभूति होती है। आज सम्पूर्ण देश प्रसन्न है। जनमानस आह्लादित है। जिन असंख्य लोगों ने राममंदिर आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति दी है, उनकी आत्माएं प्रसन्न हो रही होंगी, क्योंकि उनका बलिदान अब सार्थक होने जा रहा है। इसी के साथ मंदिर निर्माण आंदोलन की इति भी होगी जिसने भारतीय जनमानस की चेतना को लगभग तीन दशकों तक एक सूत्र में पिरोकर रखने का काम किया। इसे विधि का विधान भी कह सकते हैं कि नवनिर्मित मंदिर में श्रीराम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा का शुभ कार्य राम जन्मभूमि आंदोलन के महानायक पूर्व उपप्रधानमंत्री और सबके सम्माननीय लालकृष्ण आडवाणी और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में हो रहा है जो स्वयं भी राम जन्मभूमि आंदोलन के नायकों में से एक रहे हैं। सर्वविदित है कि प्रधानमंत्री मोदी साल 1990 में भारतीय जनता पार्टी के तत्कालीन अध्यक्ष आडवाणी जी की सोमनाथ से अयोध्या तक की उस रथयात्रा के सारथी रहे हैं, जिसने मंदिर आंदोलन को निर्णायक रफ्तार देने का काम किया था। मंदिर निर्माण के न केवल धार्मिक ० सांस्कृतिक बल्कि अन्य पहलू भी हैं जिसमें सामाजिक और आर्थिक प्रमुख हैं। मंदिर से न केवल सामाजिक समरसता बढ़ेगी बल्कि आर्थिक संवर्धन भी होगा। अयोध्या हिन्दुओं का तीर्थस्थल पहले से है, लेकिन श्रीराम मंदिर निर्माण के बाद इसका दरजा भी अमरनाथ यात्रा जैसी तीर्थ यात्राओं जैसा हो जाएगा।

लेखक, भारतीय जनता पार्टी के निवर्तमान राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।

प्रभु श्रीराम का आगमन, सब में एक, एक में सब

जैसे ही दुनिया ने नए साल 2024 की शुरूआत की, भारत भारतीय मूल्य प्रणाली के लोकाचार को संस्थागत बनाने के लिए भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण को पूरा करने की एक शानदार ऐतिहासिक परियोजना में लगा हुआ है, जिसने युगों से देश की विविध समग्रता के व्यापक विचार को बरकरार रखा है। वास्तव में सामाजिक बंधनों को मजबूत करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सांस्कृतिक अस्मितावादी खोज को अब भगवान श्रीराम के मानवीय संदेशों और मजबूत सांस्कृतिक मानदंडों के लिए उनके व्यापक रुख के माध्यम से अभिव्यक्ति मिलेगी। अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर का हिंदुओं के लिए बहुत महत्व हो सकता है और यह होना भी चाहिए, लेकिन हमें इससे आगे देखना चाहिए और मंदिर को एक स्मारक के रूप में सराहना चाहिए और भारत माता की सभ्यतागत यात्रा पर ध्यान केंद्रित करना चाहता है, जिसमें हमारे भावनात्मक और सांस्कृतिक संबंधों में तीव्र दरार या टूट-फूट की कभी कोई घटना नहीं हुई है। मंदिर एक अनुस्मारक है जो भारत की अपनी विशिष्ट स्वदेशी संस्कृति है जो इसकी अंतर्निहित शक्ति और ताकत का एक समृद्ध बनावट वाला स्रोत है और पश्चिमीकरण के नासमझ अनुकरण को दृढ़ता से खारिज किया जाना चाहिए। भारतीय सभ्यता उम्र बढ़ने से इनकार करने वाली जीवंत सभ्यता है क्योंकि यह ह्यवसुधैव कटुंबकमह्ल विचार की व्यापकता की शाश्वत और गौरवशाली चमक से प्रज्वलित है। इस तरह के तीव्र और प्रबल स्वभाव का राम मंदिर में पूर्ण रूप से प्रकटीकरण हुआ है। नवनिर्मित राम जन्मभूमि मंदिर और उसका पवित्रीकरण निस्संदेह एक शानदार धार्मिक आयोजन है और रहेगा। यह एक राष्ट्रीय उत्सव का आह्वान करता है क्योंकि भगवान राम उन सभी चीजों के प्रतीक हैं जिनका भारत प्रतीक है और रहेगा। रामायण और महाभारत हमारे राष्ट्रीय महाकाव्य और भारतीय मूल्य प्रणाली के मूल हैं। ऐसे में हमें भगवान राम पर गर्व होना चाहिए और उन्हें हमारी सामाजिक मूल्य प्रणाली की आधारशिला रखने का श्रेय देना चाहिए, जिसके लिए भारत को श्रेय दिया जाता है और दुनिया भर में इसकी सराहना की जाती है। भगवान राम का जीवन कभी भी सामान्य नहीं रहा। वह एक पुत्र के रूप में, एक पिता के रूप में, एक पति के रूप में और सबसे महत्वपूर्ण रूप से एक राजा के रूप में एक आदर्श साबित हुए हैं। उनके चरित्र की उत्कृष्टता ऐसी रही है कि भगवान राम और उनके विशिष्ट आध्यात्मिक गुण सभी युगों तक मान्य रहे हैं। भगवान राम और उनका जीवन निस्वार्थता, माता-पिता के प्रति समर्पण, साहस, न्याय, सच्चाई और धार्मिकता के मूल्यों की प्रशंसा करता है। उनका महत्व केवल एक अत्यंत पूजनीय हिंदू देवता होने तक ही सीमित नहीं है। भगवान राम की स्पष्ट व्याख्या में कुछ समूहों या लोगों के बीच आशंका का कुछ तत्व हो सकता है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है क्योंकि वे यह समझने में विफल रहे हैं कि भगवान राम अपने नैतिक दावों और मानव स्वभाव की शुद्धता की व्यावहारिक अभिव्यक्ति और मानवीय करण की सहवर्ती पवित्रता के कारण हमारे जीवन पर शाश्वत प्रभाव डालते हैं। यह अकारण नहीं है कि उनका नाम न केवल शिष्टाचार के प्रयोजनों के लिए, बल्कि मृत्यु के समय भी लिया जाता है। भगवान राम की संपूर्ण मूल्य प्रणाली मानवतावाद के दर्शन के इर्द-गिर्द घूमती है जो शक्ति के एक सुसमाचार के रूप में काम करेगी जो विशेष रूप से वर्तमान समाज को बेईमानी और असंवेदनशीलता के उच्च दबाव वाले तूफानों से निपटने में सक्षम बनाएगी। भगवान राम नामक इस आध्यात्मिक और राष्ट्रीय इकाई के बारे में वास्तव में बहुत कुछ सार्थक और गहराई से कहा जा सकता है। एक आदर्श व्यक्ति 'पुरुषोत्तम' के अवतार के रूप में भगवान राम को सबसे शक्तिशाली और अद्वितीय धर्म रक्षक माना गया है। धर्म शब्द की उत्पत्ति इसके संस्कृत मूल 'धृ' से मानी जा सकती है, जिसका अर्थ है एक साथ रखना, कुछ ऐसा जो समाज को बांधता है और एक साथ रखता है। इस प्रकार भगवान राम की शिक्षाएं और जीवन उदाहरण एक मजबूत सामाजिक आधार के रूप में कार्य कर सकते हैं और मानव स्वभाव की कमजोरियों को विफल करने में मदद कर सकते हैं। कोई भी सुरक्षित रूप से यह तर्क दे सकता है कि त्रेता युग की तुलना में किसी भी समय एक महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व ने हमारी सभ्यता और संस्कृति की रूपरेखा को आकार देने में अधिक शक्तिशाली और निर्णायक भूमिका नहीं निभाई, एक ऐसा युग जिसने भगवान राम में एक महान आध्यात्मिक व्यक्तित्व का शानदार और भाग्यशाली उद्भव देखा। जिन्होंने एक नए दिव्य युग की स्थापना की, जिसने विभिन्न युगों के दौरान विभिन्न कारणों से अपनी चमक, जीवंतता और शक्ति खो दी। वह एक आदर्श राजा और एक आदर्श गृहस्थ थे जो मानवता की उच्चतम संस्कृति की रक्षा और प्रचार के प्रति समर्पित थे और इस प्रकार लोगों के जीवन को प्रबुद्ध करते थे और सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध समाज के उद्भव का मार्ग प्रशस्त करते थे, जिसके अवशेष आज भी मौजूद हैं जो हमारे सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग हैं । अब समय आ गया है जब हमें इस महान विरासत के मशाल वाहक के रूप में धार्मिकता, आशा, दृढ़ता और एकता के युग को पुनर्जीवित करने का संकल्प लेना चाहिए। राम मंदिर का निर्माण और राष्ट्र को समर्पित करने की वर्तमान सरकार की प्रतिबद्धता देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और परंपरा की सुरक्षा और संरक्षण के प्रति उसके मजबूत समर्पण को दशार्ती है। हां, भव्य मंदिर का सफल और शांतिपूर्ण निर्माण वास्तव में उस राष्ट्र के लिए उत्सव का प्रतीक है, जिसने दबाव और सामाजिक संकट देखा होगा, लेकिन इनमें से कोई भी इतना शक्तिशाली साबित नहीं हुआ कि हमारी पहचान खतरे में पड़ जाए।

Social Media Corner

सच के हक में...

हम उस महान तमिल ऋषि की याद में तिरुवल्लुवर दिवस मनाते हैं, जिनका तिरुक्कुरल में गहन ज्ञान हमें जीवन के कई पहलुओं में मार्गदर्शन करता है। उनकी कालजयी शिक्षाएँ समाज को सद्गुण और अखंडता पर ध्यान केंद्रित करने, सद्भाव और समझ की दुनिया को बढ़ावा देने के लिए प्रेरित करती हैं। हम उनके द्वारा प्रचारित सार्वभौमिक मूल्यों को अपनाकर उनके दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता भी दोहराते हैं।

(प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 'एक्स' पर पोस्ट)

लखनऊ में आज दो स्थानों पर ह्य विकसित भारत संकल्प यात्राह्ल में सम्मिलित हुआ और केंद्रीय योजनाओं के लाभार्थियों को आवास की चाभी, गैस कनेक्शन और चेक इत्यादि वितरित किए गए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर पूरे देश में विकसित भारत संकल्प यात्रा चल रही है। इस यात्रा के माध्यम से योजनाओं का लाभ उन सभी जरूरतमंद लोगों तक पहुंच रहा है, जो अभी तक इनका लाभ उठाने से वंचित रह गये थे। लखनऊ में भी इसका पूरा प्रयास किया जा रहा है कि कोई भी परिवार जो पात्र है वह योजनाओं के लाभ से वंचित नहीं रहना चाहिए।

(रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का 'एक्स' पर पोस्ट)

'मां' ने मुनव्वर को बनाया 'सबसे दुलारा' शायर

उर्दू साहित्य का विशाल वटवृक्ष रविवार की सर्द शाम को नवाबों के शहर लखनऊ में ढह गया। 26 नवंबर 1952 को उत्तर प्रदेश के जिले रायबरेली में जन्मे मशहूर शायर जनाब मुनव्वर राणा ने एक अस्पताल में अंतिम सांस लेकर नश्वर दुनिया को अलविदा कह दिया। खुदा ने उनके निधन की वजह दिल के दौरे के रूप में मुकर्रर की, जबकि थे कैंसर से पीड़ित। उनके न रहने की खबर सोमवार तड़के पूरे संसार में आग की तरह फैली, जिसने भी सुनी वह स्तब्ध रह गया। बड़ी-बड़ी हस्तियों ने दुख जताया। मुनव्वर के निधन से न सिर्फ उर्दू-साहित्य को नुकसान होगा, बल्कि अवधी-हिंदी भाषा को भी गहरा धक्का लगेगा। विश्व पटल पर उन्हें अवधी का खूब प्रचार-प्रसार किया। उर्दू शायरी में नया प्रयोग करके उन्होंने देसी भाषाओं को अपनी जुबान बनाई थी। राणा की कही प्रत्येक शायरी-कविता में ऐसी तल्खियां होती थीं, जो सियासतदानों को हमेशा नागवार गुजरी। उनकी प्रस्तुति में झलकता अलहदापन सुनने वालों को अपनी ओर खींचता था। मुनव्वर राना का जन्म बेशक उत्तर प्रदेश में हुआ, लेकिन ज्यादा वक्त उन्होंने कोलकाता में ही बिताया। वहां उनके वालिद का छोटा-मोटा कारोबार था। बचपन में वह बेहद शरारती व नटखट रहे। पारिवारिक सदस्य उन्हें ह्यमोटूह्ल कहते थे, क्योंकि वह शुरू से ही शारीरिक रूप से हट्टे-कट्टे थे। पहलवानी का भी शौक था जिसका हुनर उन्होंने मदरसे में तालीम लेने के दौरान टीचर को पटक कर दिखाया था। गलती पर टीचर ने डांटा तो उन्हें चित कर दिया, उसके बाद राणा को उनके वालिद ने खूब पीटा, तभी से उन्होंने पहलवानी का शौक त्याग दिया। राणा का इंतजार पहलवानी का अखाड़ा नहीं, बल्कि साहित्य जगत कर रहा था। कविताओं ने ही उनको ह्यमोटू से मुनव्वर राणा स्थापित किया। ये नाम उर्दू-साहित्य में सदैव अदब-सम्मान से लिया जाता रहेगा। साहित्य के अलावा अन्य सामाजिक मसलों पर उनकी बेबाक टिप्पणियां भी जगजाहिर रहीं। शायरी में शोहरत प्राप्ति की जहां तक बात है, तो मुनव्वर को सबसे ज्यादा प्रसिद्धि 'मां' के स्नेह और रिश्तों पर उकेरी कविताओं से ही मिली। मां की ममता को दशार्ने वाली कविता की एक लाइन हमेशा सभी के दिलों में जिंदा रहेगी। 'किसी को घर मिला हिस्से में या कोई दुकां आई, मैं घर में सबसे छोटा था मेरे हिस्से में मां आई...।' इन लाइनों में भावुकता और मार्मिकता का ऐसा संगम समाहित है जिसे सुनकर रूहें कांप उठती हैं। एक वक्त था जब शायरी के लिए सजने वाली कोई ऐसी महफिल नहीं होती थी जिसे वह अपनी शायरी से न लूटते हों? जहां उनकी मौजूदगी होती थी, तो वहां दूसरे शायर जाने से भी कतराते थे। महफिलों के अनगिनत किस्से हैं जो उनसे जुड़े हुए हैं। हैदराबाद के एक मुशायरे में अपने कलामों के बारे में एक दफे कहा था कि 'वह गजल को कोठे से उठाकर मां तक ले आए हैं।' वह एक ऐसा संदेश था जिसने सीधे राजनीति पर प्रहार किया था। वहीं, दुबई एक मुशायरे में जब उन्होंने एक मां पर लिखी शायरी की एक लाइन पढ़ी, तो वहां बैठे दूतावास के एक बड़े अधिकारी बिलख-बिलख कर रोने लगे। उन्होंने तुरंत अपनी मां को फोन लगाया, और मांफी मांगी। बाद में पता चला उस अधिकारी की मां से कुछ दिनों से अनबन चल रही थी। उनकी शायरी में ऐसी ही ताकत थी कि बिछड़ों को भी एक करने का मादा रखती हैं। राणा बेबाक राजनीतिक बयानबाजी को लेकर बीते कुछ वर्षों से ज्यादा चचाओं में थे। उन्होंने योगी आदित्यनाथ के दोबारा जीतने पर लखनऊ से पलायन करने की भी बात कह दी थी। इसके अलावा उन्हें वर्ष 2014 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया था जिसे बाद में उन्होंने लौटा दिया था। तब से वह कुछ ज्यादा ही सियासतदानों के निशाने पर आ गए।

'जनवरी अच्छी लगी'

बेहद अजीम और अजीज शायर मुनव्वर राणा तहजीबी शहर लखनऊ की सरजमीं पर सोमवार को सुपुर्द-ए-खाक कर दिए गए। रविवार देररात दिल का दौरा पड़ने से राणा ने इसी शहर में फानी दुनिया को अलविदा कहा। मुशायरों की महफिल को लूटने वाले मुनव्वर उर्दू को ही नहीं उसकी बहन हिन्दी को भी गहरी उदासी के समंदर में डुबो गए। मुशायरों और दीगर महफिलों में भी मुनव्वर राणा से मां पर केंद्रित उनकी गजलों को हजारों बार सुनाया गया। 71 वर्षीय राणा के चाहने वाले सदमे में हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुनव्वर राणा के निधन पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में जन्मे मुनव्वर राणा ने उर्दू साहित्य में समृद्ध योगदान दिया है। प्रधानमंत्री ने एक्स हैंडल पर कहा, श्री मुनव्वर राणा जी के निधन से दुख हुआ। उन्होंने उर्दू साहित्य और काव्य में समृद्ध योगदान दिया। उनके परिवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं हैं। उनकी आत्मा को शांति मिले। मुनव्वर राणा ने अपनी शायरी, गजल, नज्म और कविताओं से हर किसी के दिल को छुआ है। उन्होंने मां और पुत्र के पवित्र रिश्ते, मां के प्रेम और करुणा के अहसास को अपनी रचनाओं के जरिये बयां किया है। इस फनकार के न रहने पर उनकी गजल की यह चंद पंक्तियां जेहन में उभर आईं- दुख भी ला सकती है लेकिन जनवरी अच्छी लगी/जिस तरह बच्चों को जलती फुलझड़ी अच्छी लगी/रो रहे थे सब, तो मैं भी फूटकर रोने लगा/मुझको अपनी मां की, मैली ओढ़नी अच्छी लगी। यह वो पंक्तियां हैं, जिन्होंने मुनव्वर को रातों-रात देश-दुनिया में शोहरत प्रदान की। यह भी इत्तेफाक है कि 2024 में जनवरी आई और एक अजीम शख्सियत दुनिया से उठ गया। लेकिन यह जनवरी मुनव्वर की उस ख्वाहिश को पूरा कर गई, जो उन्होंने अपनी मां की मौत पर भरभराई आवाज में कहा था- मेरी ख्वाहिश है कि मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊं/ मां से इस तरह से लिपट जाऊं की बच्चा हो जाऊं।

Printed and Published by Fahim Akhtar on behalf of MAA MEDIA VENTURE and Printed at SHIVA SAI PUBLICATION PVT.LTD, Ratu, Kathitand, Near Tender Bagicha, H.P. Petrol Pump P.O.+P.S.- Ratu, Dist.-Ranchi, 835222, Jharkhand And Published at Roshpa Tower, 5th Floor, Main Road, Ranchi, Jharkhand-834001. R.N.I Number - JHABIL/2022/85899 Editor- Fahim Akhtar. E-mail : thephotonnewsjharkhand@gmail.com

कोरोना व यूक्रेन युद्ध ने दुनिया को पहुंचाया आर्थिक मंदी की कगार पर

-वैश्विक अर्थव्यवस्था पर आई रिपोर्ट ने बजाई खतरे की घंटी, मुंह बांए खड़ी हैं चुनौती

नई दिल्ली ।

कोरोना व यूक्रेन युद्ध ने दुनिया को आर्थिक मंदी की कगार पर पहुंचा दिया है। अगले 2030 तक दुनिया की आर्थिक मंदी सबसे निचले स्तर पर पहुंचने वाली है। वैश्विक अर्थव्यवस्था पर आई रिपोर्ट पूरी दुनिया के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकती है। क्योंकि, इसमें कहा गया है कि वैश्विक आर्थिक मंदी तीन दशकों में सबसे बुरे दौर की ओर है। सोमवार को जारी एक रिपोर्ट में बताया गया कि मौजूदा आर्थिक तथा भू-राजनीतिक झटकों के बीच वैश्विक आर्थिक वृद्धि के 2030 तक तीन दशकों में उसके सबसे नीचले स्तर पर गिरने का अनुमान है। विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) की जारी रिपोर्ट में मुख्य अर्थशास्त्रियों के एक सर्वेक्षण में 2024 में वैश्विक अर्थव्यवस्था के कमजोर होने और भू-आर्थिक विखंडन में तेजी आने का अनुमान लगाया गया है। विश्व नेताओं की अपनी वार्षिक बैठक से पहले दावोस में 'फ्यूचर ऑफ ग्रोथ' 2024 रिपोर्ट जारी करते हुए विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) ने कहा कि मंदी जलवायु संकट तथा कमजोर होते सामाजिक अनुबंध सहित कई परस्पर जुड़ी वैश्विक चुनौतियों को और बढ़ा रही है, जो संयुक्त रूप से वैश्विक वृद्धि में प्रगति को उलट रही हैं। हालों कि इस रिपोर्ट में आर्थिक वृद्धि के लिए एक नए दृष्टिकोण का आह्वान किया गया जो दीर्घकालिक स्थिरता तथा समानता, गति तथा गुणवत्ता की जांच के साथ दक्षता को संतुलित करेगी। इस संबंध में डब्ल्यूईएफ की प्रबंध निदेशक सादिया ज़ाहिदी ने कहा कि प्रमुख चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक वृद्धि बहाल करना जरूरी होगी। हालांकि इसके लिए केवल वृद्धि ही पर्याप्त नहीं होगी। डब्ल्यूईएफ की इस दो साल की पहल का मकसद आर्थिक वृद्धि के लिए एक नई राह तैयार करना, साथ ही संतुलित वृद्धि, नवाचार, समावेशन, स्थिरता आदि के सर्वोत्तम मार्गों की पहचान करने में अर्थशास्त्रियों तथा अन्य विशेषज्ञों के साथ मिलकर दुनिया भर के नीति निर्माताओं का समर्थन हासिल करना है। रिपोर्ट के अनुसार, अधिकतर देश ऐसे वृद्धि कर रहे हैं जो न तो टिकाऊ और न ही समावेशी हैं। रिपोर्ट में कहा गया है कि इन देशों की नवाचार करने या उसका लाभ उठाने की क्षमता सीमित हैं और वैश्विक झटकों से निपटने में उनके योगदान तथा संवेदनशीलता को कम करती है। मुख्य अर्थशास्त्रियों ने एक सर्वेक्षण में 2024 में वैश्विक अर्थव्यवस्था कमजोर होने का अनुमान लगाया है। रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक अर्थव्यवस्था तंग वित्तीय परिस्थितियों, भू-राजनीतिक दरारों और जनरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में तेजी से प्रगति से ग्रस्त है।

रिजर्व बैंक ने हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों के लिए सख्त नियमों का रखा प्रस्ताव

संशोधित नियम सार्वजनिक जमा स्वीकार करने या रखने वाली एचएफसी पर लागू होंगे

मुंबई ।

आरबीआई ने एक मसौदा परिपत्र जारी किया, जिसमें न्यूनतम पूंजी जरूरत और जमा लेने के नियमों जैसे कई क्षेत्रों में गैर-बैंकिंग वित्त कंपनियों (एनबीएफसी) के साथ आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) के नियमों को सुसंगत बनाने का प्रस्ताव है। आरबीआई ने कहा कि उसने जमा लेने वाली एचएफसी के लिए जमा निर्देशों, हेजिंग उद्देश्यों के लिए विभिन्न डेरिवेटिव उत्पादों में एचएफसी की भागीदारी, अन्य वित्तीय उत्पादों में विविधीकरण और खाता एग्रीगेटर पारिस्थितिकी तंत्र के तहत तकनीकी विशिष्टताओं को अपनाने की समीक्षा की है।मसौदा परिपत्र में एनबीएफसी के साथ एचएफसी नियमों के और अधिक सामंजस्य के हिस्से के रूप में जमा स्वीकार करने वाली एनबीएफसी के लिए कुछ निर्देशों की समीक्षा करने का प्रस्ताव है। मसौदा परिपत्र आगे चलकर एचएफसी के लिए और अधिक कड़े नियमों का प्रावधान करता है। इस समय एचएफसी एनबीएफसी की तुलना में जमा स्वीकृति पर आसान विवेकपूर्ण मापदंडों के अधीन हैं। आरबीआई ने कहा कि चूंकि जमा स्वीकृति से जुड़ी नियामकीय चिंताएं एनबीएफसी की सभी श्रेणियों में समान हैं, इसलिए एचएफसी को जमा स्वीकार करने पर नियामक व्यवस्था की ओर ले जाने का निर्णय लिया गया है, जो जमा लेने वाली एनबीएफसी पर लागू होती है। संशोधित नियम सार्वजनिक जमा स्वीकार करने या रखने वाली एचएफसी पर लागू होंगे। आरबीआई ने कहा कि योजना के अनुसार जमा लेने वाली एचएफसी को 30 सितंबर, 2024 तक तरल संपत्ति का प्रतिशत 14 प्रतिशत और 31 मार्च, 2025 तक 15 प्रतिशत तक ले जाना होगा। यह भी निर्णय लिया गया है कि नियमों के सामंजस्य के हित में एचएफसी के लिए तरल संपत्तियों की सुरक्षित हिरासत पर नियमों को एनबीएफसी के साथ जोड़ा जाएगा।

महिंद्रा और ऑन्टेरियो टीचर्स पेंशन प्लान बोर्ड ने इनविट पेश किया

शुरुआती पेशकश के तौर पर इन विट से 1,365 करोड़ की पूंजी जुटाई गई

नई दिल्ली ।

महिंद्रा समूह और वैश्विक संस्थागत निवेशक ऑन्टेरियो टीचर्स पेंशन प्लान बोर्ड ने भारत में अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में 1.54 गीगावॉट क्षमता की परिसंपत्तियों वाले इन्फ्रास्ट्रक्चर निवेश ट्रस्ट (इनविट) को सह-प्रायोजित किया है। महिंद्रा समूह ने कहा कि इनविट सस्टेनेबिलिटी एनर्जी इन्फ्रा ट्रस्ट (एसईआईटी) अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में भारत का सबसे बड़ा इनविट है और शुरुआती पेशकश के तौर पर इससे 1,365 करोड़ रुपये की पूंजी जुटाई गई। कई वैश्विक और भारतीय निवेशकों (एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक समेत) ने इस इनविट में निवेश किया है। एसईआईटी ने सोमवार को एनएसई पर अपनी शुरुआत की। एसईआईटी की स्थापना भारत में बड़े पैमाने पर नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिए की गई है। एसईआईटी की यूनिट बिक्री के लिए पेशकश के जरिये महिंद्रा सस्टेन को 897.9 करोड़ रुपये उपलब्ध होने से उसे आगामी अक्षय ऊर्जा परिसंपत्तियों के विकास में मदद मिलेगी। महिंद्रा सस्टेन और एसईआईटी ने अपनी विकास योजनाओं के तहत इनविट रेग्युलेशंस के अनुपालन में राइट ऑफ फर्स्ट ऑफर (आरओएफओ) समझौता किया है जिससे महिंद्रा सस्टेन द्वारा विकसित नवीकरणीय ऊर्जा संपत्तियों को एसईआईटी को बिक्री के लिए पेश किया जाएगा। महिंद्रा ग्रुप और ऑन्टेरियो टीचर्स, दोनों ने महिंद्रा सस्टेन और एसईआईटी में 3,050 करोड़ और 3,550 करोड़ रुपये तक का निवेश करने की प्रतिबद्धता जताई थी।

महिंद्रा ग्रुप के एक वे रिष्ठ अधिकारी ने कहा कि महिंद्रा सस्टेन ने अगले पांच साल में पांच गुना वृद्धि का लक्ष्य हासिल करने की योजना बनाई है और वह समूह तथा देश के हरित ऊर्जा लक्ष्यों, दोनों में अपना योगदान बरकरार रखेगी।

वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही में रिलायंस की आय बढ़ने का अनुमान

- कंपनी का समेकित राजस्व बढ़कर हो सकता है 2.521 लाख करोड़

नई दिल्ली ।

रिलायंस इंडस्ट्रीज (आरआईएल) के उपभोक्ता कारोबार के दिसंबर तिमाही वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही में आय बढ़ सकती है।

विश्लेषकों ने अनुमान जताया है कि ऊर्जा कारोबार में पिछली तिमाही के मुकाबले नरमी देखी जा सकती है। लेकिन उपभोक्ता कारोबार, खास तौर पर खुदरा क्षेत्र में चमक दिखने का अनुमान है। एक सर्वेक्षण में नौ विश्लेषकों ने वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही में कंपनी का समेकित राजस्व 2.521 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान जताया है और सात विश्लेषकों ने अनुमान लगाया है कि इस दौरान 18,497 करोड़ रुपये की समायोजित शुद्ध आय होगी।

आरआईएल शुक्रवार को वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही के अपने वित्तीय प्रदर्शन की रिपोर्ट पेश करेगी। आरआईएल की सितंबर-23 तिमाही की आय को उसके ऊर्जा कारोबार के बेहतर प्रदर्शन से बढ़ावा मिला था, जिसमें उसके तेल से लेकर रसायन तक (ओ2सी) तथा तेल और गैस खंड शामिल थे। विश्लेषकों को उम्मीद है कि यह प्रवृत्ति उलट जाएगी, क्योंकि ओ2सी कारोबार तिमाही आधार पर नरमी झेल रहा है। आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज के विश्लेषकों का कहना है कि आरआईएल अपने ओ2सी खंड की कमाई में भारी गिरावट देख सकती है। सकल रिफाइनिंग मार्जिन (जीआरएम) में अनुमानित रूप से प्रति बैरल 1.6 डॉलर की गिरावट के साथ-साथ इसकी रिफाइनरी बंद होने और पेट्रोकेमिकल प्रसार में कमी की वजह से कम आमदनी देखने को मिल सकती है। पिछले साल की तुलना में वित्त वर्ष 24 की तीसरी तिमाही के दौरान आरआईएल के खंड वार प्रदर्शन में समान रुख दिखने की उम्मीद है।

आईटी फर्मों का मुनाफा और शेयर मूल्यांकन में अंतर बढ़ा

नई दिल्ली ।

निफ्टी आईटी सूचकांक बीते शुक्रवार को 5.14 फीसदी चढ़ा था, जो जुलाई 2020 के बाद सूचकांक में आई एक दिन में आई सबसे बड़ी तेजी है। इसके बाद सोमवार को लगातार दूसरे सत्र में आईटी सूचकांक 1.9 फीसदी और उछल गया। इससे देश की शीर्ष 10 आईटी कंपनियों की शेयर कीमतों का आकलन करने वाला सूचकांक बीते दो सत्र में 7.1 फीसदी चढ़ गया। आईटी सूचकांक में सबसे बड़ी तेजी ऐसे समय में आई है जब देश की चार शीर्ष आईटी कंपनियों के तिमाही नतीजे पांच साल में सबसे कमजोर रहे हैं। इसकी तुलना में शीर्ष चार आईटी फर्मों के सालाना आधार पर कुल तिमाही मुनाफे में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) के 2005 में सूचीबद्ध होने के बाद से केवल तीन बार गिरावट आई है। इससे आईटी कंपनियों के शेयरों के मूल्यांकन और उनके वित्तीय प्रदर्शन के बीच बड़ा अंतर आ गया है। आंकड़ों से दीर्घावधि में शीर्ष चार फर्मों की आय वृद्धि और एबिटा मार्जिन में गिरावट का पता चलता है। इसकी तुलना में हाल के वर्षों में इन कंपनियों के प्राइस टू अर्निंग गुणक में इजाफा हुआ है।

चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में टीसीएस, इन्फोसिस, विप्रो और एचसीएल टेक्नोलॉजीज के कुल शुद्ध मुनाफे में सालाना आधार पर 1.5 फीसदी की गिरावट आई, जो जनवरी-मार्च 2018 तिमाही के बाद सबसे खराब प्रदर्शन है। उस दौरान इनकी कुल कमाई में सालाना आधार पर 2.1 फीसदी की गिरावट आई थी। इसमें मार्च 2015 की तिमाही शामिल नहीं है जब अपने कर्मचारियों को एकमुश्त विशेष बोनस देने के कारण टीसीएस का शुद्ध मुनाफा 30.7 फीसदी घटा था। एनएसई आईटी सूचकांक में शामिल कुल 10 कंपनियों की बाजार पूंजीकरण में इन चार शीर्ष आईटी कंपनियों की हिस्सेदारी करीब 84 फीसदी है। इसी तरह चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में शीर्ष चार आईटी फर्मों की शुद्ध आय सालाना आधार पर 2.4 फीसदी बढ़ी, जो जून 2015 तिमाही के बाद सबसे कम है।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र का मुनाफा बढ़कर 1,036 करोड़ रहा

नई दिल्ली । चालू वित्त वर्ष 2023-24 की तीसरी (अक्टूबर-दिसंबर) तिमाही में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ऑफ महाराष्ट्र (बीओएम) का मुनाफा 34 प्रतिशत बढ़कर 1,036 करोड़ रुपए रहा। बैंक का पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में मुनाफा 775 करोड़ रुपये रहा था। बीओएम ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि समीक्षाधीन तिमाही में उसकी कुल आय बढ़कर 5,851 करोड़ रुपए हो गई, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 4,770 करोड़ रुपए थी। इस दौरान बैंक ने 5,171 करोड़ रुपए की ब्याज आय अर्जित की, जबकि 2022-23 की इसी अवधि में यह 4,129 करोड़ रुपए थी। बैंक सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) को एक साल पहले के 2.94 प्रतिशत से घटाकर सकल ऋण का 2.04 प्रतिशत करने में सक्षम रहा। इसी तरह एनपीए या डूबा कर्ज पिछले वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही के अंत में 0.47 प्रतिशत से घटकर 0.22 प्रतिशत पर आ गया।

जनवरी-अक्टूबर 2023 में चाय का निर्यात घटा

कोलकाता ।

वित्त वर्ष 2023 जनवरी-अक्टूबर में देश से चाय का निर्यात 1.65 प्रतिशत घटकर 18.269 करोड़ किलोग्राम रह गया, जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में यह 18.575 करोड़ किलोग्राम था। टी बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार` वित्त वर्ष 2023 के पहले 10 महीनों में उत्तर भारत से निर्यात सालाना आधार पर 4.62 प्रतिशत की गिरावट के साथ 11.033 करोड़ किलोग्राम रहा। इसी तरह जनवरी से अक्टूबर 2023 के दौरान दक्षिण भारत से निर्यात 3.25 प्रतिशत बढ़कर 7.236 करोड़ किलोग्राम हो गया, जो 2022 की समान अवधि में यह 7.008 करोड़ किलोग्राम था। वित्त वर्ष 2022 में चाय का निर्यात सालाना आधार पर 17.57 प्रतिशत बढ़कर 23.108 करोड़ किलोग्राम था। 2021 में निर्यात 19.654 करोड़ किलोग्राम रहा था। चाय उद्योग के सूत्रों ने बताया निर्यात परिदृश्य गंभीर बना हुआ है क्योंकि ईरान के साथ भुगतान की समस्या के कारण वहां होने वाला निर्यात खतरे में है। ईरान परंपरागत रूप से भारत के चाय निर्यात का 20 प्रतिशत आयात करता है, लेकिन वह अब करीब शून्य हो गया है। सूत्रों के मुताबिक ऐसी स्थिति में संयुक्त अरब अमीरात जैसे नए बाजारों की पहचान करने का प्रयास किया जा रहा है जो सीआईएस ब्लॉक के बाद पहले से ही दूसरा सबसे बड़ा आयातक बन गया है।

तीन घंटे से अधिक देरी वाली उड़ानें रद्द कर सकेंगी एयरलाइंस: डीजीसीए

नई दिल्ली । नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने विमान सेवा कंपनियों को उन उड़ानों को रद्द करने की अनुमति दे दी, जिनमें तीन घंटे से अधिक की देरी होने की संभावना है। एक अधिकारी ने बताया कि विमानन नियामक ने नई मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) भी जारी की है। एसओपी में कहा गया हैं कि बोर्डिंग से इनकार, उड़ान रद्द होने और उड़ान में देरी के कारण यात्रियों को एयरलाइंस द्वारा सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। एसओपी एक रूपरेखा तैयार करती है जो एयरलाइनों को विस्तारित देरी के दौरान यात्रियों को होने वाली असुविधा को कम करने के लिए विशिष्ट उपायों का पालन करने के लिए बाध्य करती है, खासकर प्रतिकूल मौसम की स्थिति को देखते हुए। एसओपी के प्रमुख प्रावधानों में से एक यह है कि एयरलाइंस को सभी उड़ान टिकटों पर सीएआर (सिविल एविएशन रिक्वायरमेंट्स) के संदर्भ को प्रमुखता से प्रदर्शित करना होगा। यह सुनिश्चित करता है कि यात्रियों को उनके अधिकारों और उड़ान रद्द होने या देरी की स्थिति में अपनाई जाने वाली प्रक्रियाओं के बारे में जागरूक किया जाए। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पिछले दो दिनों में भारी व्यवधान का सामना करना पड़ा है, लगभग 600 उड़ानों में देरी हुई है, और घने कोहरे और खराब दृश्यता के कारण 76 उड़ानें रद्द कर दी गई हैं। इससे देश के हवाईअड्डों पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। सूत्रों के अनुसार अव्यवस्था का मुख्य कारण हवाईअड्डे के रनवे की सीमित परिचालन क्षमता है।भारतीय मौसम विभाग ने सोमवार को कहा कि अगले तीन दिनों के दौरान पूरे उत्तर भारत में घने से बहुत घना कोहरा और उसके बाद घना कोहरा छाए रहने की संभावना है।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 199 , निफ्टी 65 अंक नीचे आया

मुम्बई ।

घरेलू शेयर बाजार मंगलवार को गिरावट पर बंद हुआ। इसी के साथ ही पिछले पांच सत्रों से जारी तेजी पर रोक लग गयी। सप्ताह के दूसरे ही कारोबारी दिन दुनिया भर के बाजारों से मिले कमजोर संकेतों के बीच ही दिग्गज कंपनियों रिलायंस इंडस्ट्रीज , इंफोसिस, टीसीएस और एचसीएल टेक के शेयरों में हुई मुनाफावसूली से बाजार टूटा है।

दिन भर के कारोबार के बाद तीस शेयरों पर आधारित बीएसई बीएसई सेंसेक्स 199.17 अंक करीब 0.27 फीसदी नीचे आकर 73,128.77 के स्तर पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार पचास शेयरों वाला नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 65.15 अंक तकरीबन 0.29 फीसदी गिरावट के साथ ही 22,032.30 अंक पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान यह 21,969.80 अंक के स्तर तक नीचे आया। आज कारोबार में सेंसेक्स की कंपनियों में से टाटा स्टील का शेयर सबसे ज्यादा 1.70 फीसदी ऊपर आया। इसके साथ ही टाइटन, मारुति, आईटीसी, टाटा मोटर्स, एलएंडटी, एशियन पेंट्स, एचडीएफसी और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर बढ़े हैं।

वहीं दूसरी ओर एचसीएल टेक का शेयर सबसे ज्यादा 2.05 फीसदी नीचे आया। इसके अलावा विप्रो, एनटीपीसी, रिलायंस, इनफ़ोसिस, टेक महिंद्रा, टक्स, महिंद्रा एंड महिंद्रा, Axis बैंक, आईसीआईसीआई बैंक सहित बजाज फाइनेंस के शेयर टूटे हैं।

बीएसई मिडकैप इंडेक्स ट्रेडिंग सत्र के दौरान 38,302.4 के अपने नए रिकॉर्ड लेवल पर पहुंच गया पर अंत में 0.31 फीसदी की गिरावट के साथ 38,009.80 पर बंद हुआ। बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स भी 0.43 फीसदी टूटकर 44,361.39 पर बंद हुआ।

वहीं रिपोर्ट एशियाई शेयर एक महीने के निचले स्तर पर पहुंच गए है जबकि अमेरिकी स्टॉक में गिरावट दर्ज की गई, इससे भी घरेलू बाजार पर दबाव आया है। वहीं मुनाफावसूली के कारण आईटी शेयर नीचे आये और विप्रो, टीसीएस, इनफ़ोसिस समेत एचसीएल टेक के शेयर नुकसान के साथ ही नीचे आये हैं जबकि एशियाई बाजारों में सियोल, टोक्यो और हांगकांग निचले स्तर पर बंद हुए जबकि शंघाई बढ़त पर बंद हुआ। यूरोपीय बाज़ार गिरावट के साथ कारोबार कर रहे थे।

इससे पहले आज सुबह ऐ शियाई बाजारों में कमजोरी की वजह से घरेलू शेयर बाजार गिरावट के साथ खुले। बीएसई सेंसेक्स 130 अंक गिरकर 73,208 पर और एनएसई निफ्टी 50 23 अंक फिसलकर 22,074 पर आ गया। जेएसडब्ल्यू स्टील, टाटा स्टील, बजाज फाइनेंस, एचडीएफसी बैंक, एशिया पेंट्स और टाटा मोटर्स ने सेंसेक्स पर बढ़त हासिल की, जबकि बीपीसीएल और हिंडाल्को निफ्टी में शीर्ष पर रहे। दूसरी ओर एचसीएलटेक, विप्रो, टेक एम, एनटीपीसी, टीसीएस और इंफोसिस के शेयर प्रमुख रूप से लाभ में कारोबार कर रहे थे।

जियो फाइनेंशियल का मुनाफा घटकर 294 करोड़ रहा

नई दिल्ली । जियो फाइनेंशियल सर्विसेज का मुनाफा दिसंबर, 2023 को समाप्त तिमाही में पिछली तिमाही के मुकाबले 56 प्रतिशत घटकर 294 करोड़ रुपए रहा। जियो फाइनेंशियल सर्विसेज ने शेयर बाजार को दी सूचना में यह जानकारी दी। कंपनी का मुनाफा चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 668 करोड़ रुपए था। समीक्षाधीन तिमाही में कंपनी की आय भी कम होकर 414 करोड़ रुपए रही, जो सितंबर तिमाही में 1,294 करोड़ रुपए थी। रिलायंस इंडस्ट्रीज से अलग हुई जियो फाइनेंशियल सर्विसेज, निवेश और वित्तपोषण, बीमा ब्रोकिंग, भुगतान बैंक आदि कारोबार में लगी है। कंपनी और ब्लैकरॉक संपत्ति प्रबंधन उद्योग में प्रवेश करने के लिए एक संयुक्त उद्यम बनाने पर सहमत हुए हैं।

ज्योति सीएनसी का शेयर एनएसई पर 370 रुपए पर हुआ लिस्ट

मुंबई । शेयर बाजार में धीमी शुरुआत के साथ ज्यो ति सीएनसी का शेयर एनएसई पर 370 रुपए पर लिस्ट हुआ, जो 331 रुपए के इश्यू प्राइस की तुलना में 11.78 प्रतिशत ज्यादा है। इसके अलावा बीएसई पर भी ज्योति सीएनसी ऑटोमेशन का शेयर 372 रुपए प्रति शेयर पर लिस्ट, जो अपने इश्यू प्राइस के मुकाबले 12.39 प्रतिशत ज्यादा है। विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया कि ज्योति सीएनसी ऑटोमेशन का शेयर 360 और 380 रूपए प्रति शेयर के बीच होगा। उन्होंने कहा कि ज्योति सीएनसी आईपीओ लिस्टिंग से 15 प्रतिशत तक का लिस्टिंग गेन हो सकता है। सब्सक्रिप्शन के तीसरे दिन ज्योति सीएनसी ऑटोमेशन के आईपीओ को 38.53 गुना सब्सक्राइब किया गया था। कंपनी के इश्यू को तीनों दिन रिटेल और नान-इंस्टीटयूशनल इंवेस्टर्स से कुल मिलाकर अच्छी प्रतिक्रिया मिली। ज्योति सीएनसी ऑटोमेशन के आईपीओ को दूसरे दिन 3.92 गुना और पहले दिन 2.52 गुना बुक किया गया था। पहले 30 मिनट के भीतर ज्योति सीएनसी आईपीओ का खुदरा हिस्सा पूरी तरह से बुक हो गया था। दिलचस्प बात यह है कि ज्योति सीएनसी ज्यो ति ऑटोमेशन आईपीओ स्टॉक एक्सचेंजों पर लिस्ट होने वाला साल 2024 का पहला आईपीओ होगा।

टीसीएस सभी कमर्चारियों को जेनेरेटिव एआई कौशल का प्रशिक्षण देगी

मुंबई ।

देश की प्रमुख सॉफ्टवेयर निर्यातक कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) अपने पांच लाख से अधिक सॉफ्टवेयर इंजीनियरों के कार्यबल को जेनेरेटिव आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के आगामी अवसरों के लिए प्रशिक्षण प्रदान करेगी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। कंपनी द्वारा हाल ही में गठित एआई क्लाउड इकाई के एक प्रमुख अधिकारी ने बताया कि एक व्यावसायिक अवसर के रूप में जेनेरेटिव एआई अभी अपने शुरुआती दौर में है और इसका उपयोग अभी कम हो रहा है। उन्होंने बताया कि कंपनी ग्राहकों के लिए जारी काम में तेजी लाने के लिए जेन एआई से प्राप्त जानकारी का इस्तेमाल कर रही है। कंपनी ने कुछ महीने पहले 250 जेनरेटिव एआई संचालित परियोजनाओं में शामिल होने की भी घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि अभी शायद इसका इस्तेमाल कम हो रहा है। यह बड़े बदलाव से पहले का दौर है। हम पूरक संपत्तियों और वृद्धि के बारे में भी बात करते हैं। क्या इसके लिए कोई समयसीमा है, मुझे लगता है कि अभी इंतजार करें और देखें। आने वाली तिमाहियों में इसके सही परिणाम सामने आएंगे। उन्होंने कहा कि कार्यबल तैयार हो रहा है। आने वाले समय में पूरा संगठन स्वयं (जेन) एआई के लिए तैयार होगा। उन्होंने कहा कि मौजूदा प्रगति को देखते हुए करीब सात महीने में 1.50 लाख से अधिक कर्मचारी प्रशिक्षित हो जाएंगे।

सरकार ने कच्चे तेल पर अप्रत्याशित लाभ कर घटाया

नई दिल्ली । केंद्र सरकार ने देश में उत्पादित कच्चे तेल पर अप्रत्याशित लाभ कर को 2,300 रुपए प्रति टन से घटाकर मंगलवार को 1,700 रुपए प्रति टन कर दिया है। यह कर घरेलू स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल पर विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (एसएईडी) के रूप में लगाया जाता है। आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार डीजल, पेट्रोल और विमान ईंधन या एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) के निर्यात पर एसएईडी को शून्य पर बरकरार रखा गया है। नई दरें मंगलवार 16 जनवरी से प्रभावी हो गईं। भारत ने पहली बार एक जुलाई 2022 को अप्रत्याशित लाभ कर लगाया था। इसके साथ ही भारत ऊर्जा कंपनियों के असाधारण मुनाफे पर कर लगाने वाले देशों की सूची में शामिल हो गया था। तेल की दो सप्ताह की औसत कीमतों के आधार पर हर पखवाड़े कर दरों की समीक्षा की जाती है।

क्रांतिकारी संत थे गुरु गोविंद सिंह

इतिहास में गुरु गोविंद सिंह एक विलक्षण क्रांतिकारी संत व्यक्तित्व है। गुरु गोविंद सिंह जी सिखों के दसवें गुरु हैं। गुरु नानक देव की ज्योति इनमें प्रकाशित हुई, इसलिए इन्हें दसवीं ज्योति भी कहा जाता है। बिहार राज्य की राजधानी पटना में गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म हुआ था। सिख धर्म के नौवें गुरु तेग बहादुर साहब की इकलौती संतान के रूप में जन्मे गोविंद सिंह की माता का नाम गुजरी था।

श्री गुरु तेग बहादुर सिंह ने गुरु गद्दी पर बैठने के पश्चात आनंदपुर में एक नए नगर का निर्माण किया और उसके बाद वे भारत की यात्रा पर निकल पड़े। जिस तरह गुरु नानक देव ने सारे देश का भ्रमण किया था, उसी तरह गुरु तेग बहादुर को भी आसाम जाना पड़ा।

इस दौरान उन्होंने जगह-जगह सिख संगत स्थापित कर दी। गुरु तेग बहादुर जी जब अमृतसर से आठ सौ किलोमीटर दूर गंगा नदी के तट पर बसे शहर पटना पहुंचे तो सिख संगत ने अपना अथाह प्यार प्रकट करते हुए उनसे विनती की कि वे लंबे समय तक पटना में रहें। ऐसे समय में नवम् गुरु अपने परिवार को वहीं छोड़कर बंगाल होते हुए आसाम की ओर चले गए।

पटना में वे अपनी माता नानकी, पत्नी गुजरी तथा कृपालचंद अपने साले साहब को छोड़ गए थे। पटना की संगत ने गुरु परिवार को रहने के लिए एक सुंदर भवन का निर्माण करवाया, जहां गुरु गोविंद सिंह का जन्म हुआ। तब गुरु तेग बहादुर को आसाम सूचना भेजकर पुत्र प्राप्ति की बधाई दी गई।

पंजाब में जब गुरु तेग बहादुर के घर सुंदर और स्वस्थ बालक के जन्म की सूचना पहुंची तो सिख संगत ने उनके अगवानी की बहुत खुशी मनाई। उस समय करनाल के पास ही सिआणा गांव में एक मुसलमान संत फकीर भीखण शाह रहता था। उसने ईश्वर की इतनी भक्ति और निष्काम तपस्या की थी कि वह स्वयं परमात्मा का रूप लगने लगा।

पटना में जब गुरु गोविंद सिंह का जन्म हुआ उस समय भीखण शाह अपने गांव में समाधि में लिप्त बैठे थे। उसी अवस्था में उन्हें प्रकाश की एक नई किरण दिखाई दी जिसमें उसने एक नवजात जन्मे बालक का प्रतिबिंब भी देखा। भीखण शाह को यह समझते देर नहीं लगी कि दुनिया में कोई ईश्वर के प्रिय पीर का अवतरण हुआ है। यह और कोई नहीं गुरु गोविंद सिंह जी ही ईश्वर के अवतार थे। उन्होंने एक नारा दिया था %वाहे गुरु जी का खालसा, वाहे गुरु जी की फतेह%।

गुरु गोविंद सिंह एक महान कर्मप्रणेता, अद्वितीय धर्मरक्षक, ओजस्वी वीर रस के कवि के साथ ही संघर्षशील वीर योद्धा भी थे। उनमें भक्ति और शक्ति, ज्ञान और वैराग्य, मानव समाज का उत्थान और धर्म और राष्ट्र के नैतिक मूल्यों की रक्षा हेतु त्याग एवं बलिदान की मानसिकता से ओत-प्रोत अटूट निष्ठा तथा दृढ़ संकल्प की अद्भुत प्रधानता थी तभी स्वामी विवेकानंद ने गुरुजी के त्याग एवं बलिदान का विश्लेषण करने के पश्चात कहा है कि ऐसे ही व्यक्तित्व के आदर्श सदैव हमारे सामने रहना चाहिए।

गुरु गोविंद सिंह के 15 अनमोल वचन, बदल देंगे आपके जीने का नजरिया...

वर्ष 2024 में 17 जनवरी, बुधवार के दिन गुरु गोविंद सिंह जी की जयंती मनाई जा रही है। बिहार के पटना में जन्मे गुरु गोविंद सिंह जी सिखों के 10वें गुरु और खालसा पंथ के संस्थापक हैं। वे अपने जीवन में एकता, सत्य, प्रेम, मधुरता और सहनशीलता के लिए पहचाने जाते हैं। गुरु गोविंद सिंह जी का जन्म पौष सुदी सप्तमी को हुआ था। उनका वास्तविक नाम गोविंद राय रखा गया था।

आइए यहां गुरु गोविंद सिंह जी की जयंती के अवसर पर पढ़ें 15 अनमोल वचन

1. गोविंद सिंह जी कहते हैं जब आप अपने अंदर बैठे अहंकार को मिटा देंगे, तभी आपको वास्तविक शांति की प्राप्त होगी।
2. हे प्रभु, मुझे अपना आशीर्वाद प्रदान करें, ताकि मैं कभी भी अच्छे कर्मों को करने में जरा भी संकोच ना करूं।
3. इंसान को वैभव, सुख और स्थायी शांति तब ही प्राप्त होगी, जब कोई व्यक्ति अपने भीतर बैठे स्वार्थ को पूरी तरह से समाप्त कर देगा।
4. भगवान के नाम के अलावा आपका कोई भी सच्चा मित्र नहीं है। अतः सदा ईश्वर का स्मरण करें।
5. आप अपने द्वारा किए गए अच्छे कर्मों से ही ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं और ईश्वर भी हमेशा अच्छे कर्म करने वालों की सहायता करता है।
6. ईश्वर के सभी अनुयायी इसी का चिंतन करते हैं और इसी को देखते हैं।
7. अगर आप केवल अपने भविष्य के विषय में ही सोचते रहेंगे, तो अपने वर्तमान को भी खो देंगे।
8. भगवान ने सभी को जन्म इसीलिए दिया है ताकि हम इस संसार में अच्छे कार्य करके समाज में फैली बुराइयों को दूर करें।
9. किसी भी निर्बल व्यक्ति पर कभी अपनी तलवार चलाने के लिए उतावले मत होइए, वर्ना विधाता आप का ही खून बहाएगा।
10. गुरु गोविंद सिंह जी के अनुसार इंसान से प्रेम करना ही, ईश्वर की सच्ची आस्था और भक्ति है।
11. सच्चे गुरु की सेवा करते हुए ही आपको संपूर्ण शांति की प्राप्ति होगी तथा जन्म और मृत्यु के सभी कष्ट मिट जाएंगे।
12. ईश्वर ही स्वयं क्षमाकर्ता है।
13. इंसान का स्वार्थ ही अनेक अशुभ विचारों को जन्म देता है।
14. गोविंद सिंह जी कहते हैं अपनी जीविका चलाने के लिए ईमानदारीपूर्वक काम करें।
15. गुरु के बिना किसी को भी भगवान का नाम नहीं मिला है।

सिख धर्म में पंज प्यारे कौन होते हैं?

पंज को हिन्दी में पांच कहते हैं अर्थात 'पांच प्यारे।' सिख धर्म में पंज प्यारे कौन थे यह बहुत कम लोग नहीं जानते होंगे। जो नहीं जानते है उनके लिए जानना जरूरी है। कहते हैं कि 'पंज प्यारे' बहुत ही बहादुर पांच लोग होते हैं। आओ जानते हैं कि 'पंज प्यारे' कौन होते हैं।

पंच प्यारे खालसा पंथ से जुड़े हैं। कहते हैं कि गुरु गोविंद सिंह के समय मुगल बादशाह औरंगजेब का आतंक जारी था। उस दौर में देश और धर्म की रक्षार्थ सभी को संगठित किया जा रहा था। सिखों के गुरु तेग बहादुर सिंहजी की हत्या के बाद उनके बेटे गुरु गोविंद सिंहजी 10वें गुरु गुरु गद्दी पर बैठे।

एक बार गुरुजी ने धर्म की रक्षार्थ बलिदान देने के लिए 3 मार्च, 1699 को वैशाख के दिन केशगढ़ साहिब के पास आनंदपुर में एक सभा बुलाई। इस सभा में हजारों लोग इकट्ठा हुए। यह भी कहा जाता है कि इस दौरान दुर्गा का यज्ञ रखा गया था। उन्होंने लोगों को परखने के लिए एक लीला रची। वे इस सभा में अपने हाथ में एक नंगी तलवार लेकर पहुंचे और कहने लगे कि 'मुझे एक व्यक्ति का सिर चाहिए, जो देना चाहता हो वो आगे आएं।' यह भी कहा जाता है कि गुरुजी ने कहा था कि, देवी दुर्गा ने बलिदान मांगा है। क्या आप में से कोई ऐसा वीर है, जो देवी की प्रसन्नता के लिए अपना सिर दे सके?'

सभा में कुछ देर सन्नाटा छाया रहा। उन्होंने इस तरह तीन बार आह्वान किया कि क्या कोई है जो अपना सिर दे सके? तभी 30 वर्षीय लाहौर के निवासी भाई दयाराम खत्री उठे और वे गुरुजी के सामने शीश नवाकर खड़े हो गए। गुरुजी उसे अपने साथ तंबू के अंदर ले गए और खून से सनी तलवार लेकर बाहर निकले।

फिर से उन्होंने लोगों से कहा कि एक और बलिदान चाहिए। जो देना चाहता हो वह सामने आए। चुपचाप खड़ी भीड़ में से तभी 33 वर्षीय दिल्ली निवासी भाई धर्मसिंह जाट ने आगे आकर सिर झुका दिया। गुरुजी उसे भी अंदर ले गए और खून से सनी तलवार के साथ बाहर आए। सभी यह घटना देखकर स्तब्ध थे।

तीसरी बार गुरुजी ने आकर फिर कहा कि और कोई है जो बलिदान देने के लिए तैयार हो? अब की बार 36 वर्षीय मोखम या मोहकचंद धोबी आगे आए। गुरुजी उनको भी तंबू में ले गए और इस बार तंबू के बाहर रक्त की धार बहती दिखाई दी।

गुरुजी इस बार रक्त से पूर्णत- सनी हुई तलवार लेकर बाहर आए और फिर से वहीं मांग की। इस बार दोनों बार क्रम से 33 वर्षीय बीदर निवासी भाई साहबचंद नाई और 38 वर्षीय जगन्नाथ निवासी भाई हिम्मतराय कुम्हार ने अपना सिर गुरुजी के समक्ष खड़े होकर झुका दिया। दोनों की वही दशा हुई जो प्रथम तीन की हुई थी।

बलिदान के इस दृश्य को देखकर लोगों की भावनाएं उमड़ पड़ी और संपूर्ण जनसमूह गुरुजी से कहने लगा कि- 'हमारा सिर लीजिए, हमारा सिर लीजिए।'

फिर गुरुजी तंबू में गए और आखिर में वे उन पांचों को लेकर बाहर आए जिन्होंने सबसे पहले सिर देना स्वीकार किया था। उन पांचों ने सफेद पगड़ी और केसरिया रंग के कपड़े पहने हुए थे। यही पांच युवक उस दिन से 'पंच प्यारे' कहलाए।

तब गुरुदेव ने वहां उपस्थित सिक्खों से कहा, आज से ये पांचों मेरे पंच प्यारे हैं। इनकी निष्ठा और समर्पण से खालसा पंथ का आज जन्म हुआ है। आज से यही तुम्हारे लिए शक्ति का संवाहक बनेंगे। यही ध्यान, धर्म, हिम्मत, मोक्ष और साहिब का प्रतीक भी बने।

तभी तो गुरु गोविंद सिंह ने कहा 'सवा लाख से एक लड़ाऊं, चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं- तब गोविंद सिंह नाम कहाऊं।'

इन पंच प्यारों को गुरुजी ने अमृत (अमृत यानि पवित्र जल जो सिख धर्म धारण करने के लिए लिया जाता है) चखाया। इसके बाद इसे बाकी सभी लोगों को भी पिलाया गया। इस सभा में हर जाती और संप्रदाय के लोग मौजूद थे। सभी ने अमृत चखा और खालसा पंथ के सदस्य बन गए।

बैसाखी के दिन हुई थी खालसा पंथ की स्थापना, जानिए 5 खास बातें

13 अप्रैल 1699 को दसवें गुरु गोविंदसिंहजी ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। उस समय बैसाखी का पर्व भी था। यानी बैसाखी के दिन उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की थी। पंजाब और हरियाणा के किसान सर्दियों की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियां मनाते हैं। यह रबी की फसल के पकने की खुशी का प्रतीक है। बैसाखी नाम वैशाख मास से पड़ा है क्योंकि यह त्योहार इसी माह में आता है।

1. सिख धर्म के लोग इस त्योहार को सामूहिक जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं। दसवें गुरु जी ने धर्म, समाज और देखा की रक्षार्थ 1699 ई. में खालसा पंथ की स्थापना की।
2. पंच प्यारे खालसा पंथ से जुड़े हैं। कहते हैं कि गुरु गोविंद सिंह के समय मुगल बादशाह औरंगजेब का आतंक जारी था। तब उन्होंने इन पंच प्यारों को गुरुजी ने अमृत (अमृत यानि पवित्र जल जो सिख धर्म धारण करने के लिए लिया जाता है) चखाया। इसके बाद इसे बाकी सभी लोगों को भी पिलाया गया। इस सभा में हर जाती और संप्रदाय के लोग मौजूद थे। सभी ने अमृत चखा और खालसा पंथ के सदस्य बन गए।
3. बाबा बुड्ढा ने गुरु हरगोविंद को 'मीरी' और 'पीरी' दो तलवारें पहनाई थीं। युद्ध की दृष्टि से गुरुजी ने केसगढ़, फतेहगढ़, होलगढ़, अनंदगढ़ और लोहगढ़ के किले बनवाएं। पौंटा साहिब आपकी साहित्यिक गतिविधियों का स्थान था। कहते हैं कि उन्होंने मुगलों या उनके सहयोगियों के साथ लगभग 14 युद्ध लड़े थे। इसीलिए उन्हें 'संत सिपाही' भी कहा जाता था। वे भक्ति तथा शक्ति के अद्वितीय संगम थे।
4. पंच प्यारे का नाम-
   1. भाई दया सिंह
   2. भाई धर्म सिंह
   3. भाई हिम्मत सिंह
   4. भाई मुखाम सिंह
5. बैसाखी का पर्व मुख्य रूप से या तो किसी गुरुद्वारे या फिर किसी खुले क्षेत्र में मनाया जाता है, जिसमें लोग भांगड़ा और गिद्दा नृत्य करते हैं। अंत में लोग लंगर चखते हैं।

चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं, तबै गोबिंदसिंघ नाम कहाऊं

दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंदसिंघ जी का जनम पोह माह की सप्तमी संवत् 1723 को पटना शहर में हुआ। वे नवम् गुरु तेगबहादर व माता गुजरी की इकलौती संतान हैं। बचपन में ही उन्हें अपने पिता से दूर रहना पड़ा किंतु उनकी शिक्षा-दीक्षा विधिवत चलती रही। उन्होंने संस्कृत, हिंदी, फारसी, गुरमुखी आदि सीखने के साथ इतिहास आदि विषयों का गहन अध्ययन किया। तलवार-बंदूक सहित अनेक शस्त्र चलाने व घुड़सवारी में भी उन्होंने निपुणता हासिल की। गुरु गोबिंदसिंघ महाराज बाल्यावस्था से अधर्म के विरुद्ध अपने मित्रों में जोश व उत्साह भरते थे। बचपन में अपने मित्रों की दो टोलियां बांटकर झूठ-मूठ की लड़ाईयां करना उनका प्रिय खेल था। युवावस्था में उन्होंने अधर्म के लिए अनेक लड़ाईयां लड़ी तथा वे अपने सामान्य शिष्यों में भी वही जोश भरते थे कि समय आने पर दुश्मन की सेना को हिलाकर रख देते थे। उनकी युद्ध सेना में नाई, ब्राम्हण, क्षूद्र, लोहार, जाट, कुम्हार, झीवर, चमार, ग्वाल, सुनार, बनिया आदि 36 जातियों के लोग शामिल थे। उनकी वीरता के अनेक प्रसंग इतिहास में उल्लेखित हैं और उन स्थानों पर उनकी याद में अनेक गुरुद्वारे आज भी सुशोभित हैं।

हरियाणा राज्य स्थित अंबाला शहर में जिस स्थान पर आज प्रसिद्ध गुरुद्वारा बादशाही बाग पा. 10 वीं है वहां श्री गुरु गोबिंदसिंघजी महाराज फाल्गुन माह की पूरनमासी को आए। गुरुजी के साथ मामा क्रिपालचंद व कई शिष्य थे। गुरु गोबिंदसिंघजी नीले घोड़े पर सवार, हाथ में बहुत सुंदर गहरे रंग का शाही बाज जो शोभा पा रहा था। उस नगर का नवाब अमीरदीन अपना बाज लेकर रस्ते में खड़ा था। जब गुरुजी उसके नजदीक पहुंचे तो गुरुजी का सुंदर शाही बाज देखकर उसका मन प्रलोभित हो गया और उसने गुरुजी को कहा कि आप अपना बाज मेरे बाज से लड़वाएं।

अंतर्यामी गुरुजी समझ गए कि नवाब के मन में बेईमानी है और वह कूटनीति से बाज लेना चाहता है। तब गुरु गोबिंदसिंघजी ने अमीरदीन से कहा कि हम अपने शाही बाज को तुम्हारे बाज से नहीं बल्कि चिड़ियों से तुम्हारा बाज लड़ाएंगे। पीर ने कहा चिड़िया तो बाज का भोजन है, वह बाज से नहीं लड़ सकती। गुरुजी ने फिर भी दूसरी बार उसे कहा कि हम चिड़िया से ही तुम्हारा बाज लड़वाएंगे। नवाब ने गुस्से में गुरुजी को कहा निकालो चिड़ियाएं, कहां है ? उस समय सामने बोहड़ के वृक्ष पर दो चिड़ियां बैठी थीं। गुरुजी ने उन चिड़ियों को जिस्मानी और रुहानी शक्ति का वरदान देकर हुकुम दिया कि इस बाज से लड़ो। गुरु गोबिंदसिंघजी का हुकुम होते ही दोनों चिड़ियों ने नवाब के बाज से युद्ध करना आरंभ कर दिया। जिस स्थान पर चिड़ियों ने बाज से लड़ाई शुरु की वहां वर्तमान में 'गुरुद्वारा बादशाही बाग' पा. 10 वीं, अंबाला, हरियाणा नाम से सुशोभित है। गुरु महाराज के आशीर्वाद से चिड़ियों ने बाज से ऐसी लड़ाई की कि बाज को जख्मी करते हुए काफी आगे ले गईं।

गुरु गोबिंदसिंघ महाराज, नवाब अमीरदीन व संगत इस युद्ध का नजारा देखते हुए आगे बढ़े। चिड़ियों ने बाज को इतना गंभीर जख्मी कर दिया कि बाज ने गिरते ही एक कुंए के समीप दम तोड़ दिया। जिसे देखकर गुरुजी ने कुंए के स्थान पर खड़े होकर वचन फरमाया 卐चिड़ियों से मैं बाज तुड़ाऊं, तबै गोबिंदसिंघ नाम कहाऊं।卐 जिस स्थान पर चिड़ियों ने बाज को जख्मी कर कुंए के समीप गिराया वहां आज 'गुरुद्वारा गोबिंदपुरा साहिब, पा. 10 वीं', सुशोभित है। गुरुजी ने इस कुंए के जल को आशीर्वाद देकर वचन फरमाया कि जो भी स्त्री-पुरुष पूरनमासी के दिन यहां स्नान कर हाजरी भरेगा उसे मन वांछित फल प्राप्त होगा। ऐसे महान, शिष्यों में उत्साह-जोश भरने वाले पूर्ण गुरु व परमेश्वर के अवतार गुरु गोबिंदसिंघजी का जन्म पोह सुदी सप्तमी संवत 1723 को पटना षहर में हुआ, जिसकी इस वर्ष समगणित अंग्रेजी तारीख 17 जनवरी 2024 बुधवार को है, उनकी 357 वीं जयंती पर उनके पावन चरणों में शत-शत- प्रणाम।

आप और कांग्रेस ने दिखाई फायदे वाली दोस्ती : शहजाद पूनावाला

नई दिल्ली। बीजेपी नेता शहजाद पूनावाला ने कहा है कि आप और कांग्रेस ने फायदे वाली दोस्ती की मिसाल पेश की है। उन्होंने नवजोत सिंह सिद्धू के आरोपों पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। बता दें कि कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू ने आम आदमी पार्टी की पंजाब सरकार पर अवैध रेत खनन का आरोप लगाया है। नवजोत सिंह सिद्धू के इन आरोपों पर अब बीजेपी ने प्रतिक्रिया देते हुए पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि आज फायदे वाली दोस्ती क्या होती है, ये आप और कांग्रेस दिखा रहे हैं। दिल्ली में दोस्त हैं और पंजाब में आपस में कुश्ती कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी ने पहले कहा था कि वे भ्रष्टाचार से कभी समझौता नहीं करेंगे और कांग्रेस को कभी हाथ नहीं मिलाएंगे। आज वे एक-दूसरे के साथ गठबंधन में हैं। उन्होंने पूरी तरह से यू-टर्न ले लिया है। इस तरह का पाखंडी गठबंधन आज बनाया जा रहा है। इसके ?लिए आम आदमी पार्टी और कांग्रेस को जवाब देना चाहिए। उन्होंने कहा कि दिल्ली विधानसभा में आप द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया था कि राजीव गांधी से भारत रत्न वापस लिया जाना चाहिए क्योंकि वह 1984 के सिख नरसंहार के मास्टरमाइंड थे। अब क्या आम आदमी पार्टी ने राजीव गांधी को माफ कर दिया है या कांग्रेस पार्टी ने राजीव गांधी की भूमिका स्वीकार कर ली है? बीजेपी ने कहा कि इसका जवाब देना चाहिए। बता दें कि नवजोत सिंह सिद्धू ने आरोप लगाया था कि भगवंत मान की सरकार के संरक्षण में अवैध रेत खनन हो रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य में 39,000 करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार भी किया गया है।

राजौरी-पुंछ में आतंकी गतिविधियां बढ़ीं, लेकिन हालात काबू में : सेना प्रमुख

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर के राजौरी-पूंछ जिलों में आतंकी गतिविधियां बढ़ीं जरूर हैं, लेकिन हालात काबू में हैं। यह बात सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे ने कही। उन्होंने बताया कि यहां पर अब हालात ज्यादा खराब नहीं हैं, हालांकि राजौरी-पुंछ क्षेत्र और जम्मू क्षेत्र में पीर पंजाल के दक्षिणी क्षेत्र में कुछ आतंकवादी गतिविधियां बढ़ गई हैं। सेना प्रमुख ने यहां आयोजित सेना दिवस समारोह में कहा कि पिछले कुछ महीनों के दौरान बढ़ती आतंकवादी गतिविधियों पर गौर किया गया है। सुरक्षाकर्मियों के प्रयासों के कारण जम्मू-कश्मीर के अंदरूनी इलाकों में हिंसा और घुसपैठ में भी उल्लेखनीय गिरावट आई है। उन्होंने चीन का नाम लिए बिना पूर्वी लद्दाख विवाद पर कहा कि उत्तरी सीमा पर भी स्थिति स्थिर रहने के संकेत मिल रहे है। उन्होंने कहा कि यहां पर पर्याप्त संख्या में जवान तैनात हैं और यह संख्या बरकरार रखी जाएगी। इसी तरह पूर्वी लद्दाख पर जनरल पांडे ने कहा कि ऑपरेशनल तैयारियां उच्चस्तर पर की जा रही हैं, जबकि एलएसी मुद्दों का समाधान ढूंढने के लिए सैन्य और राजनयिक स्तर पर फिलहाल यहां बातचीत चल रही है।

देपेन्द्र हुड्डा ने भगवान राम से बेरोजगारी, महंगाई, नशे से मुक्ति दिलाने का मांगा आशीर्वाद

चंडीगढ़। कांग्रेस सांसद दीपेन्द्र हुड्डा ने अयोध्या पहुंचकर भगवान राम से प्रदेश में बेरोजगारी, महंगाई, नशे से मुक्ति दिलाने का आशीर्वाद मांगा है। हुड्डा 16 जनवरी को रोहतक से घर-घर कांग्रेस अभियान शुरु करने से पहले मकर संक्रांति के मौके पर दोबारा अयोध्या में रामलला की पूजा-अर्चना करने पहुंचे। इस अवसर पर उन्होंने पवित्र सरयू नदी में स्नान किया और भगवान् रामलला के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान दीपेन्द्र हुड्डा ने समस्त हरियाणावासियों की ओर से भगवान् राम से प्रार्थना की कि प्रदेश में शांति और भाईचारा बना रहे। उन्होंने भगवान् श्रीराम से हरियाणा की जनता की सेवा करने का आशीर्वाद माँगा। उन्होंने हनुमानगढ़ी जाकर हनुमान जी के दर्शन किए। इस अवसर पर उन्होंने कहाकि भगवान राम सबके हैं और करोड़ों लोगों के मन में बसते हैं। हुड्डा ने कहा कि में साल 2005 में राजनीति में आया तब से लेकर आज तक हजारों जनसभाएं, रैली की और हर रैली, सभा में मौजूद जन मानस का अभिवादन राम-राम से किया। आज उन्होंने भगवान् राम से प्रार्थना करते हुए देश में अमन और भाईचारे का वातावरण बनाने का आशीर्वाद मांगा उन्होंने कहा कि पारस्परिक सद्भावना के साथ हर देशवासी स्वस्थ और प्रसन्न रहें। भगवान राम की कृपा से समस्त भारतवासी महंगाई, बेरोजगारी और नशे जैसी बुराईयों से मुक्त होकर शांति के साथ अपना जीवन व्यतीत करें। उन्होंने कहा कि हरियाणा वो प्रदेश है जहां परस्पर अभिवादन भी राम-राम के साथ करते हैं। किसान-मजदूर, व्यापारी सभी अपने काम की शुरुआत राम का नाम लेकर करते हैं। हरियाणा वो प्रदेश है जहां हर व्यक्ति के अंदर राम बसे हैं। इस दौरान यूपी कांग्रेस प्रभारी अविनाश पांडेय, अध्यक्ष अजय राय, फरीदाबाद विधायक नीरज शर्मा, कांग्रेस के सोशल मीडिया विभाग की चेयरमैन सुप्रिया श्रीनेत, राष्ट्रीय सचिव अखिलेश प्रताप सिंह, धीरज गुर्जर आदि वरिष्ठ नेता मौजूद रहे।

अपनी विश्वसनीयता खो चुके नीतिश कुमार : चिराग पासवान

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के मुखिया चिराग पासवान ने फिर सीएम नीतीश कुमार पर हमला कर कहा कि खरमास खत्म हो चुका है। अब मुख्यमंत्री क्या करवट लेते हैं, पता नहीं? चिराग ने कहा कि सीएम नीतीश अपनी

विश्वसनीयता खो चुके है। मुख्यमंत्री अपनी महत्वाकांक्षाओं को साधने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। वहीं राम मंदिर उद्घाटन पर चिराग ने कहा कि 22 तारीख को आने वाले राम मंदिर का सपना जो दशकों से हम लोगों से जुड़ा हुआ है, वह सपना संपूर्ण होने वाला है। पासवान ने कहा कि राम मंदिर को दशकों तक इन लोगों ने मुद्दा बनाया और राजनीति की। उन्होंने कहा कि धारा 370 की बातें इन लोगों ने मुद्दा बनाकर राजनीति की, उनका मुद्दा बनाया। इसके अलावा महिला आरक्षण बिल पर इन्होंने मुद्दा बनाया, लेकिन अब यह सब मुद्दे खत्म हो चुके। पीएम नरेंद्र मोदी ने इन सब मुद्दों से ऊपर काम किया, तब अब उनके सपने में बहुत कुछ आने लगे हैं।

घने कोहरे के कारण घटी विजिबिलिटी, देरी से उड़ान भर रही फ्लाइट्स

नई दिल्ली। दिल्ली में शीतलहर की स्थिति लगातार बनी हुई है। यहां मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी में कोहरे के कारण विजिविलिटी काफी कम थी, इसके चलते उत्तर भारत में कोहरे के कारण ट्रेनों से लेकर फ्लाइट्स तक प्रभावित हो रही हैं। भारत मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक सफदरजंग में तापमान 4.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि पालम में तापमान 7.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से जाने वाली लगभग 30 उड़ानों में देरी हुई और 17 उड़ानों को मौसम की स्थिति के कारण रद्द भी कर दिया गया। यहां जीरो विजिबिलिटी के कारण रेलों की रफ्तार भी धीमी पड़ गई है। इस वजह से ज्यादातर रेलें देरी से चल रही हैं। एयरपोर्ट से कई उड़ानों को डायवर्ट भी करना पड़ा है। ऐसे में फ्लाइट से यात्रा करने वाले लोगों को काफी परेशानी हो रही है। बता दें कि इंडिगो फ्लाइट में हुए मुक्का कांड के बाद सोशल मीडिया पर कई तरह के वीडियो वायरल हो रहे हैं। इन वीडियो में खचाखच भीड़, घंटों की दैरी सड़क पर बैठे खाना खाते लोग दिखाई दे रहे हैं।

मिली खबर के मुताबिक फ्लाइट 10-10 घंटे की देरी से चल रही हैं, जिससे यात्रियों को काफी दिक्कत हो रही है। मौसम की बात करें तो राजधानी में न्यूनतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इसके साथ ही कई यात्री अपने सामान के साथ हवाईअड्डे पर इंतजार करते हुए नजर आए। एक यात्री ने कहा ?कि मेरी फ्लाइट सुबह 8-40 बजे रवाना होने वाली थी, लेकिन अब यह सुबह 10-30 बजे रवाना होने वाली है। उन्होंने देरी का कारण मुख्य रूप से मौसम और कोहरा बताया है। दिल्ली एयरपोर्ट ने इस संबंध में एक एडवाइजरी जारी करते हुए कहा है, कि दिल्ली एयरपोर्ट पर कम दृश्यता के कारण उड़ानें प्रभावित हो रही हैं। यात्रियों से अनुरोध है कि वे उड़ान की अद्यतन जानकारी के लिए संबंधित एयरलाइन से संपर्क करें। इस बीच कोहरे के कारण कम दृश्यता के कारण 30 ट्रेनें भी देरी से चलीं। भारतीय मौसम विभाग ने कहा कि पालम और सफदरजंग हवाई अड्डों पर 500 मीटर की दृश्यता दर्ज की गई है। मौसम विभाग ने एक्स पर जारी रिपोर्ट में लिखा कि दिल्ली पालम (वीआईडीपी) और सफदरजंग हवाई अड्डे आज, 16 जनवरी को 5.30 बजे आईएसटी पर 500 मीटर दृश्यता की सूचना दे रहे हैं। वहीं घने कोहरे के चलते ट्रेनें भी घंटों-घंटों देरी से चल रही हैं।

22 जनवरी को बंगाल में 'सद्भावना रैली' निकालेंगी ममता बनर्जी, मंदिरों के अलावा मस्जिद, चर्च और गुरुद्वारे का करेंगी दौरा

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी 22 जनवरी को पूरे कोलकाता में एक अंतरधार्मिक रैली का नेतृत्व करेंगी। उसी दिन अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि रैली रास्ते में मस्जिदों, मंदिरों, चर्चों और गुरुद्वारों को कवर करेगी। ममता ने इस पर बोलते हुए कहा कि मैं 22 जनवरी को एक रैली करूंगी। इसकी शुरुआत काली मंदिर से होगी, जहां मैं केवल मां काली की पूजा करने जाऊंगी। इसके बाद, हम हाजरा से पार्क सर्कस मैदान तक एक अंतरधार्मिक रैली करेंगे और वहां एक बैठक करेंगे। हम रास्ते में मस्जिदों, मंदिरों, चर्चों और गुरुद्वारों को कवर करेंगे। रैली में शामिल होने के लिए सभी का स्वागत है। रैली में सभी धर्मों के लोग मौजूद रहेंगे।

टीएमसी सुप्रीमो ने यह भी घोषणा की, उसी दिन, टीएमसी पार्टी के सदस्य दोपहर 3 बजे हर जिले में, हर ब्लॉक में एक रैली करेंगे। उन्होंने कहा कि कई लोग मुझसे

विभिन्न मंदिरों के बारे में पूछ रहे हैं लेकिन मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है। मैंने हमेशा कहा है धर्म व्यक्तिगत है, त्योहार सार्वभौमिक है। इससे पहले ममता बनर्जी ने भाजपा पर निशाना साधा था। उन्होंने साफ तौर पर कहा था कि लोकसभा चुनाव से पहले राम मंदिर के उद्घाटन के जरिए भाजपा नौटंकी कर रही है। ममता बनर्जी ने कहा, मैं धार्मिक आधार पर जनता को बांटने में विश्वास नहीं करती। ममता ने साफ तौर पर कहा कि जब तक जिंदा हूं, समाज में बंटवारा नहीं होने दूंगी।

राम मंदिर का 'प्राण प्रतिष्ठा' समारोह 22 जनवरी को आयोजित किया जाएगा। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी उस दिन भव्य मंदिर में राम लला की मूर्ति की स्थापना में शामिल होने के लिए तैयार हैं। मंदिर के अधिकारियों के अनुसार, समारोह 16 जनवरी से शुरू होकर सात दिनों तक आयोजित किया जाएगा। समारोह के लिए राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से हजारों वीआईपी मेहमानों को निमंत्रण मिला है। ट्रस्ट ने सभी उपस्थित लोगों के स्वागत और सम्मान के लिए विस्तृत व्यवस्था की है, उन्हें उपहार दिए जा रहे हैं जिनमें 'राम राज' भी शामिल है। उत्सव के हिस्से के रूप में, तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट मेहमानों को प्रसाद के रूप में देसी घी से बने विशेष 'मोतीचूर के लड्डू' भी वितरित करेगा।

श्रीकृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह : मस्जिद के सर्वे पर रोक

-सुप्रीम कोर्ट से हिंदू पक्ष को झटका

नई दिल्ली। मथुरा के श्रीकृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह मस्जिद विवाद के संबंध में सुप्रीम कोर्ट ने बड़ा कदम उठाया है। सुप्रीम कोर्ट ने मस्जिद का सर्वे करने के लिए कमिश्नर नियुक्त करने के इलाहाबाद हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश को हिंदू पक्ष के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है। दरअसल जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस दीपांकर दत्ता की बेंच ने मामले पर सुनवाई कर इलाहाबाद हाईकोर्ट की ओर से केस से जुड़े सारे मुकदमों को अपने पास सुनवाई के लिए ट्रांसफर करने के आदेश पर सवाल उठाया। कोर्ट ने कहा कि जब मामला सुप्रीम कोर्ट में लंबित था, तब हाईकोर्ट ने अपने पास केस को कैसे ट्रांसफर किया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इलाहाबाद हाईकोर्ट मामले में मेटनबिल्टी पर सुनवाई कर सकता है, लेकिन कमिश्नर नियुक्ति को लेकर हाईकोर्ट के जज आगे नहीं बढ़ सकते हैं। सुप्रीम कोर्ट ने सुनाई के दौरान हिंदू पक्ष की दलीलों पर सवाल उठाकर कहा कि आपकी अर्जी बहुत अस्पष्ट है। आपको स्पष्ट रूप से बताना होगा कि आप क्या चाहते हैं। इसके अलावा ट्रांसफर का मामला इस न्यायालय में लंबित है। हमें उस पर भी फैसला लेना है। शीर्ष अदालत ने कोर्ट कमिश्नर की नियुक्ति के खिलाफ दाखिल मुस्लिम पक्ष की याचिका पर हिन्दू पक्ष को नोटिस जारी किया है। मामले पर अब 23 जनवरी को अगली सुनवाई होगी। बता दें कि इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 14 दिसंबर को शाही ईदगाह मस्जिद के सर्वेक्षण के लिए एक कोर्ट कमिश्नर की नियुक्ति पर सहमति दी थी। मामले में याचिकाकर्ताओं ने दावा किया था कि उस मस्जिद में हिन्दू प्रतीक चिह्न हैं, जिससे पता चलता है कि वह कभी हिंदू मंदिर था।

ईडी को मेरा बयान लेना है तो 20 जनवरी को सीएम हाउस आ जाएं : सीएम सोरेन

रांची। बार बार ईडी को झटका दे रहे झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन ने अंतत- अपना बयान दर्ज कराने के लिए ईडी को पत्र लिख दिया है। पत्र में सोरेन ने कहा है कि एजेंसी उनसे 20 जनवरी की दोपहर कांके रोड स्थित सीएम हाउस में आकर उनका बयान दर्ज कर ले। मूलबात ये है कि, रांची के बड़गांई अंचल में जमीन घोटाले की जांच कर रहे ईडी ने सीएम सोरेन को आठवीं बार समन भेजकर 16 से 20 जनवरी के बीच हाजिर होने को कहा था। इसके पहले उन्हें पहली बार 14 अगस्त 2023 को हाजिर होने के लिए समन भेजा गया था। इसके बाद 24 अगस्त, 9 सितंबर, 23 सितंबर, 4 अक्टूबर, 12 दिसंबर और 30 दिसंबर से 5 जनवरी के बीच उपस्थित होने के लिए समन भेजा गया था। ईडी ने सोरेन से कहा था कि अगर 16 से 20 जनवरी के बीच वे एजेंसी के समक्ष हाजिर नहीं होते हैं तो उसे खुद उनके पास आना पड़ेगा। ईडी ने कहा कि ऐसी स्थिति में विधि-व्यवस्था को लेकर चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं। यह आपकी जिम्मेदारी होगी और इसलिए विधि-व्यवस्था बनाए रखने के लिए आप राज्य के मुख्य सचिव और डीजीपी को उचित निर्देश दे दें। इस बीच सीएम सचिवालय का एक संदेशवाहक सीलबंद लिफाफे में सीएम का पत्र लेकर रांची में एयरपोर्ट रोड स्थित ईडी के जोनल दफ्तर पहुंचा। इसमें सीएम ने 20 जनवरी को बयान दर्ज करने के लिए ईडी को सीएम हाउस आने को कहा है। उल्लेखनीय है कि रांची के बड़गाईं अंचल की जमीन से जुड़े सरकारी दस्तावेज में छेड़छाड़ और जालसाजी के मामले की जांच के सिलसिले में ईडी सीए हेमंत सोरेन का बयान दर्ज करना चाहती है। इस मामले में आईएएस छवि रंजन सहित डेढ़ दर्जन लोगों को ईडी पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है।

भारत की सबसे बड़ी ताकत डेमोक्रेसी है : उपराष्ट्रपति

-धनखड़ बोले- भजनलाल का सीएम पद तक पहुंचना बदलते भारत का इशारा, ममता बनर्जी-गहलोत पर कही ये बड़ी बात

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान विधानसभा में विधायकों की प्रबोधन कार्यशाला के दौरान उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सदन के समक्ष अपना संबोधन रखा. इस दौरान धनखड़ ने पक्ष-विपक्ष के विधायकों को नसीहत देकर दायित्वों से रूबरू करवाया उपराष्ट्रपति ने अपने वक्तव्य की शुरुआत में सदन से अपनी राजनीतिक शुरुआत का जिक्र किया और अजमेर में मौजूदा स्पीकर वासुदेव देवनानी के साथ सियासी तकरार वाले रिश्तों का जिक्र करते हुए संबंधों की मर्यादा बताई। उन्होंने कहा कि मर्यादा में रहकर कटाक्ष और विरोध करना कोई देवनानी से सीखे उन्होंने सीएम भजनलाल शर्मा को लेकर कहा कि उन्हें मुख्यमंत्री बनने का सौभाग्य जिस तरीके से मिला है, उससे यह इशारा मिलता है कि भारत बदल गया है, अब सब कुछ मुमकिन है. उपराष्ट्रपति धनखड़ ने साथ ही मुख्यमंत्री शर्मा के लिए कम वक्त में हासिल लोकप्रियता को आगे बढ़ाने और कायम रख पाने की चुनौती भी बताई।

धनखड़ ने विधानसभा में प्रबोधन कार्यक्रम के उद्घाटन पर कहा कि भारत की सबसे बड़ी ताकत डेमोक्रेसी है उन्होंने देश के लोकतंत्र को सबसे पुराना और प्रभावी बताया उपराष्ट्रपति ने अपने भाषण में प्रजातंत्र के साथ-साथ देश की मजबूती के लिए कार्यपालिका को भी भागीदार बताया उपराष्ट्रपति ने कहा कि भारत की ब्यूरोक्रेसी में पहुंचने वाले अफसर दुनिया की सबसे मुश्किल परीक्षा पास कर इस मुकाम को हासिल करते है जगदीप धनखड़ ने कहा कि मैं 1989 में लोकसभा का सदस्य बना और केंद्र में मंत्री रहा, उस वक्त को याद करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए सोने को गिरवी भी रखना पड़ा था. आज भारत दुनिया की 5वीं आर्थिक महाशक्ति बन चुका है. हमने कनाडा और फ्रांस को पीछे छोड़ा, आने वाले समय में भारत जापान को पीछे छोड़ देगा। धनखड़ ने कहा कि जिस रफ्तार से देश आगे बढ़ रहा है, दुनिया भी हैरान है. यह नेतृत्व और नीति बनाने वाले के लिए अहम है. अपनी नसीहत में धनखड़ ने कहा कि हम विकास को राजनीतिक चश्मे से नहीं देख सकते हैं, साथ ही राज्यसभा के सभापति के नाते अनुभवों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि किसी भी सदन में सदस्य का निलंबन करना सबसे बड़ी पीड़ा होती है. उप राष्ट्रपति ने राजनीतिक दलों से आग्रह करते हुए कहा कि आसन पर संदेह करना कभी ठीक नहीं रहेगा और हल्की फुल्की बातों को दिल पर नहीं लेना चाहिए, ऐसा होने पर ही सदस्य अपनी प्रतिभा को दिखा पाएंगे। धनखड़ ने हैरान जताया. प्रतिपक्ष के दायित्वों का जिक्र करते हुए धनखड़ ने कहा कि सरकार को आईना दिखाया जाएगा, तो यह बहुत लाभकारी होगा. सबसे पहले तो यह विधायकों को ध्यान रखना चाहिए कि विधानसभा की कार्यवाही कैसे होती है. उन्होंने कहा कि सरकार को चलाना और सत्ता पक्ष को राह दिखाना, पक्ष और विपक्ष दोनों का काम है. उन्होंने कहा कि मौजूदा दौर चिंता और चिंतन का है।

माल्या, नीरव मोदी समेत कई भगोड़ों को सरकार ने की भारत लाने की तैयारी

-मोस्ट वांटेड्स को लाने जांच एजेंसियों के उच्चस्तरीय दल को भेजा जा रहा विदेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार करोड़ों-अरबों का घपला करके विदेश भागने वालों को वापस लाने के लिए कड़ा कदम उठाने जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार सरकार द्वारा सभी बड़ी जांच एजेंसियों के एक उच्चस्तरीय दल को विदेश भेजा जा रहा है ताकि वह मोस्टे वांटेड्स को भारत लाने की कार्रवाई कर सके। बताया जा रहा है कि इन घोटालेबाजों की फौज ब्रिटेन में बैठी है, उसे वापस भारत लाने के लिए केंद्रीय एजेंसियों की एक टीम गठित कर दी गई है। सरकार केंद्रीय जांच अभिकरण (सीबीआई), प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) से बने एक उच्च स्तरीय दल को जल्द ही ब्रिटेन रवाना किया जा रहा है। इसका लक्ष्य भारत के मोस्ट वॉन्टेड भगोड़ों को वापस लाने की कार्रवाई को तेज करना है। भारत से ब्रिटेन जा बैठे इन भगोड़ों में हथियार डीलर संजय भंडारी, हीरा व्यापारी नीरव मोदी और किंगफिशर एयरलाइंस के प्रमोटर विजय माल्या शामिल हैं। इसके अलावा, टीम भगोड़ों की अवैध कमाई का पता लगाने की भी कोशिश करेगी, जो उन्होंने ब्रिटेन और अन्य देशों में संपत्ति खरीदने पर खर्च की है।

सूत्रों की मानें तो इस दल की अगुवाई विदेश मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कर रहे हैं। लंदन में भारतीय उच्चायोग ने यूके के अधिकारियों के साथ बैठकें की हैं। इन बैठकों में वही सबूत जुटाए जाएंगे जिनसे पता चल सके कि भगोड़ों ने लंदन में कितनी संपत्ति हथियाई है और उनके बैंक खातों में क्या लेनदेन हुए हैं। बताया जा रहा है कि हथियार डीलर भंडारी 2016 में फरार हो गया था। इससे पहले आयकर विभाग और प्रवर्तन निदेशालय ने यूपीए सरकार के दौरान हुए कई रक्षा सौदों की जांच शुरू की थी। भंडारी ने लंदन और दुबई में संपत्ति हथिया ली थी, जिन्हें बाद में प्रियंका गांधी वाड्रा के पति रॉबर्ट वाड्रा के सहयोगी सीसी थंपी के नियंत्रण वाली कंपनियों के नाम कर दिया गया था।

सायबर ठग भेज रहे राम मंदिर में वीआईपी दर्शन और प्रसाद की होम डिलीवरी वाला मैसेज

मुंबई (एजेंसी)। सभी भारतवासी रामलला के स्वागत के लिए उत्सुक हैं। अयोध्यानगरी को दुल्हन की तरह सजाया गया है. 22 जनवरी को भगवान श्री राम जी को राम मंदिर में विराजमान किया जाएगा. राम मंदिर के लोकार्पण समारोह की धूम विदेशों में भी देखी जा रही है. जैसे-जैसे यह ऐतिहासिक दिन नजदीक आ रहा है, लोगों के बीच जिज्ञासा और अधिक बढ़ती जा रही है। हालांकि, इसके साथ ही कई तरह के फर्जीवाड़े भी सामने आ रहे हैं. कई भक्तों को व्हाट्सएप पर धोखाधड़ी वाले मैसेज मिल रहे हैं। 22 जनवरी को अयोध्या मंदिर में वीआईपी एंट्री के मैसेज भी वायरल हो रहे हैं. यह मैसेज वीआईपी एंट्री देने का लालच देकर भेजा जा रहा है। इस संदेश में एक एपीके (एंड्रॉइड एप्लिकेशन पैकेज) फ़ाइल है। यह फाइल राम जन्मभूमि गृह संपर्क अभियान के नाम से भेजी जा रही है. फिर, एक अन्य मैसेज वीआईपी एंट्री के लिए एक ऐप इंस्टॉल करने के लिए कहता है। लेकिन यह उन भक्तों को निशाना बनाने वाला एक फ्रॉड है जो अयोध्या में राम मंदिर के दर्शन करना चाहते हैं। इस मैसेज के लिंक पर क्लिक करने से आपके स्मार्टफोन में खतरनाक फ़ाइलें, मैलवेयर या ऐप्स आ जाते हैं। साइबर ठग आपके फोन से निजी डेटा चुरा सकते हैं. और तो और, आपका बैंक में जमा पैसा भी ख़तरे में पड़ सकता है. जिससे आपकी बैंक डिटेल्स में भी दिक्कत आ सकती है.

राम मंदिर का प्रसाद

कुछ वेबसाइट राम मंदिर का प्रसाद घर तक पहुंचाने का दावा कर रही हैं। इसके लिए राम भक्तों को वेबसाइट पर ऑर्डर करने को कहा गया है. साथ ही जो भक्त रामलला के प्राणप्रतिष्ठा समारोह में शामिल नहीं हो पा रहे हैं. एक फर्जी मैसेज भेजा जा रहा है कि वे इस वेबसाइट के माध्यम से घर बैठे प्रसाद ऑर्डर कर सकते हैं. हालांकि, राम मंदिर का प्रसाद घर तक पहुंचाने वाली ये कंपनियां फर्जी हैं और लोगों की भावनाओं से खेल रही हैं। इन कंपनियों की वेबसाइटें राम मंदिर ट्रस्ट या सरकार की नहीं हैं। राम मंदिर का प्रसाद घर तक पहुंचाने का दावा करने वाली ये वेबसाइटें प्रसाद के लिए 50 और 100 रुपये चार्ज कर रही हैं।

सत्येंद्र जैन, अरविंद केजरीवाल व तिहाड़ डीजी को दी लाखों की रिश्वत

-महाठग सुकेश चंद्रशेखर का नया शगूफा, सीबीआई-एलजी से की जांच की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाठग सुकेश चंद्रशेखर ने दावा किया है कि सत्येंद्र जैन, अरविंद केजरीवाल व तिहाड़ डीजी को उन्होंने लाखों की रिश्वत दी है। इसके लिए पत्र लिखकर सीबीआई-एलजी से जांच की मांग की है। बता दें कि करीब 200 करोड़ की ठगी से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सुकेश चंद्रशेखर इन दिनों जेल में बंद हैं। सुकेश चंद्रशेखर ने सीबीआई और दिल्ली एलजी को दी शिकायत में दावा किया है कि उसने सतेन्द्र जैन, अरविंद केजरीवाल और पूर्व डीजी तिहाड़ संदीप गोयल को बतौर रिश्वत लाखों रुपए दिए हैं। सुकेश चंद्रशेखर ने एक लेटर सीबीआई को दिया है, जिसमें सतेन्द्र जैन, अरविंद केजरीवाल और एक्स डीजी तिहाड़ सन्दीप गोयल के खिलाफ शिकायत है। इसमें सतेन्द्र जैन की महाठग सुकेश के साथ बातचीत के चैट्स के तीन स्क्रीन शॉट्स भी लगाए हैं। इतना ही नहीं, सुकेश चंद्रशेखर ने

दूसरी शिकायत एलजी को दी है, जिसमे जांच की बात की गई है। हालांकि इससे पहले भी सुकेश चंद्रशेखर ने दिल्ली के एलजी को अरविंद केजरीवाल के खिलाफ शिकायत की थी। इसके बाद दिल्ली के उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने सुकेश चंद्रशेखर की उस शिकायत को आगे की कार्रवाई के लिये केंद्रीय गृह मंत्रालय के पास भेज दिया था, जिसमें उसने अपने अधिवक्ता को धमकी भरे कॉल मिलने की शिकायत की थी।

मनी लॉन्ड्रिंग और विभिन्न लोगों को ठगने के आरोप में फिलहाल दिल्ली की जेल में बंद चंद्रशेखर ने पिछले साल आठ जुलाई को उपराज्यपाल को दी शिकायत की थी, जिसमें दावा किया कि उसके अधिवक्ता अनंत मलिक को धमकी भरे फोन आ रहे हैं। ठग सुकेश चंद्रशेखर ने अपनी शिकायत में कहा था कि वकील अनंत मलिक को 'मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और दिल्ली के पूर्व गृह मंत्री सत्येन्द्र जैन की ओर से बोलने का दावा करने वाले लोगों से धमकी भरे फोन किए थे। चंद्रशेखर ने अपनी शिकायत में यह दावा भी किया कि फोन करने वाले ने कथित तौर पर मंडोली जेल में उन्हें परोसे जाने वाले भोजन में जहर मिलाने की धमकी दी थी।

इस संबंध में प्रवर्तन निदेशालय द्वारा जांच की जा रही है। बता दें कि 200 करोड़ रुपये की मनी लॉन्ड्रिंग में सुकेश चंद्रशेखर मुख्य आरोपी है। वह कई अन्य मामलों में भी आरोपी है, जिसकी जांच ईडी, दिल्ली पुलिस और आर्थिक अपराध शाखा द्वारा की जा रही है। उस समय चंद्रशेखर और उसकी पत्नी लीना मारिया पॉल दोनों को दिल्ली पुलिस ने धोखाधड़ी के मामले में उनकी कथित भूमिका के लिए गिरफ्तार किया था। जबकि दिल्ली पुलिस और ईडी की जांच के दौरान बॉलीवुड अभिनेत्री जैकलीन फर्नांडीज, नोरा फतेही सहित अन्य सेलिब्रिटी के नाम भी आए थे।

चीन में आ रही है कोरोना जेएन.1 की लहर, भारत पर क्या होगा असर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना का जनक कहा जाने वाला चीन फिर कोरोना के संकट से घिर सकता है। कोरोना के सब वैरिएंट जेएन.1 के चीन में केस बढ़ रहे हैं। अब ड्रैगन को भी खतरा लगने लगा है। चीन के स्वास्थ्य अधिकारियों ने कोविड-19 के मामले बढ़ने की चेतावनी जारी कर दी है। जहां तक भारत की बात है तो देश में कोरोना के नए वैरिएंट के केस में कमी दर्ज की गई है। लेकिन चीन की चेतावनी के बाद जनवरी के अंत तक सतर्क रहने की जरूरत है। चीन के नेशनल हेल्थ कमीशन ने हालांकि कहा है कि अभी कोरोना के जेएन.1 वैरिएंट के मामले कम हैं। लेकिन चीन के हेल्थ अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि देश में जेएन.1 वैरिएंट का वायरस काफी बड़ी तादाद में मौजूद है। चीन के विशेषज्ञ कोरोना के इस नए वैरिएंट से सतर्क हो गए हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि ठंड के मौसम में कई सांस से संबंधित बीमारियां फैल सकती हैं। चीन में अस्पतालों को कोरोना के बढ़ते मामलों से निपटने के लिए सतर्क कर दिया गया है। यही नहीं, चीन ने कोरोना से निपटने के लिए अपने हेल्थ वर्क्स की ट्रेनिंग प्रोग्राम भी शुरू कर दिया है।

भारत में पिछले 24 घंटे में कोरोना के 375 नए मामले दर्ज किए गए हैं। देश में अभी कोरोना के 3,075 मरीज हैं। पिछले 24 घंटे में कोविड-19 से 2 लोगों की मौत भी हुई है। यही नहीं, भारत में कोरोना के मामले में फिलहाल कमी दर्ज की जा रही है। 5 दिसंबर 2023 से देश में कोरोना के नए वैरिएंट जेएन.1 के केस बढ़ने लगे थे। हालांकि, दिसंबर के अंत तक इसके मामले में कमी आने लगी थी। जनवरी के दूसरे हफ्ते में भी कोरोना के मामलों में कमी दर्ज की गई है। 6 जनवरी तक देश के 12 राज्यों में जेएन.1 वैरिएंट के कुल 682 नए मामले दर्ज किए गए थे। सरकार ने कोरोना के बढ़ते मामलों के बीच कहा था कि इससे घबराने की जरूरत नहीं है बल्कि सतर्क रहने की जरूरत है।

देश में तापमान में कमी के बाद ही कोरोना के मामले में बढ़ने लगे थे। जेएन.1 ओमीक्रोन का सब वैरिएंट ही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना के इस नए सब वैरिएंट को वैरिएंट ऑफ कन्सर्न बताया था। इस नए वैरिएंट से मौत का आंकड़ा भी बेहद कम है। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकड़े के मुताबिक नए वैरिएंट से मौत का आंकड़ा 1.81 फीसदी है। गौरतलब है कि भारत और अमेरिका की हेल्थ एजेंसियों ने

ओमीक्रोन के सब वैरिएंट जेएन.1 के बारे में जानकारी साझा की है। इस जानकारी के मुताबिक, दुनिया में अभी सबसे ज्यादा कोरोना के मरीज जेएन.1 वैरिएंट के ही मिल रहे हैं।

चीन में इन्फ्लूएंजा के मरीजों में हो रहा इजाफा,तबाही के आसार

बीजिंग। चीन में एक बार फिर कोरोना जैसी महामारी के आसार बन रहे हैं। यहां लगातार इन्फ्लूएंजा के मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है। चीन के स्वास्थ्य अधिकारियों के मुताबिक देश में कोरोना संक्रमण और भी बढ़ सकता है, इसके केस में बढ़ोतरी होने की संभावना है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के प्रवक्ता एमआई फेंग ने जानकारी देते हुए बताया कि अस्पतालों और क्लीनिकों में बुखार के रोगियों की संख्या में उतार चढ़ाव देखा गया है। इनमें से ज्यातार लोगों में सांस लेने संबंधी बीमारी देखी गई है। इन्फ्लूएंजा की वजह से लोग बीमार हो रहे है।राष्ट्रीय स्वास्थ्य आयोग के प्रवक्ता एमआई फेंग का कहना है कि सर्दियों की छुट्टियां और वसंत महोत्सव के चलते लोगों को ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। क्यों की छुट्टियों के चलते आवाजाही बढ़ेगी, लोग एक जगह इकट्ठा होंगे जिससे संक्रमण तेजी से फैल सकता है। बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं, बच्चों में संक्रमण के तेजी से फैलने का डर है। ऐसे में इनके लिए टीकाकरण की व्यवस्था की जानी चाहिए। विशेषज्ञों का मानना है कि चीन में सर्दी के मौसम में इन्फ्लूएंजा वायरस के मरीज बढ़ेंगे, जिससे जनवरी में कोरोना महामारी फिर से बढ़ सकती है, जिसमें छह।1 वैरिएंट के बढ़ने की ज्यादा संभावना है। चीन के दक्षिणी प्रांतों में अक्टूबर के महीने में इन्फ्लूएंजा की वजह से लोग बीमार पड़े। इसके बाद यहां इन्फ्लूएंजा बी वायरस फैलने लगा। ग्लोबल टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक कुछ प्रांतों में इन्फ्लूएंजा बी वायरस का अनुपात इन्फ्लूएंजा ए से काफी ज्यादा है। विशेषज्ञों की मानें तो इन्फ्लूएंजा ए से संक्रमित होने के बाद इन्फ्लूएंजा बी से लड़ने के लिए लोगों में प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। ऐसे में लोगों को जल्द से जल्द इन्फ्लूएंजा का टीका लगाना जरूरी है। संक्रामक रोग विभाग के निदेशक वांग गुइकियांग का कहना है कि सर्दी के मौसम में ज्यादातर लोगों को सांस लेने में दिक्कत होती है, जिससे बार बार संक्रमण होने का खतरा बना रहता है। ऐसे में इसके तुरंत उपचार की जरूरत है।

सड़क हादसे के दौरान सोमाली क्षेत्र में 11 लोगों की हुई मौत

अदीस अबाबा । पूर्वी इथियोपिया के सोमाली क्षेत्र में एक सड़क दुर्घटना में 11 लोगों की मौत के समाचार मिले हैं। भीषण सड़क दुर्घटना में 12 लोग घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल में भर्ती किया गया है। स्थानीय अधिकारियों ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि यह दुर्घटना रविवार को सोमाली क्षेत्र के फफान क्षेत्र में उस समय हुई जब एक मालवाहक ट्रक एक मिनी बस से टकरा गया। इस टक्कर में 11 लोगों की मौत हो गई और 12 अन्य घायल हो गए। स्थानीय अधिकारियों ने कहा कि 12 घायलों का फिलहाल नजदीकी स्वास्थ्य संस्थानों में इलाज चल रहा है। फिलहाल पुलिस हादसे के संभावित कारणों की जांच कर रही है। बताया जा रहा है कि पूर्वी अफ्रीकी देश में प्रति व्यक्ति कार स्वामित्व दर दुनिया में सबसे कम है, लेकिन घातक यातायात दुर्घटनाएँ अपेक्षाकृत आम दिन में होती ही रहती हैं। जबकि खराब सड़कों, लापरवाही से गाड़ी चलाने, सुरक्षा नियमों को लागू करने में ढिलाई और ड्राइविंग लाइसेंस जारी करने की दोषपूर्ण प्रणाली को इसका कारण बता दिया जाता है।

व्यापार व विकास को बढ़ावा देने डब्ल्यूटीओ में शामिल होगा इराक

बगदाद । इराक के राष्ट्रपति अब्दुल लतीफ राशिद ने कहा कि व्यापार व विकास को बढ़ावा देने के लिए इराक डब्ल्यूटीओ में शामिल होगा। राशिद ने सोमवार को कहा कि उनका लक्ष्य देश की व्यापार प्रणाली को बढ़ावा देने और सतत विकास हासिल करने के लिए विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) में शामिल होना है। राष्ट्रपति कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार राशिद ने डब्ल्यूटीओ में सऊदी प्रतिनिधि सकर अल-मुकबेल के साथ एक बैठक के दौरान यह बात कही। दरअसल मुकबेल संगठन में इराक के विलय को संभालने के लिए एक टीम का नेतृत्व करते हैं। राष्ट्रपति राशिद ने कहा कि इराक डब्ल्यूटीओ में शामिल होने के लिए आवश्यक व्यापार और आर्थिक मानकों को पूरा करने के लिए उत्सुक है और सऊदी टीम को उसके प्रयासों के लिए धन्यवाद भी दिया। इराक के व्यापार मंत्री अतीर अल-घुरैरी ने अल-मुकबेल के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा कि इराक का लक्ष्य सुधारों के माध्यम से वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक प्रभावशाली खिलाड़ी बनना है। वहीं अल-मुकबेल ने कहा कि सऊदी अरब डब्ल्यूटीओ की बोली में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इराक का भरपूर समर्थन करेगा।

आईआरजीसी के मिसाइल हमले में चार की मौत, छह हुए घायल

बगदाद । इराक के अर्ध-स्वायत्त क्षेत्र कुर्दिस्तान की राजधानी अरबील शहर पर ईरान के इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) द्वारा किए गए मिसाइल हमले में चार लोगों की मौत हो गई। वहीं छह लोग घायल हो गए है। क्षेत्रीय सुरक्षा अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी देते हुए बताया ?कि सोमवार को रात 11:30 बजे आईआरजीसी ने अरबील में कई आबादी वाले नागरिक क्षेत्रों पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागीं। शुरुआती रिपोर्टों से पता चला है कि हमले में चार नागरिकों की मौत हो गई और छह घायल हो गए। बयान में कहा गया कि एक स्थिर क्षेत्र के रूप में अरबील कभी भी किसी भी पक्ष के लिए खतरे का स्रोत नहीं रहा है। मिसाइल हमले को कुर्द क्षेत्र और इराक की संप्रभुता का स्पष्ट उल्लंघन बताया गया है। संघीय सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय से ऐसे हमलों के बारे में चुप नहीं रहने का भी आह्वान किया गया है। लोग बता रहे हैं कि अरबील के उत्तरी हिस्से में निर्माणाधीन अमेरिकी वाणिज्य दूतावास के पास आधी रात के आसपास छह विस्फोटों की आवाज सुनी गई थी। इसके बाद आईआरजीसी ने एक बयान में कहा कि उसने क्षेत्र में जासूसी मुख्यालय पर मिसाइल हमले किए हैं। जो कि मिसाइलों द्वारा अपने लक्ष्यों पर किए गए हैं।

ब्रिटेन के पंथ संगठनों ने सिख संस्थाओं को बादल परिवार से मुक्त कराने की मांग की

लंदन। गुरु नानक गुरुद्वारा समैदिक की प्रबंधन समिति और फेडरेशन ऑफ सिख ऑर्गेनाइजेशन यूके ने मांग की है कि सभी सिख संगठनों को बादल परिवार से मुक्त किया जाना चाहिए। इस आशय का प्रस्ताव पारित कर कहा है कि श्री अकाल तख्त साहिब के जत्थेदार शहीद भाई गुरदेव सिंह काउंके के हत्यारों को कड़ी सजा दी जाए। इसके अलावा प्रकाश सिंह बादल और कुछ पुलिस अफसरों पर आरोपियों को संरक्षण देने का आरोप लगाया गया है। साथ ही तख्त साहिब के जत्थेदार भाई रघबीर सिंह से अपील की गई कि वे बादल से फखरे कौम की उपाधि वापस लें और शहीद गुरदेव सिंह काउंके के परिवार को फखरे कौम की उपाधि दें। पंथक नेताओं ने शिरोमणि अकाली दल के उपेक्षित कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे अकाली दल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी सहित पूरे सिख संस्थान को बादल परिवार से मुक्त कराकर सच्चे अर्थों में अकाली बनें। पंथक इकट्ठ दौरान अमरीक सिंह गिल सिख फैडरेशन यूके।, कुलवंत सिंह, जस सिंह, लवशिन्दर सिंह डल्लेवाल यूनाईटिड खालसा दल यूके, जोगा सिंह बब्बर अकाली आर्गेनाइजेशन यूके, कुलदीप सिंह चहेडू सिख फैडरेशन यूके, जसपाल सिंह बैंस अकाली दल अमृतसर यूके , दविन्दरजीत सिंह, बलविन्दर सिंह, मनप्रीत सिंह, चरन सिंह, कुलदीप सिंह प्रधान गुरू नानक गुरदवारा प्रबंधक कमेटी समैदिक ने सिक्ख संगतां नूं सम्बोधन किया। पंथक सम्मेलन में भाई रघबीर सिंह बीरा, भाई जसपाल सिंह, भाई बलविंदर सिंह, भाई हरदीश सिंह और विभिन्न गुरुद्वारों के प्रबंधकों ने भाग लिया।

जंग जीतने के बाद फिलिस्तीनी नागरिकों को सौंप देंगे गाजा

तेल अवीवी। इजराइल और हमास के बीच चल रही जंग अभी रुकी नहीं है और फिलहाल इसके रुकने के आसार भी नहीं दिख रहे हैं। इसी जंग के बीच दूसरे देशों की नजर है कि जंग के बाद गाजा पर किसका शासन होगा। इस सवाल का जवाब इजराइल के रक्षा मंत्री ने दे दिया है। उन्होंने साफ कर दिया है कि गाजा पर फिलिस्तीनी नागरिकों का शासन होगा। इजराइल के रक्षा मंत्री योव गैलेंट ने कहा कि इजराइल के साथ युद्ध समाप्त होने के बाद फिलिस्तीनी गाजा पट्टी पर शासन करेंगे। गैलेंट ने कहा कि फिलिस्तीनी गाजा में रहते हैं और इसलिए भविष्य में वही इस पर शासन करेंगे। भविष्य की गाजा सरकार को गाजा पट्टी से बाहर निकलना होगा। हमास से युद्ध के अंत में गाजा पर कोई सैन्य खतरा नहीं होगा। हमास गाजा पट्टी पर शासन करने और सैन्य बल के रूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होगा। उन्होंने कहा कि भावी सरकार एक नागरिक विकल्प होगी, लेकिन उन्होंने जोर देकर कहा कि इजराइली बलों को नागरिकों की रक्षा के उद्देश्य से ऑपरेशन की स्वतंत्रता होगी।

लास एंजिल्स में एमी अवार्ड के लिए पहुंची ड्रैग कलाकार।

अगले 229 वर्षों तक दुनिया से नहीं मिटेगी गरीबी, सरकारें कर ले कितना भी प्रयास

लंदन । अमीरी और गरीबी, दुनिया में सदियों से चली आ रही है। दुनियाभर में सरकारों के तमाम प्रयासों के बाद भी गरीबी मिट नहीं रही है। पिछले 3 साल में गरीब और बढ़े हैं, जबकि अमीरों की दौलत दोगुना हो गई है। एक रिपोर्ट में इसका खुलासा किया है। रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया के 5 सबसे अमीर शख्स, जिसमें एलन मस्क, बर्नार्ड अरनॉल्ट, जेफ बेजोस, लैरी एलिसन और मार्क जुकरबर्ग ने 2020 के बाद से इनकी संपत्ति दोगुनी होकर 869 बिलियन डॉलर हो गई है। हालांकि, इसी अवधि के भीतर दुनिया में 5 अरब लोग और गरीब हो गए हैं। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि अगर अमीर और गरीबों के बीच यह आर्थिक असमानता और मौजूदा रुझान जारी रहा, तब अगले 229 वर्षों तक दुनिया से गरीबी खत्म नहीं होगी। रिपोर्ट में साफ किया गया हैं कि आगे भी अमीर और गरीब के बीच अंतर बढ़ने की संभावना है। साथ ही अगले 10 वर्षों दुनिया को पहला खरबपति उद्योगपति मिल जाएगा। 52 देशों में, लगभग 80 करोड़ श्रमिकों की औसत वास्तविक मजदूरी में गिरावट आई है। इन श्रमिकों को पिछले 2 वर्षों में संयुक्त रूप से 1.5 ट्रिलियन डॉलर का नुकसान हुआ है। रिपोर्ट में कहा गया कि, पिछले 3 सालों में कोरोना महामारी, रूस-यूक्रेन युद्ध के चलते महंगाई ने अरबों लोगों को गरीब बनाया है। वहीं, दूसरी ओर दुनिया के कुछ गिने-चुने अरबपतियों की दौलत जबरदस्त तरीके से बढ़ी।

मोदी के पास है भारतीय अर्थव्यवथा को बदलने का मौका: फरीद जकारिया

-वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की चर्चा में पीएम मोदी को हिन्दू गौरव भुनाने में सक्षम बताया

दावोस (एजेंसी)। भारत के पीएम नरेन्द्र मोदी के पास भारतीय अर्थव्यवस्था को बदलने का मौका है, वह हिन्दू गौरव भुनाने में सक्षम नेता हैं। यह बात वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की चर्चा में जाने-माने पत्रकार और राजनीतिक विशेषज्ञ फरीद जकारिया ने कही। उन्होंने कहा कि नरेंद्र मोदी के पास एक बहुत शक्तिशाली विरासत छोड़ने और जवाहरलाल नेहरू के बाद सबसे महत्वपूर्ण भारतीय प्रधानमंत्री बनने का मौका है। दावोस में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के मौके पर मीडिया से बात करते हुए फरीद जकारिया ने कहा कि पीएम मोदी के पास भारत की अर्थव्यवस्था को बदलने का मौका है जो अभी भी बहुत संरक्षणवादी (प्रोटेक्शनिस्ट) है। मैं येल बोर्ड में था। तब हमने देखा कि भारत में बहुत सारे पिछड़े औपनिवेशिक, उत्तर-औपनिवेशिक नियम हैं जो विदेशी यूनिवर्सिटियों पर शक करते हैं। भारत में टैरिफ अभी भी बहुत हाई हैं और भारत दुनिया में सबसे बड़ी प्रोटेक्शनिस्ट अर्थव्यवस्था है।

पत्रकार फरीद जकारिया ने कहा कि पीएम मोदी के पास नेहरू के बाद सबसे महत्वपूर्ण भारतीय पीएम के रूप में इतिहास में अपना नाम दर्ज कराने का मौका है। मुझे लगता है कि उनके लिए नेहरू से आगे निकलना कठिन होगा क्योंकि नेहरू भारत के पहले पीएम थे। और यह उन्हें उस व्यक्ति के रूप में एक अद्वितीय दर्जा देता है जिसने आधुनिक भारत और विशेष रूप से आधुनिक भारतीय लोकतंत्र की स्थापना की। लेकिन फिर भी मोदी के पास एक बहुत शक्तिशाली विरासत छोड़ने का मौका है। जकारिया ने कहा कि मुझे लगता है कि वह शायद दुनिया भर के इन सभी चुनावों में सबसे मजबूत स्थिति में हैं, क्यों? भारत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। इसमें कुछ मोदी और उनकी नीतियां हैं और आपको इसका श्रेय उन्हें देना होगा। इसमें से 20 साल के सुधार भी शामिल हैं, जो भारत को एक निश्चित गति देने में सक्षम हैं।

पीएम मोदी ने भारतीयों के एक बड़े वर्ग हिंदू गौरव की नब्ज को समझ लिया है। वे एक सामान्य हिन्दू के मन में पैदा होने वाले गौरव को समझते हैं पीएम भारत के एलीट वर्ग के बाहर से आते हैं। वह पहले नॉन इलीटिस्ट प्रधानमंत्री हैं। आप नेहरू, गांधी परिवार, नरसिम्हा राव यहां तक की मनमोहन सिंह के बारे में सोचें तो वे सभी शिक्षा के आधार पर एक खास प्रकार की एलिट पृष्ठभूमि से आते थे, लेकिन नरेंद्र मोदी एक सामान्य हिंदू की नब्ज को समझते हैं। वे चाहते हैं कि वो इसका इस्तेमाल पॉजिटिव रूप में करें न कि लोगों को अलग-थलग करने में करें, वह इसका उपयोग सभी को ऊपर लाने के लिए भी कर सकते हैं।

किम जोंग उन ने दी दक्षिण कोरिया को नक्शे से मिटा देने की धमकी

सियोल (एजेंसी)। उत्तर कोरिया के तानाशाह किम जोंग उन ने दक्षिण कोरिया को नक्शे से मिटा देने की धमकी दे डाली है। उनकी यह हरकत काफी चर्चा में हैं। इतना ही नहीं उन्होंने सोमवार को एक अलग देश के रूप में दक्षिण कोरिया की स्थिति को बदलने के लिए एक संवैधानिक संशोधन का आह्वान किया। हालांकि उन्होंने कहा कि उनका देश युद्ध नहीं चाहता है, लेकिन उसका इरादा इसे टालने का भी नहीं है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक उत्तर कोरिया की रबर-स्टैंप संसद, सुप्रीम पीपुल्स असेंबली में एक भाषण में किम ने कहा कि यह उनका अंतिम फैसला है कि दक्षिण के साथ एकीकरण अब संभव नहीं है। जबकि उन्होंने दक्षिण कोरिया पर शासन के पतन और अवशोषण द्वारा एकीकरण की मांग करने का आरोप लगाया। किम ने आगे कहा कि हम युद्ध नहीं चाहते लेकिन इसे टालने का हमारा कोई इरादा नहीं है। मीडिया रिपोर्ट में कहा कि एकीकरण और अंतर-कोरियाई पर्यटन से जुड़े तीन संगठन बंद हो जाएंगे।

हालांकि यह कदम तब उठाया गया है जब कोरियाई प्रायद्वीप में हाल ही में मिसाइल परीक्षणों की एक श्रृंखला और प्योंगयांग द्वारा दशकों से चली आ रही नीति को तोड़ने और दक्षिण से अपने संबंध को बदलने के दबाव के कारण तनाव बढ़ गया है। जानकारों का मानना है कि उत्तर कोरिया का विदेश मंत्रालय दक्षिण कोरिया के साथ संबंधों को अपने हाथ में ले सकता है। वहीं विश्लेषकों ने कहा है कि उत्तर कोरिया का विदेश मंत्रालय सियोल के साथ संबंधों को अपने हाथ में ले सकता है, और संभावित रूप से भविष्य के युद्ध में दक्षिण कोरिया के खिलाफ परमाणु हथियारों के इस्तेमाल को उचित ठहराने में मदद कर सकता है।

जर्मनी में किसानों के प्रदर्शन से राजधानी बर्लिन का आवागमन बंद

बर्लिन । जर्मन की सरकार द्वारा किसानों की कृषि सब्सिडी में कटौती कर दी गई है। डीजल पर मिलने वाली छूट को समाप्त कर दिया है। कृषि पर टैक्स लगा दिया गया है।इसको लेकर जर्मनी के किसानों ने राजधानी बर्लिन को पूरी तरह से बंधक बना लिया है। पिछले कई दिनों से हजारों किसान ट्रैक्टर लेकर बर्लिन की राजधानी पहुंच रहे हैं। दिसंबर माह से यह आंदोलन पूरी जर्मनी में चल रहा है। पहले यह आंदोलन जगह-जगह हो रहा था। सरकार द्वारा सब्सिडी के संबंध में कोई निर्णय नहीं लिए जाने के बाद अब किसान राजधानी की ओर कूच कर रहे हैं। किसानों ने राजधानी को चारों ओर से घेरने की घोषणा की है। किसानों के इस आंदोलन से पूरी जर्मनी में अफरा तफरी का माहौल बन गया है।

दुनियाभर से हमास ने इकट्ठे किए हथियार, कई बड़े देश बने सहयोगी

गाजा (एजेंसी)। इजरायल पर अचानक हमला वाले हमास ने दुनियाभर से हथियार इकट्ठे किए और उन्हें हमले में इस्तेमाल किया। इन ह?थियरों की सप्लाई में कई बड़े देशों का नाम आ रहा है, लेकिन कोई भी खुलकर सामने नहीं आ रहा है। जानकारी के अनुसार हमास के पास घातक हथियारों के जखीरे का पता चला है। इनमें ईरानी स्नाइपर राइफलें, चीन और रूस में बने एके-47 असॉल्ट राइफलें और उत्तर कोरियाई-ब्लोरियाई रॉकेट लैस ग्रेनेड प्रमुख हैं। इनके साथ एंटी-टैंक रॉकेट भी गाजा में गुप्त रूप से एक साथ जमा किए गए थे। हमास ने इजरायल पर पिछले साल 7 अक्टूबर को धावा बोला था। यह लड़ाई अभी तक चल रही है। करीब तीन महीनों की लड़ाई में लिए गए 150 से अधिक वीडियो और तस्वीरों का परीक्षण भी किया गया है। इससे पता चलता है कि आतंकवादी समूह ने दुनिया भर से हथियारों का जखीरा इकट्ठा किया। बताया जा रहा है कि इनमें से ज्यादातर हथियार पिछले कुछ वर्षों में तस्करी करके लाए गए हैं जो गाजा में हफ्तों चले भीषण युद्ध के दौरान घातक साबित हुए। जहां हमास के लड़ाके आम तौर पर केवल उन्हीं चीजों से लैस होते हैं जो वे ले जा सकते हैं।

गौरतलब है कि हथियारों और टेक्नोलॉजी में आगे इजरायली सैनिक के खिलाफ वे हिट-एंड-रन रणनीति अपनाते रहे हैं। पिछले कुछ हफ्तों में हमास की ओर से कुछ वीडियो पोस्ट किए गए हैं। इनमें स्नाइपर राइफलों के जरिए रिकॉर्ड किए गए दृश्य नजर आ रहे हैं, जहां इजरायली सैनिकों की गोलीबारी दिखाई देती है। हमास के प्रवक्ता गाजी हमद ने हाल ही कहा था कि हम हर जगह से हथियारों की ताक में हैं। हम राजनीतिक समर्थन की तलाश कर रहे हैं और पैसे की भी जरूरत है। हालांकि, इस दौरान उन्होंने यह बताने से इनकार कर दिया कि उन्हें हथियार कौन मुहैया करा रहा है और उन्हें गाजा तक कैसे ले जाया जा रहा है।

आयोवा कॉकस जीतने के बाद डोनाल्ड ट्रंप का पहला रिएक्शन, दुनिया के लिए एक साथ आएं रिपब्लिकन हो या डेमोक्रेट या लिबरल

आयोवा (एजेंसी)। आयोवा कॉकस जीतने के बाद डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने समर्थकों से कहा कि यह अच्छा होगा यदि हर कोई एक साथ आ सके और दुनिया को ठीक कर सके और जो समस्याएं और मौत और विनाश देख रहा है उसे ठीक कर सके। आयोवा कॉकस में अपनी जीत के तुरंत बाद अपने भाषण में पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ने सभी राजनीतिक विचारधाराओं के अमेरिकियों के एक साथ आने का आह्वान किया और मौजूदा जो बाइडेन के खिलाफ अपना हमला जारी रखते हुए उन्हें अब तक का सबसे खराब राष्ट्रपति कहा। मुझे सच में लगता है कि अब समय आ गया है कि हमारे देश के सभी लोग एक साथ आएं, चाहे वह रिपब्लिकन हो या डेमोक्रेट या लिबरल या कंजर्वेटिव हो।

रिपब्लिकन पार्टी के प्रबल दावेदार के रूप में उभरे ट्रंप सोमवार शाम को आयोवा राज्य की राजधानी डेस मोइनेस में अपने अभियान की वॉच पार्टी में अपने समर्थकों को संबोधित कर रहे थे। लगातार तीसरी बार रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद का नामांकन जीतने की दिशा में यह उनका पहला आधिकारिक कदम है। ट्रंप ने कहा कि यह बहुत अच्छा होगा यदि हम एक साथ आ सकें और दुनिया को सीधा कर सकें, और समस्याओं को सुलझा सकें,

और उस सभी मौत और विनाश को सीधा कर सकें जो हम देख रहे हैं, जो व्यावहारिक रूप से कभी भी ऐसा नहीं था। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने राष्ट्रपति पद के आगामी चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी का उम्मीदवार चुनने की लंबी प्रक्रिया की शुरुआत करने वाले आयोवा कॉकस में जीत हासिल कर ली। आयोवा कॉकस में दूसरे स्थान के लिए फ्लोरिडा के गवर्नर आर डीसैंटिस और पार्टी का उम्मीदवार बनने की दौड़ में शामिल इकलौती महिला एवं संयुक्त राष्ट्र की पूर्व राजदूत निक्की हेली के बीच मुकाबला है। डीसैंटिस और हेली पूर्व राष्ट्रपति के शीर्ष विकल्प के तौर पर एक दूसरे को टक्कर दे रहे हैं।

इरान में विदेश मंत्री जयशंकर ने भारतीय जहाजों पर हुए हमलों को बताया चिंताजनक

तहरान (एजेंसी)। भारतीय जहाजों पर हुए हमलों को लेकर भारत ने इरान के सामने ने केवल चिंता व्यक्त की बल्कि साफकह भी दिया है कि इस तरह की घटनाएं पूरी दुनिया के लिए चिंताजनक हैं। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपने ईरान दौरे पर भारत के आसपास पोतों पर हमलों को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए गंभीर चिंता का विषय बताते हुए कहा कि ऐसे खतरों का भारत की ऊर्जा जरूरतों और आर्थिक हितों पर सीधा असर पड़ता है। जयशंकर ने ईरान के अपने समकक्ष हुसैन अमीर अब्दुल्लाहियान के साथ बातचीत के बाद एक संयुक्त प्रेस बयान जारी किया। इसमें विदेश मंत्री ने कहा कि हाल में हिंद महासागर के इस महत्वपूर्ण हिस्से में समुद्री वाणिज्यिक यातायात की सुरक्षा के लिए खतरे काफी बढ़ रहे है। उन्होंने इजराइल-हमास संघर्ष के बीच ईरान समर्थित यमन के हूती विद्रोहियों द्वारा सबसे व्यस्त व्यापार मार्गों में शामिल लाल सागर में वाणिज्यिक पोतों को निशाना बनाने पर इस बात पर जोर दिया कि यह महत्वपूर्ण है कि इस मुद्दे से तत्काल निपटा जाए।

दरअसल विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ईरान के समकक्ष होसैन अमीर-अब्दुल्लाहियन से मुलाकात की और उनकी चर्चा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चाबहार बंदरगाह और उत्तर-दक्षिण कनेक्टिविटी परियोजना में भारत की भागीदारी पर केंद्रित थी। जयशंकर दोनों पक्षों के बीच जारी उच्च स्तरीय संवाद के तहत ईरान के दौरे पर हैं। उन्होंने ईरान के राष्ट्रपति डॉ इब्राहिम रईसी से भी मुलाकात की और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की शुभकामनाएं दीं। जयशंकर ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि,आज तेहरान में ईरानी विदेश मंत्री अमीर-अब्दुल्लाहियन के साथ चर्चा हुई। हमारी बातचीत चाबहार बंदरगाह और आईएनएसटीसी कनेक्टिविटी परियोजना के साथ भारत की भागीदारी के लिए दीर्घकालिक ढांचे पर केंद्रित थी। उन्होंने क्षेत्र में समुद्री हमलों पर भी बात की और जोर देकर कहा कि इस मुद्दे का तेजी से समाधान किया जाए।अमेरिका और ब्रिटेन ने यमन में हूती ठिकानों को निशाना बनाकर हवाई हमले किए हैं।

इससे पहले जयशंकर ने अपने ईरान में सड़क और शहरी विकास मंत्री मेहरदाद बज़्रपाश से मुलाकात करके अपने कार्यक्रम की शुरुआत की थी। मुलाकात के दौरान दोनों पक्षों ने रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण चाबहार बंदरगाह पर दीर्घकालिक सहयोग ढांचा स्थापित करने पर विस्तृत और सार्थक चर्चा की थी। जयशंकर ने बज़्रपाश के साथ अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (आईएनएसटीसी) पर भी बातचीत की। भारत क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देने के लिए चाबहार बंदरगाह परियोजना पर जोर दे रहा है, खासकर अफ़ग़ानिस्तान से इसके संपर्क के लिए। ताशकंद में 2021 में एक संपर्क (कनेक्टिविटी) सम्मेलन में जयशंकर ने चाबहार बंदरगाह को अफ़ग़ानिस्तान सहित एक

प्रमुख क्षेत्रीय पारगमन केंद्र के रूप में पेश किया था। चाबहार बंदरगाह को आईएनएसटीसी परियोजना के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में भी देखा जाता है।

वहीं भारत लाल सागर में उभरती स्थिति पर करीब से नजर रख रहा है। जयशंकर और अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन के बीच फोन पर हुई बातचीत में यह मुद्दा उठा था। जयशंकर ने ईरानी विदेश मंत्री के साथ बैठक के बाद कहा कि एजेंडे में अन्य मुद्दे गाजा, अफ़ग़ानिस्तान, यूक्रेन और ब्रिक्स सहयोग थे। बाद में, उन्होंने ईरानी राष्ट्रपति रईसी से मुलाकात की और उन्हें ईरानी मंत्रियों के साथ अपनी सार्थक चर्चा से अवगत कराया। जयशंकर ने कहा कि इस्लामिक गणराज्य ईरान के राष्ट्रपति डॉ इब्राहिम रईसी से मुलाकात कर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। ईरान की समाचार एजेंसी ने कहा कि उन्होंने क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय घटनाक्रम पर भी चर्चा की।

अफगानिस्तान के खिलाफ क्लीन स्वीप के इरादे से उतरेगी भारतीय टीम

बेंगलुरू (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम बुधवार को यहां अफगानिस्तान को तीसरे और अंतिम टी20 मैच में भी हराकर 3-0 से सीरीज जीतने के इरादे से उतरेगी। भारतीय टीम ने पहले ही दो मैच आसानी से जीते हैं, ऐसे में वह इस तीसरे मैच में भी जीत की प्रबल दावेदार नजर आती है। आगामी टी20 विश्व कप को देखते हुए ये भारतीय टीम का अंतिम मैच है। ऐसे में सभी खिलाड़ी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना चाहेंगे। इस मैच में उन खिलाड़ियों को भी अवसर मिल सकता है जो अभी तक बेंच पर रहे हैं। भारतीय टीम पहले दोनो ही मैचों की तरह ही इस मैच में भी अपनी आक्रामक रणनीति से ही उतरेगी।

अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली ने इंदौर में 16 गेंद में 29 रन बनाए और ऐसे में वह इस मैच में बड़ा स्कोर बनाना चाहेंगे। उन्होंने अफगानिस्तान के खिलाफ मैच में स्पिनरों का भी आसानी से मुकाबला करते हुए तेजी से रन बनाये। वह आम तौर पर स्पिनरों के खिलाफ धीमा खेलते हैं पर इस मैच में वह अलग ही अंदाज में नजर आये। इसके अलावा शिवम दुबे और यशस्वी जायसवाल भी इस मैच में बेहतर प्रदर्शन करना चाहेंगे।

भारत की नजरें इस मैच में भी अपने युवा खिलाड़ियों पर रहेंगी। पहले दो मैचों में विफल रहे कप्तान रोहित शर्मा इस मैच में बड़ी पारी खेलकर लय हासिल करना चाहेंगे। वह पहले मैच में रन आउट हो गए जबकि दूसरे मैच में शुरुआत में ही आउट हो गये थे। रोहित के फॉर्म से टीम प्रबंधन चिंतित नहीं होगा पर अंतिम मैच में सभी उनसे बड़ी पारी की उम्मीद करेंगे। इस मैच में स्पिनर कुलदीप यादव और तेज गेंदबाज आवेश खान को अवसर मिल सकता है।

कुलदीप के आने पर रवि बिश्नोई या वॉशिंगटन सुंदर में से किसी एक को बाहर बैठना पड़ेगा जबकि आवेश को मुकेश कुमार की जगह अवसर मिल सकता है। इसके अलावा विकेटकीपर बल्लेबाज जितेश शर्मा ने

पिछले कुछ समय से लगातार खेला है। ऐसे में उनकी जगह पर विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन को शामिल किया जा सकता है। दूसरी ओर अफगानिस्तान की टीम इस मैच में अपनी पूरी ताकत लगा देगी। उसका लक्ष्य अपनी गेंदबाजी और बल्लेबाजी को बेहतर करना रहेगा। टीम को सलामी बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज के अलावा इब्राहिम जदरान और हजरतुल्लाह जजई से बेहतर प्रदर्शन की उम्मीदें रहेंगी। अफगानिस्तान टीम अब तक के दोनो ही मैचों में भारतीय गेंदबाजी और बल्लेबाजी के सामने कहीं नहीं टिकी। उसे इस सीरीज में अपने स्टार स्पिनर राशिद खान की कमी भी खली है। इसके बाद भी टीम को इस सीरीज से सीखने को काफी कुछ मिला है।

टीम

भारत - रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, यशस्वी जायसवाल, विराट कोहली, तिलक वर्मा, रिंकू सिंह, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), संजू सैमसन (विकेटकीपर), शिवम दुबे, वाशिंगटन सुंदर, अक्षर पटेल, रवि बिश्नोई, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, आवेश खान, मुकेश कुमार।

अफगानिस्तान - इब्राहिम जदरान (कप्तान), रहमानुल्लाह गुरबाज (विकेटकीपर), इकराम अलीखिल (विकेटकीपर), हजरतुल्लाह जजई, रहमत शाह, नजीबुल्लाह जादरान, मोहम्मद नबी, करीम जनत, अजमतुल्लाह उमरजई, शराफुद्दीन अशरफ, मुजीब उर रहमान, फजलहक फारूकी, फरीद अहमद , नवीन उल हक, नूर अहमद, मोहम्मद सलीम, कैस अहमद, गुलबदीन नायब, राशिद खान।

एग्नेस नगेटिच ने 10 किमी दौड़ में विश्व रिकॉर्ड तोड़ा, 29 मिनट से भी कम समय में पूरी की रेस

बार्सिलोना (एजेंसी)। केन्या की एग्नेस नगेटिच ने स्पेन में वालेंसिया इबरकाजा रोड रेस जीतकर 29 मिनट से कम समय में 10 किमी दौड़ने वाली पहली महिला बन गईं हैं। 22 वर्षीय खिलाड़ी ने 28 मिनट 46 सेकंड में रेस पूरी की और इथियोपिया के यालेमज़र्फ येहुआलाव के 2022 रोड वर्ल्ड रिकॉर्ड को तोड़ दिया। हमवतन इमैक्युलेट आन्यांगो ने भी 29 मिनट से कम समय में दौड़ लगाई और 28:57 में दूसरे स्थान पर रहे।

नगेटिच ने महिलाओं की एकमात्र दौड़ में बीट्राइस चेबेट के 5 किमी के 14:13 के विश्व रिकॉर्ड की बराबरी भी की जिसे उन्होंने दो सप्ताह पहले बनाया था। नगेटिच के 10 किमी के समय ने महिलाओं के 10,000 मीटर ट्रैक के 29:01.03 के विश्व रिकॉर्ड को तोड़ा जो इथियोपिया की लेटेसेनबेट गिडी के पास था। नगेटिच ने सितंबर में महिलाओं की एकमात्र दौड़ में 29:24 के समय के साथ 10 किमी का विश्व रिकॉर्ड बनाया था।

नगेटिच ने कहा, 'मैं बहुत खुश हूं। ईमानदारी से कहूं तो, मेरा स्पष्ट लक्ष्य विश्व रिकॉर्ड तोड़ना था लेकिन 28:46 किसी भी उम्मीद से परे है। जब मैंने आधे रास्ते में 14:13 देखा तो मैं डरी नहीं, इसने मुझे अंत तक प्रयास जारी रखने के लिए बहुत प्रेरित किया।'

अब वह मार्च में विश्व एथलेटिक्स क्रॉस कंट्री चैंपियनशिप बेलग्रेड 24 और फिर पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों पर ध्यान केंद्रित करेंगी, जहां अगस्त में एथलेटिक्स नंबर 1 खेल होगा। उन्होंने कहा, 'मैं बेलग्रेड के लिए केन्याई ट्रायल करूंगी, जहां मैं पिछले साल के अपने कांस्य पदक में सुधार करना चाहूंगी।'

पार्थिव पटेल का जितेश शर्मा को लेकर बड़ा दावा, कहा- 'उनका टी20 वर्ल्ड कप में खेलना लगभग तय'

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज पार्थिव पटेल का मानना है कि युवा क्रिकेटर जितेश शर्मा का टी20 वर्ल्ड कप 2024 टीम में जगह बनाना लगभग तय है। इसका कारण जितेश का तेज अंदाज में बल्लेबाजी करना नहीं, बल्कि संयोजन है।

पूर्व भारतीय क्रिकेटर के अनुसार, जितेश शर्मा वही भूमिका रहे हैं जो 2022 वर्ल्ड कप में दिनेश कार्तिक ने निभाई थी। वह निचले क्रम में बल्लेबाजी कर रहे हैं जितेश ने अफगानिस्तान के खिलाफ पहले टी20 में 20 गेंदों में ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 31 रन बनाए थे जबकि दूसरे मैच में वह बिना खाता खोले ही आउट हो गए।

पार्थिव पटेल ने जियो सिनेमा से कहा कि, भारत का विकल्प शायद एक ऐसा विकेटकीपर रखना है जो निचले क्रम में बल्लेबाजी कर सके। अगर आपको निचले क्रम पर बल्लेबाजी करनी है तो आपको एक विनाशकारी बल्लेबाज की जरूरत है। जितेश शर्मा जिस तरह से खेल रहे हैं वह एक बेहद अच्छा विकल्प हैं और मुझे लगता है कि टी20 वर्ल्ड कप के लिए उनका टिकट थोड़ा छपना शुरू हो गया है।

टी20 में रोहित शर्मा और विराट कोहली की वापसी के साथ, भारतीय टीम प्रबंधन के लिए चयन सिरदर्द बना हुआ है। सीधे शब्दों में कहें तो कोहली-रोहित ने सुनिश्चित किया है कि शीर्ष क्रम में किसी और को मौका न मिले। इसलिए, ईशान किशन और संजू सैमसन का भी प्लेइंग इलेवन में जगह बनाना संदिग्ध है क्योंकि दोनों टॉप 5 में बल्लेबाजी करते हैं।

इससे फिनिशर के लिए फिनिशर के लिए विकल्प खुला रह जाता है जो फिनिशर की भूमिका बखूबी निभा सकता है। जितेश शर्मा ने अभी तक अच्छा प्रदर्शन किया है। हालांकि, उन्होंने लगातार 20 और 30 रन नहीं बनाए हैं, लेकिन उन्होंने 20 गेंदों में 31, 19 गेंदों में 35 और 16 गेंदों में 24 रन जैसी पारियां खेली हैं।

दीप्ति शर्मा को आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ खिताब से नवाजा गया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय स्टार ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा को दिसंबर 2023 के लिए आईसीसी महिला खिलाड़ी ऑफ द मंथ चुना गया है। इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दो टेस्ट मैचों में उनके शानदार प्रदर्शन और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे मैच में शानदार प्रदर्शन ने उन्हें ये खिताब दिलाया। इंग्लैंड पर टेस्ट जीत में, नंबर 7 पर बल्लेबाजी करते हुए दीप्ति ने अहम भूमिका निभाते हुए 67 रन बनाए और गेंद से 7 रन पर 5 विकेट और 32 रन पर 4 विकेट झटके।

पिछले साल दिसंबर के महीने में दीप्ति ने 2 टेस्ट मैच इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले थे। इन 2 मुकाबलों में इस खिलाड़ी ने 55 की शानदार औसत के साथ 165 रन बनाए थे। वहीं 10.81 की शानदार औसत के साथ 11 विकेट भी झटके थे। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ दीप्ति ने दूसरे वनडे में 5 विकेट हॉल भी लिए थे। दीप्ति के अलावा जेमिमा रोड्रिगेज और जिम्बाब्वे क्रिकेट टीम की प्रेशियस मरांज भी नामांकित हुई थीं।

चयन समिति में बदलाव के लिए बीसीसीआई ने दिया विज्ञापन

मुम्बई । भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने चयन समिति में बदलाव के लिए आवेदन मांगे हैं। बीसीसीआई की चयन समिति में अभी पांच सदस्य हैं जिसमें से किसी एक को हटाया जा सकता है। अजित आगरकर अभी चयन समिति के अध्यक्ष हैं जबकि सलिल अंकोला, शिवसुंदर दास, एस. शरथ और सुब्रतो बनर्जी हैं इसके सदस्य हैं। बीसीसीआई ने चयन समिति के सदस्य के लिए विज्ञापन भी जारी किया है। बीसीसीआई ने हालांकि यह जानकारी नहीं दी है कि चयन समिति में से किसे हटाया जा सकता है। बीसीसीआई नियमों के अनुसार चयन समिति में हर क्षेत्र का एक सदस्य होता है पर अभी इस चयन समिति में पश्चिमी क्षेत्र से दो सदस्य अजित आगरकर और सलिल अंकोला ही हैं जबकि उत्तरी क्षेत्र से कोई सदस्य नहीं हैं। वहीं शिवसुंदर दास, एस. शरथ और सुब्रतो बनर्जी पूर्वी , दक्षिण और मध्य क्षेत्र के सदस्य हैं। अब चयन समिति में से एक सदस्य उत्तरी क्षेत्र से लिया जा सकता है क्योंकि चेतन शर्मा के इस्तीफे के बाद से ही ये खाली है। पश्चिमी क्षेत्र के अभी दो सदस्य हैं मुख्य चयनकर्ता अजित आगरकर और अंकोला। ऐसे में अंकोला की जगह पर किसी नये सदस्य को लिया जा सकता है।

विराट और अनुष्का को प्राण प्रतिष्ठा के लिए आमंत्रण मिला

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली को अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाली रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए आमंत्रण मिला है। विराट कोहली और उनकी पत्नी अनुष्का शर्मा को उनके घर पर ये न्यौता दिया गया। इसकी तस्वीरें भी सामने आई है। जिसमें निमंत्रण पाकर दोनों काफी खुश दिखे। वहीं इससे पहले पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी और तीरंदाज दीपिका कुमारी को भी प्राण प्रतिष्ठा के लिए निमंत्रण मिला था। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट प्राण प्रतिष्ठा के लिए सभी क्षेत्रों

की प्रमुख हस्तियों को आमंत्रित कर रहा है।

इससे पहले श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने कहा कि मैसूर स्थित अरुण योगीराज द्वारा बनाई गई राम लला की एक नई मूर्ति को अयोध्या में राम मंदिर में स्थापना के लिए चुना गया है और 18 जनवरी को इसे श्री रामजन्मभूमि तीर्थ पर गर्भगृह में स्थापित किया जाएगा। राय ने कहा कि 22 जनवरी को अयोध्या धाम में अपने नव्य भव्य मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम और पूजन विधि 16 जनवरी से शुरू हो जाएगी, जबकि जिस प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की जानी है, उसे 18 जनवरी को गर्भ गृह में अपने आसन पर खड़ा कर दिया जाएगा।

रोहित टी20 में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले दूसरे बल्लेबाज

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान कप्तान रोहित शर्मा की टी20 प्रारुप में वापसी अब तक सफल नहीं रही है। रोहित अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज के पहले ही दो मैच में खाता नहीं खोल पाये। इससे उनके फार्म पर सवाल उठने लगे हैं। रोहित पहले मुकाबले में बिना कोई रन बनाए दूसरी गेंद पर ही रन आउट हो गये। वहीं दूसरे मुकाबले में भी पहली गेंद पर वह साफ बोल्ड हो गए। इस प्रकार रोहित के नाम एक ऐसा रिकार्ड जुड़ गया है जो वह नहीं चाहते थे। रोहित अब टी20 प्रारुप में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने वाले बल्लेबाजों में दूसरे नंबर पर पहुंच गये हैं। वहीं आयरलैंड के पॉल स्टारलिन सबसे ज्यादा बार टी20 अंतरराष्ट्रीय में शून्य पर आउट होने वाले बल्लेबाज हैं। स्टारलिन 13 बार उनके इस प्रारुप में खाता नहीं खोल पाये थे जबकि रोहित 12 बार शून्य पर आउट हुए हैं। अब रोहित को तीसरे मुकाबले में रन बनाने होंगे क्योंकि आगामी विश्वपक को देखते हुए उन्हें ही कप्तानी की जिम्मेदारी मिलने की उम्मीद है। भारतीय टीम की तरफ से कप्तान के तौर पर खेलते हुए रोहित टी20 में सबसे ज्यादा छह बार शून्य पर आउट हुए हैं जबकि दूसरे नंबर पर रहे लोकेश राहुल पांच बार खाता नहीं खोल पाये।

टीम इंडिया को मिला हार्दिक का विकल्प, कमाल कर रहा शिवम का बल्ला

--चौके-छक्कों से होती है शुरुआत, मैच में ठोंक रहा फिफ्टी पर फिफ्टी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम को अब हार्दिक पंड्या का विकल्प मिल गया है। क्रिकेट का धाकड़ ऑलराउंडर शिवम दुबे इन दिनों खूब चौके-छक्के मार रहा है। जानकार बता रहे हैं कि यदि चोटिल होने की वजह से हार्दिक बाहर भी रहते हैं तो टीम इंडिया को यह बल्लेबाज आईसीसी टी20 विश्व कप जिता देगा। जाहिर है कि शिवम ने आईसीसी टी20 विश्व कप से पहले अपनी आखिरी सीरीज में गजब का खेल दिखाया है। तीन मैचों की सीरीज में लगातार दूसरी जीत दर्ज करने के साथ ही अफगानिस्तान के खिलाफ अजेय बढ़त से ट्रॉफी पर कब्जा जमाया है। भारत के लिए अच्छी खबर यह है कि वर्ल्ड कप जैसे बड़े टूर्नामेंट से पहले ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या का तगड़ा विकल्प मिल चुका है। लगातार चोटिल होने वाले इस खिलाड़ी को फिफ्टी पर फिफ्टी जड़ने वाला खूंखार ऑलराउंडर रिप्लेस करने को तैयार है। भारत ने अफगानिस्तान के खिलाफ उम्मीद के

मुताबिक धुंआधार खेल दिखाया है। तीन मैचों की सीरीज के शुरुआती दो मुकाबलों में एकतरफा जीत के साथ ही अजेय बढ़त हासिल कर ली है। पहला मैच 6 विकेट से जीतने के बाद दूसरे मुकाबले में भी इतनी ही बड़ी जीत दर्ज की।

हालांकि इन दोनों ही मुकाबले में भारत के लिए टीम में वापसी कर रहे ऑलराउंडर ने फिफ्टी लगाई है। इसी तरह रविवार 14 जनवरी को पहले बल्लेबाजी करते हुए 172 रन का स्कोर खड़ा किया। जवाब में टीम इंडिया ने यशस्वी जायसवाल की तूफानी फिफ्टी के बाद शिवम दुबे की धुंआधार पारी के दम पर 15.4 ओवर में 4 विकेट गंवाकर ही जीत दर्ज कर ली। भारत के पास तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर के तौर पर अब तक हार्दिक पंड्या पहली पसंद हुआ करते थे। डेब्यू के बाद से ही लगातार चोटिल होने की वजह से वह टीम से ज्यादातर बाहर ही बैठे हैं। अब आईसीसी टी20 विश्व कप में भी वह उपलब्ध नहीं हो पाए तो रोहित शर्मा के पास शिवम दूबे जैसा धाकड़ ऑलराउंड है जिसने वापसी के बाद मैच में टॉप फॉर्म दिखाया है।

बता दें कि टीम इंडिया के लिए 2019 में टी20 डेब्यू करने के बाद शिवम दुबे ने अब दमदार वापसी की है। अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज के पहले दो मैच में इस खिलाड़ी ने धमाकेदार बल्लेबाज कर लगातार फिफ्टी लगाई है। शिवम ने मोहाली टी20 में 40 गेंद पर नाबाद 60 रन और फिर इंदौर में 32 बॉल पर 63 रन की नॉटआउट पारी खेल इस ऑलराउंडर ने बेहतरीन वापसी की है। टी20 वर्ल्ड कप से पहले भारत के लिए वह विकेट भी चटका रहे हैं। उनका फॉर्म टीम इंडिया के लिए फैंस को राहत देने वाला है।

मेस्सी 8वीं बार बने फीफा के सर्वश्रेष्ठ पुरूष खिलाड़ी, टाइब्रेकर मुकाबले में हालैंड को हराया

लंदन। अर्जेंटीना के लियोनेल मेस्सी ने अर्लिंग हालैंड को टाइब्रेकर में हराकर फीफा के सर्वश्रेष्ठ पुरुष फुटबॉलर का पुरस्कार जीता। राष्ट्रीय टीम के कोचों, कप्तानों, चुनिंदा पत्रकारों और प्रशंसकों द्वारा आनलाइन की गई वोटिंग के आधार पर मेस्सी और हालैंड दोनों को 48 अंक मिले। टाइब्रेकर में फैसला राष्ट्रीय टीमों

के कप्तानों द्वारा '5 प्वाइंट' स्कोर या पहले स्थान पर रखे जाने के आधार पर किया गया। मेस्सी को 15 साल में आठवीं बार यह पुरस्कार मिला है। काइलियान एमबाप्पे तीसरे स्थान पर रहे। कोई भी खिलाड़ी पुरस्कार लेने नहीं पहुंचा था। पेरिस सेंट जर्मेन छोड़कर इंटर मियामी से जुड़े मेस्सी ने पिछले साल अक्टूबर में हालैंड और एमबाप्पे को हराकर आठवीं बार बलोन डिओर पुरस्कार जीता था। महिला वर्ग में स्पेन की विश्व कप चैम्पियन ऐताना बोनमाती को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया । उन्होंने पिछले साल बलोन डिओर भी जीता था। वह विश्व कप और चैम्पियंस लीग दोनों में प्लेयर आफ द टूर्नामेंट रही थीं। मैनचेस्टर युनाइटेड के कोच पेप गार्डियोला को पुरुष वर्ग में सर्वश्रेष्ठ कोच और इंग्लैंड की सरीना वीगमैन को महिला वर्ग में सर्वश्रेष्ठ कोच का पुरस्कार मिला।

इंडिया ओपन में जीत के साथ प्रणय की बेहतरीन शुरुआत, प्रियांशु ने लक्ष्य को बाहर किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के शीर्ष खिलाड़ी और आठवें वरीय एचएस प्रणय ने मंगलवार को इंडिया ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत रोमांचक मुकाबले में सीधे गेम में जीत के साथ की जबकि प्रियांशु राजावत ने पुरुष एकल में पहला गेम गंवाने के बाद जोरदार वापसी करते हुए हमवतन लक्ष्य सेन को हराकर बाहर का रास्ता दिखाया।

विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता प्रणय ने दुनिया के 13वें नंबर के खिलाड़ी चीनी ताइपे के टिएन चेन चाउ को 42 मिनट में 21-6, 21-19 से हराया। टिएन चेन के खिलाफ प्रणय की 13 मैच में यह छठी जीत है। अगले दौर में दुनिया के नौवें नंबर के खिलाड़ी प्रणय की भिड़ंत प्रियांशु से होगी जिन्होंने पहला गेम गंवाने के बाद पूर्व चैंपियन लक्ष्य को एक घंटा और 15 मिनट चले मुकाबले में 16-21, 21-16 21-13 से हराया।

दुनिया के आठवें नंबर के खिलाड़ी प्रणय के खिलाफ टिएन चेन शुरुआत में बिलकुल भी लय में नजर नहीं आए। उन्होंने काफी सहज गलतियां की। वह कोर्ट से सामंजस्य बठाने में नाकाम रहे और उन्होंने कई बार कोर्ट के अंदर गिर रही शटल को छोड़ दिया। चीनी ताइपे के खिलाड़ी ने इसके अलावा कई शॉट नेट पर भीमारे। भारतीय खिलाड़ी की तेजी और सटीक शॉट का भी टिएन चेन के पास कोई जवाब नहीं था।

प्रणय ने मैच के बाद कहा, ''मैं अपनी योजना को अच्छी तरह से लागू करने में सफल रहा। उसे शुरुआती गेम में काफी परेशानी हो रही थी और वह कोर्ट से सामंजस्य नहीं बैठा पा रहा था जिसका मैंने फायदा उठाया। '' प्रणय ने मुकाबले की शानदार शुरुआत की और टिएन चेन की गलतियों का फायदा उठाकर 2-1 के स्कोर पर लगातार आठ अंक के साथ 10-1 की बढ़त बनाई। भारतीय खिलाड़ी ब्रेक के समय 11-2 से आगे था। प्रणय ने बढ़त को 13-2 किया और फिर इसे 16-4 तक पहुंचाया।

भारतीय खिलाड़ी ने 20-6 स्कोर पर 14 गेम प्वाइंट हासिल किए और फिर नेट पर आकर अंक जुटाते हुए पहला गेम आसानी से जीत लिया। दूसरे गेम में टिएन चेन ने शुरुआती दो अंक जुटाए लेकिन प्रणय ने लगातार चार अंक

के साथ 4-2 की बढ़त बनाई जिसमें क्रॉस कोर्ट स्मैश से जुटाए दो अंक भी शामिल थे। दूसरे गेम में भी हालांकि टिएन चेन ने पहले गेम की गलतियों को दोहराना जारी रखा। वह हालांकि इसके बावजूद प्रणय को अच्छी टक्कर देने में सफल रहे। उन्होंने क्रॉस कोर्ट स्मैश के साथ 7-6 की बढ़त बनाई और लगातार चार अंक के साथ ब्रेक तक 11-7 की बढ़त बनाने में सफल रहे। प्रणय ने इसके बाद कुछ शॉट नेट पर उलझाए और कुछ बाहर मारे जिससे टिएन चेन 14-8 से आगे हो गए।

राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने वाले 11 खिलाड़ियों का डोपिंग के लिए प्रतिबंध घटाया गया

नयी दिल्ली। पिछले साल गोवा राष्ट्रीय खेलों में भाग लेने वाले 11 खिलाड़ियों को डोपिंग आरोप तुरंत स्वीकार करने का फायदा मिला है और राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) ने उनका प्रतिबंध घटाकर तीन साल कर दिया है। इन खिलाड़ियों में ट्रैक एवं फील्ड के तीन एथलीट कमलजीत कौर (100 मीटर और 200 मीटर), अजय कुमार (5000 मीटर और 10000 मीटर) और हरजोधवीर सिंह (5000 मीटर और 10000 मीटर) भी शामिल हैं, जिन्होंने 25 अक्टूबर से 9 नवंबर तक गोवा में राष्ट्रीय खेलों में हिस्सा लिया था। नाडा ने अपनी नवीनतम सूची में उन खिलाड़ियों के नाम दिए हैं जिनका प्रतिबंध घटाकर तीन साल कर दिया गया है। डोपिंग के दोषी पाए गए खिलाड़ियों पर अमूमन चार साल का प्रतिबंध लगाया जाता है। इन खिलाड़ियों में तीन भारोत्तोलक प्रियदर्शनी थुरम (मेफेन्टरमाइन), मिथलेश सोनकर (एसएआरएम एलजीडी-4033) और एक नाबालिग (मिथाइलटेस्टोस्टेरोन) भी शामिल हैं लेकिन यह पता नहीं चला है कि उन्होंने राष्ट्रीय खेलों में अपनी स्पर्धा में भाग लिया था या नहीं। राष्ट्रीय खेलों में सात भारोत्तोलक डोपिंग के दोषी पाए गए थे। इनमें राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप की कांस्य पदक विजेता वंदना गुप्ता भी शामिल थी। इनके अलावा जिन अन्य खिलाड़ियों के प्रतिबंध की अवधि घटाई गई है उनमें पहलवान अनिल मलिक और साइकिलिस्ट अनीता देवी भी शामिल हैं।

यशस्वी को मिला रोहित शर्मा से गुरुज्ञान, विराट कोहली से लिया बैटिंग का मार्गदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिया वर्सेस अफगानिस्तान में भारत के मैच जीतने के बाद याशस्वी जायसवाल की खूब चर्चा हो रही है। उन्होंने भी रोहित शर्मा से मिले गुरुज्ञान और विराट कोहली से मिले मार्गदर्शन के बारे में बातचीत की। इंदौर में बैटिंग को लेकर एक बातचीत में यशस्वी ने कहा कि काफी मजा आया बैटिंग करने में और विकेट भी काफी अच्छा था। हमारे सामने अच्छा टारगेट था, तो मेरे दिमाग में यही था कि टीम को अच्छी शुरुआत देनी है। याशस्वी ने कहा कि उसके हिसाब से अगर मैं अच्छा स्टार्ट देता हूं तो मैं उसको जारी रखूं। मैं अच्छे शॉट्स खेलते रहूं, जिस पर रन आते रहें। फजलहक फारूखी को रनआउट करने पर उन्होंने कहा कि रनआउट को लेकर मैं थोड़ा कन्फ्यूज था कि मारूं कि नहीं मारूं? तो मैंने सोचा कि मैं पहुंच कर ही आउट कर सकता हूं। तो मैं दौड़ गया और गेंद स्टंप्स पर लगा दी। मैच के दौरान रोहित शर्मा के साथ बातचीत को लेकर यशस्वी ने कहा, वो बोलते हैं कि तू जा और बिंदास खेल, जो तेरे शॉट्स हैं। वो हमेशा हमारे लिए उपलब्ध रहते हैं और हमारा ध्यान रखते हैं, यह शानदार है अगर आपके पास ऐसे सीनियर खिलाड़ी हैं। याशस्वी ने कहा कि अभी मुझे और मेहनत करनी है और अच्छा प्रदर्शन करना है, तो मैं इसी में लगा हुआ हूं। यशस्वी ने विराट कोहली के साथ दूसरे विकेट के लिए 57 रनों की साझेदारी निभाई। विराट के साथ बैटिंग को लेकर कहा, विराट भइया के साथ बैटिंग करना हमेशा ही बहुत ही बढ़िया लगता है। उनके साथ बैटिंग करना गर्व की बात है। हमारी यही बात हो रही थी कि हम इस विकेट पर किस एरिया में शॉट खेल सकते हैं। वहीं शिवम दुबे के साथ छक्के लगाने को लेकर हो रही बातों पर यशस्वी ने कहा कि दोनों ही बड़े अच्छे छक्के मारते हैं।

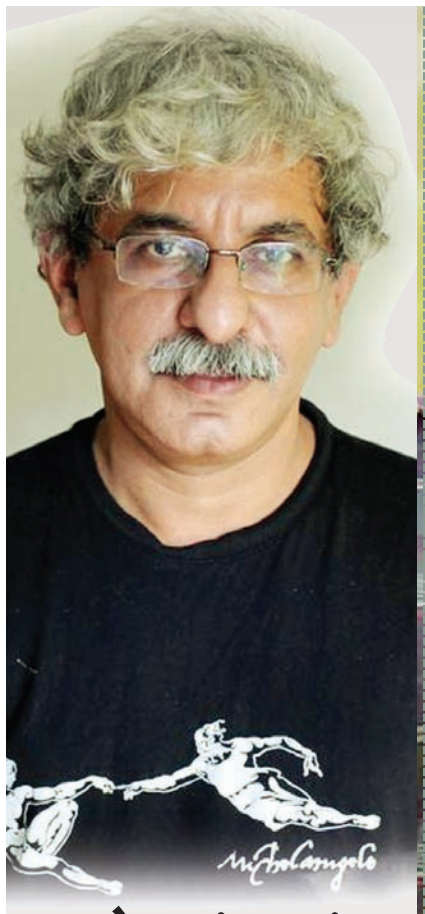

अपने यहां नए यंग एक्टर्स की कमी है

एक हसीना थी, बदलापुर, अंधाधुंध, डायरेक्टर श्रीराम राघवन ने हिंदी सिनेजगत को कुछ बेहतरीन थ्रिलर फिल्में दी हैं। उनकी पिछली फिल्म अंधाधुंध तो कल्ट फिल्मों में गिनी जाती है। वहीं, अब उनकी नई फिल्म मैरी क्रिसमस को लेकर भी फैंस में खूब उत्साह है।

आपकी पिछली फिल्म अंधाधुंध बहुत ही बड़ी हिट थी। उसके बाद नई फिल्म क्या बनाएं, इसे लेकर कोई दबाव था, क्योंकि आपकी फिल्मों से उम्मीदें बहुत बढ़ चुकी हैं? मेरी क्रिसमस को अगली फिल्म के लिए कैसे चुना?

मैं आपकी बात समझ रहा हूं। अंधाधुंध को बहुत ज्यादा प्यार मिला, मगर मेरे पर ऐसा कोई दबाव नहीं था कि अब मुझसे ज्यादा उम्मीदें हैं, तो उस हिसाब से ज्यादा बड़ी या बड़े स्टार के साथ फिल्म बनाऊं। मैं वैसे सोचता नहीं हूं। मैंने अपनी शुरुआत राम गोपाल वर्मा के साथ एक हसीना थी से की है और मुझे याद है, जब सत्या आई थी तब सब इतने उत्साहित थे कि वाह क्या फिल्म है, ये है, वो है, पर रामू फिल्म रिलीज होने के चौथे दिन पनवेल में अपनी नई फिल्म कौन शूट कर रहे थे। वो सत्या के हिट होने के दबाव या एक्साइटमेंट का हिस्सा ही नहीं बने। मैं भी ऐसे ही सोचता हूं कि जो हुआ, वो हुआ, अब आगे क्या। मेरी क्रिसमस की कहानी मेरे पास चार-पांच साल से थी। मैं चाहता तो अंधाधुंध के बाद किसी बड़े स्टार को कास्ट कर सकता था पर ये कहानी ऐसी थी कि मुझे बहुत ही अनदेखी, अलग सी जोड़ी चाहिए थी। जब मैंने विजय सेतुपति और कटरीना कैफ की जोड़ी के बारे में अपनी टीम से बात की तो सब बहुत एक्साइटेड हो गए, तो मुझे लगा कि शायद लोगों को भी ये जोड़ी एक्साइटिंग लगेगी।

आपको लगता है कि हमारी इंडस्ट्री रिस्क लेने से डरती है। आज बेशक आपकी हर कहानी को हाथों हाथ लिया जाएगा, पर तब आप जैसा सिनेमा बनाना चाहते थे, उस नएपन को सपोर्ट करने वाले कम होते हैं?

आप सही कह रही हैं। आज मेरी खराब कहानी को भी शायद हां बोल देंगे, जो कि खतरनाक है। लेकिन पहले, जैसे जॉनी गद्दार की कहानी मैं जिसे भी सुनाता था, वो बोलता था कि ये तो नेगेटिव स्टोरी है। वो तो रामू ने मुझे एक मौका दे दिया क्योंकि उनको रमन राघव पसंद थी और उससे मुझे एंट्री मिल गई। मगर एक हसीना थी चली नहीं थी, इसलिए मुझे आगे फिल्में बनाने में टाइम लगा। वैसे, आज के टाइम में आप रिस्क नहीं लेंगे तो दिक्कत होगी, क्योंकि अभी ऑडियंस ने इतनी फिल्में देख ली हैं। अभी बहुत सी फिल्में बनी है तो बैरियर टूटा है लेकिन अभी भी ये है कि इस स्टार को लेकर आओ, उस स्टार को लेकर आओ। मेरे जो दोस्त पहली फिल्म बना रहे हैं, उनको प्रड्यूसर बोलते हैं कि इनको लो इनको लो। देखा जाए तो हमारे यहां ऐक्टर्स की कमी है, खासकर नए यंग ऐक्टर्स की तो जितने नए ऐक्टर्स आएं उतना अच्छा है। आप यकीन नहीं करेंगी कि अंधाधुंध की कहानी मैंने पांच-सात ऐक्टर्स को सुनाई थी। सबने मना कर दिया। मैंने आखिर में सोचा कि मैं नया लड़का लेता हूं। मैं नया लड़का ढूंढने लगा था, तभी एक दिन आयुष्मान का फोन आ गया।

आपकी अगली फिल्म इक्कीस में पहले वरुण धवन थे, अब अगस्त्य नंदा लीड रोल में हैं। आपको क्यों लगा कि वरुण के बजाय अगस्त्य उस रोल में मुफीद रहेंगे?

ये कहानी 21 साल के लड़के की है। अरुण खेत्रपाल परमवीर चक्र पाने वाले सबसे युवा जांबाज हैं। वो सिर्फ 21 साल की उम्र में शहीद हो गए थे। हमने कोविड के पहले वरुण के साथ टेस्ट किया था, थोड़ा बहुत शूट भी किया था। मैं उनको चाहता था लेकिन इस बीच वरुण की उम्र भी बढ़ी है। मैं खुद 21 साल के लड़के के रोल में उसे एक्सेप्ट नहीं कर पा रहा था तो मैंने वरुण से बात किया। उनको भी बात सही लगी। मुझे 21 साल का लड़का चाहिए था तो मैं नया लड़का लेना चाहता था। एक दिन दिनेश विजन ने कहा कि एक नया लड़का है, उसको मिलो। मैं गया, तब उन्होंने बताया कि ये अगस्त्य नंदा है और अगस्त्य की पर्सनैलिटी में वो बात है।

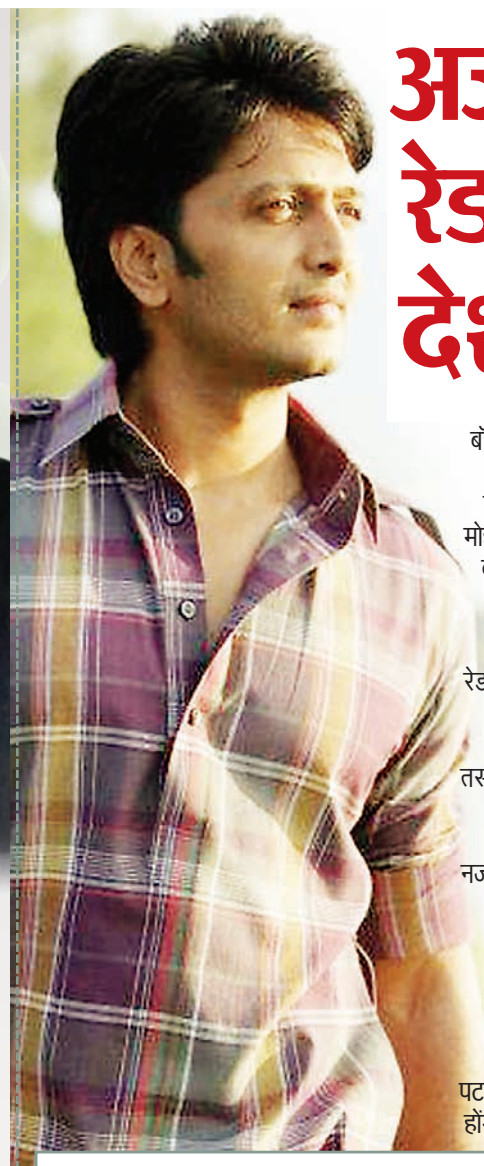

अजय देवगन की रेड 2 में हुई रितेश देशमुख की एंट्री

बॉलीवुड अभिनेता अजय देवगन की फिल्म रेड 2 पिछले कुछ दिनों से चर्चा में बनी हुई है। निर्माताओं ने फिल्म की घोषणा तो काफी पहले ही कर दी थी, लेकिन अजय देवगन की हीरोइन के नाम पर मोहर नहीं लगी थी। हाल ही में खबर सामने आई कि अजय के साथ वाणी कपूर नजर आएंगी। वहीं, अब मेकर्स ने फिल्म के विलेन के नाम पर मोहर लग दी है।

विलेन के किरदार में दिखेंगे रितेश

रेड 2 भी टी-सीरीज के बैनर तले ही बन रही है। प्रोडक्शन हाउस ने सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट साझा कर विलेन के किरदार में रितेश देशमुख के हिस्सा बनने की जानकारी दी है। तस्वीर साझा कर लिखा, टकराव के लिए तैयार हो जाएं। विलेन की भूमिका में आपका स्वागत है रितेश देशमुख। तस्वीरों में रितेश, अजय देवगन, रवि तेजा, वाणी कपूर और रेड 2 की टीम के साथ नजर आ रहे हैं। इन तस्वीरों पर रितेश के फैंस जमकर प्रतिक्रिया दे रहे हैं और खुशी जाहिर कर रहे हैं।

पहली बार अजय के खिलाफ दिखेंगे रितेश

रेड 2 में रितेश देशमुख पहली बार सिल्वर स्क्रीन पर अजय देवगन के खिलाफ होंगे। फिल्म में दोनों के बीच जबरदस्त मुकाबला देखने को मिलेगा। अजय देवगन अधिकारी अमर पटनायक की भूमिका में नजर आएंगे और उनका लक्ष्य रितेश ही होंगे। फिल्म का पहला भाग रेड 1980 के दशक में सरदार इंदर सिंह पर आईटी विभाग के अधिकारियों द्वारा किए गए वास्तविक जीवन के आयकर छापे पर आधारित था। निर्देशक राजकुमार गुप्ता और निर्माता भूषण कुमार, कुमार मंगत पाठक, अभिषेक पाठक और कृष्ण कुमार एक साथ नजर आएंगे। फिल्म की बड़े पैमाने पर शूटिंग मुंबई, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में होने वाली है। रेड 2 का निर्माण भूषण कुमार, कुमार मंगत पाठक, अभिषेक पाठक और कृष्ण कुमार ने किया है। हाल ही में अजय देवगन ने भी फिल्म के मुहूर्त की तस्वीरें साझा की थीं। यह फिल्म 15 नवंबर 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

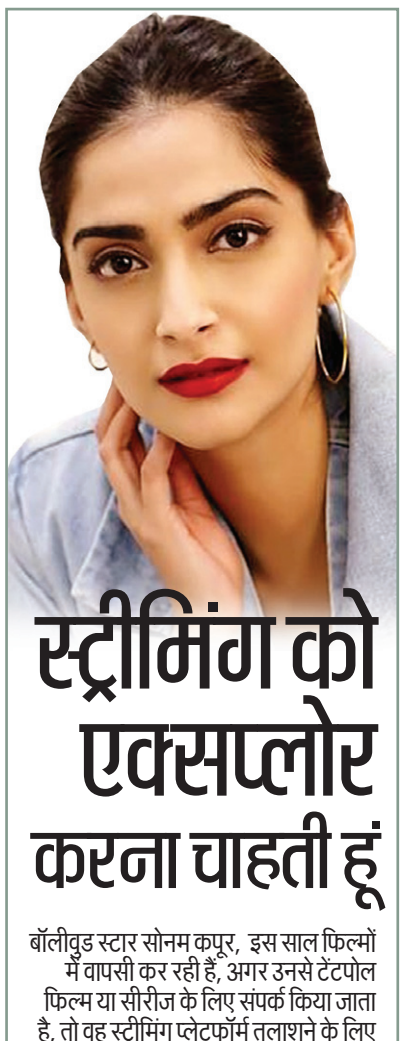

स्ट्रीमिंग को एक्सप्लोर करना चाहती हूं

बॉलीवुड स्टार सोनम कपूर, इस साल फिल्मों में वापसी कर रही हैं, अगर उनसे टेंटपोल फिल्म या सीरीज के लिए संपर्क किया जाता है, तो वह स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म तलाशने के लिए तैयार हैं! सोनम बताती हैं, मेरे लिए अच्छे कंटेंट और अच्छे सिनेमा का हिस्सा बनना ही मायने रखता है। जिस प्लेटफ़ॉर्म पर इसे रिलीज किया जा रहा है वह महत्वहीन है क्योंकि दुनिया बदल गई है। मैं स्ट्रीमिंग पर एक ऐसे प्रोजेक्ट में लीड करने के लिए उत्साहित हूं जो लोगों को प्रभावित करेगा। मुझे वहां के कंटेंट की विविधता बहुत पसंद है। सोनम स्ट्रीमिंग पर कंटेंट देखने की शौकीन हैं और खुश हैं कि कैसे प्लेटफ़ॉर्म ने लोगों की कंटेंट भूख को बदल दिया है। वह कहती हैं, मैं हमेशा से स्ट्रीमिंग में अपना कदम रखना चाहती थी, बशर्ते कि मैं किसी ग्लोबल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर टेंटपोल फिल्म या सीरीज का नेतृत्व कर रही हूं। मैं वर्षों से स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म द्वारा बनाए जा रहे उत्कृष्ट कंटेंट की बहुत बड़ी दर्शक हूं। वह आगे कहती हैं, मेरा मानना है कि स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म ने हमारे देश के कंटेंट को आगे बढ़ाया है, इसे अधिक रचनात्मक रूप से विघटनकारी और गतिशील बनाया है। स्ट्रीमिंग कंटेंट ने विश्व स्तर के साथ-साथ भारत में भी जो स्तर स्थापित किया है वह अविश्वसनीय है।

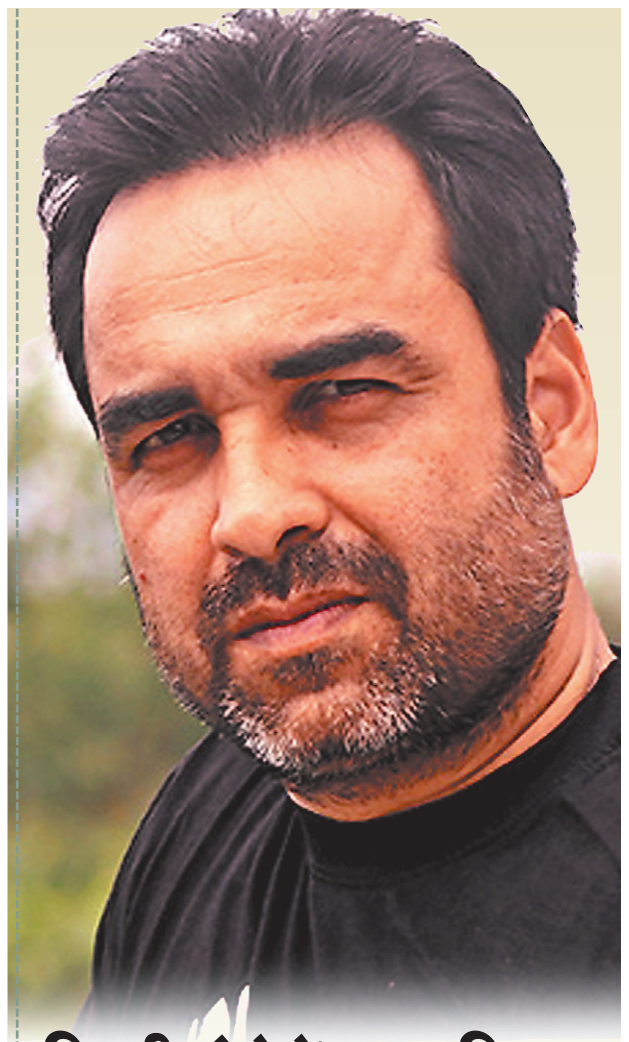

किसी प्रोपेगेंडा का हिस्सा नहीं बनेगी मैं अटल हूं

अभिनेता पंकज त्रिपाठी इंडस्ट्री के सबसे प्रतिभाशाली और उभरते हुए सितारे हैं। इन दिनों पंकज अपनी अपकमिंग फिल्म मैं अटल हूं को लेकर चर्चा में हैं। यह फिल्म पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन पर आधारित है। फिल्म की रिलीज में महज कुछ दिन ही बचे है। वहीं, इसकी रिलीज से पहले पंकज त्रिपाठी ने खुलासा किया है कि निर्माताओं ने सुनिश्चित किया है कि फिल्म किसी प्रोपेगेंडा का हिस्सा नहीं बनेगी। पंकज त्रिपाठी ने एक साक्षात्कार में कहा, मैं अटल हूं समझदार और आकर्षक तरीके से बनाई गई है। यह अटल जी के जीवन की कहानी है और आजादी के बाद से भारत की यात्रा की भी। चुनाव कैसे होंगे, मतदान कैसे होगा, समाज कैसे बदला। इस बायोपिक का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ प्रेरणा देना भी है। पंकज ने आगे कहा, जब मैं पहली बार मैं अटल हूं सेट पर पहुंचा, तो मुझे आत्मविश्वास महसूस नहीं हुआ। मैं शूटिंग के पहले दिन कभी भी आश्वस्त नहीं होता, चाहे भूमिका कोई भी हो, काल्पनिक हो या गैर-काल्पनिक। मैं हमेशा सोचता हूं, मैं क्या करूंगा? मुझसे यह कैसे होगा? दो-तीन दिनों से मैं किरदार का सुर ढूंढने के लिए संघर्ष कर रहा था। त्रिपाठी ने आगे कहा, मैं अटल हूं की शूटिंग के पहले दिन मैं सभी ऊंचे-ऊंचे इशारे और उनकी मुद्राएं कर रहा था। मैं अटल जी की नकल नहीं करना चाहता था और न ही प्रोस्थेटिक्स मेकअप की मदद से उनके लुक के मामले में उनके करीब जाना चाहता था, मुझे उनकी आत्मा को पकड़ना था। साक्षात्कार में बातचीत के दौरान फिल्म के प्रोपेगेंडा बनने को लेकर पंकज ने कहा कि उन्होंने और उनकी टीम ने इसके प्रामाणिक होने के लिए हर संभव प्रयास किया है। यह फिल्म किसी प्रोपेगेंडा का हिस्सा नहीं बनेगी। पंकज ने आगे कहा, हम इसके बारे में जागरूक और सचेत थे, लेकिन हमारा पूरा उद्देश्य अटल जी के व्यक्तित्व को बड़े पर्दे पर सामने लाना था। चूंकि यह फिल्म एक बायोपिक है, इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना था कि चीजें तथ्यात्मक रूप से सही हो। मुझे लगता है कि व्यक्ति को स्क्रीन पर सबसे ईमानदार तरीके से पेश करना चाहिए। हम इंसान हैं, हमारे अंदर अच्छाइयां और कमियां दोनों हैं और इसे इसी तरह से स्क्रीन पर पेश किया जाना चाहिए। गौरतलब है कि मैं अटल हूं 19 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

पुणे हाईवे में नजर आएंगे अमित साध

अमित साध ने विभिन्न फिल्मों में अपने शानदार प्रदर्शन से कई लोगों का दिल जीता है, और दुरंगा 2 में उनकी भूमिका ने उनकी सफलता में और इजाफा किया है। अब, प्रशंसक यह देखने के लिए उत्सुकता से इंतजार कर रहे हैं कि पुणे हाईवे में उनके लिए क्या नया आने वाला है। अगर हम एक बात करे पुणे हाईवे के बारे में तो हम देखेंगे कि पुणे हाईवे के बारे में खूब बातें कर रहे हैं और हर कोई यह देखने के लिए उत्सुक है कि अमित साध इस नई फिल्म में कैसा अभिनय करने वाले हैं। हम अभी तक कहानी के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि यह दिलचस्प होने वाली है, और उम्मीद है कि अमित साध एक अद्भुत प्रदर्शन देंगे। ऑन स्क्रीन पर अपनी करिश्माई उपस्थिति के लिए मशहूर अमित साध में दर्शकों से जुड़ने की अनोखी क्षमता है। उनका प्रदर्शन सिर्फ अभिनय के बारे में नहीं है; वे यादगार पल बनाने के बारे में हैं जो दर्शकों के दिमाग में बने रहते हैं। पुणे हाईवे के क्षितिज पर होने के साथ, प्रशंसक इस नई सिनेमा यात्रा में उनके द्वारा लाए जाने वाले जादू को देखने के लिए इंतजार नहीं कर सकते।

इमरान हाशमी ने बेटे के लिए किया भावुक पोस्ट

इमरान हाशमी न सिर्फ एक शानदार अभिनेता हैं, बल्कि एक जिम्मेदार पिता भी हैं। अभिनेता के बेटे अयान को 2014 में प्रथम चरण के कैंसर का पता चला था। इस बीमारी से पूरे परिवार ने डटकर सामना किया और 2019 में उनके बेटे ने कैंसर से यह जंग जीत ली। आज यानी 13 जनवरी को इमरान ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर अपने बेटे के साथ तस्वीरें और एक वीडियो साझा किया। साथ ही, अयान के कैंसर निदान के दस साल पूरे होने पर दिल छू लेने वाले नोट भी लिखा। इंस्टाग्राम पर साझा गई एक तस्वीर में पिता-पुत्र की जोड़ी को एक साथ पोज देते हुए देखा जा सकता है। एक अन्य तस्वीर में इमरान को कैमरे के सामने अपने बेटे के कंधे पर हाथ रखते हुए देखा जा सकता है। तस्वीर शेयर करते हुए उनके एक पोस्ट में लिखा है, आज अयान की बीमारी का पता चलने के दस साल हो गए... हमारे जीवन का सबसे कठिन दौर, लेकिन विश्वास और आशा के साथ हमने इस पर काबू पा लिया। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उसने इस पर काबू पा लिया... और आज भी वह मजबूती के साथ खड़ा है। आपके प्यार और प्रार्थनाओं के साथ हमारे साथ खड़े रहने के लिए बहुत-बहुत आभार। एक अन्य पोस्ट में इमरान ने अपने बेटे के साथ एक तस्वीर और एक खूबसूरत पल को कैद करते हुए एक वीडियो भी साझा किया। इसमें अयान उस किताब का शीर्षक पढ़ रहे हैं जो उनके पिता ने उनके लिए लिखी थी। वीडियो में अयान को यह कहते हुए सुना जा सकता है, किस ऑफ लाइफ- कैसे एक सुपरहीरो और मेरे बेटे ने कैंसर को हराया। झलकियां साझा करते हुए, अभिनेता ने लिखा, कोई ऐसा व्यक्ति जिस पर मैं हमेशा निर्भर रह सकता हूं... मेरा बेटा, मेरा दोस्त, मेरा सुपरहीरो - अयान!!! अभिनेता को आखिरी बार सलमान खान और कैटरीना कैफ की अभिनीत फिल्म टाइगर 3 में देखा गया था।

दूसरी बार दूल्हा बनेंगे प्रतीक बब्बर

प्रतीक बब्बर बॉलीवुड के सबसे प्रतिभाशाली एक्टर्स में से एक हैं। राज बब्बर के एक्टर बेटे प्रतीक बब्बर फिल्मों के साथ-साथ अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर अक्सर सुर्खियों में रहते हैं। ये तो हम सब जानते हैं कि पत्नी सान्या से अलग होने के बाद एक्टर की लाइफ में नए प्यार की एंट्री हुई थी। खबरें थी कि वह बार-बार देखो एक्ट्रेस प्रिया बनर्जी को डेट कर रहे हैं। वहीं वैलेंटाइन डे के मौके पर एक्टर नेअपने सीक्रेट रिलेशनशिप को ऑफिशियल कर दिया है। उन्होंने गर्लफ्रेंड के साथ इंस्टाग्राम पर तस्वीरें शेयर कर प्यार का इज़हार किया था। वहीं अब खबर आ रही है कि दोनों ने गुपचुप तरीके से सगाई कर ली। एक रिपोर्ट के मुताबिक एक्टर के एक करीबी दोस्त ने खुलासा किया है कि प्रतीक बब्बर और प्रिया बनर्जी एक दूसरे को अंगूठी पहना चुके हैं। कपल के रिश्ते की जानकारी देते हुए करीबी ने कहा- 28 नवंबर को प्रतीक का जन्मदिन आता है और उससे दो दिन पहले ही एक्टर ने प्रिया को प्रपोज कर दिया था। इसके बाद दोनों ने एक दूसरे से सगाई कर ली।

भाग्यशाली हूं कि किलर सूप का हिस्सा बना

एक्टर मनोज बाजपेयी, जो डार्क कॉमेडी थ्रिलर फिल्म किलर सूप में नजर आ रहे हैं, ने साझा किया कि यह शो सिर्फ एक बार देखने के लिए नहीं है, और यह प्याज की परतों को छीलने जैसा है, इसमें खोजने के लिए हमेशा कुछ न कुछ होता है। वर्सेटाइल एक्टर ने कहा कि वह इसका हिस्सा बनकर भाग्यशाली हैं। कोंकणा सेन शर्मा स्टारर एक हेडलाइन न्यूज से प्रेरित, और मनोज एक महत्वाकांक्षी गृहिणी की मनोरंजक कहानी का वर्णन करते हैं जो एक रेस्तरां के मालिक होने और सूप रेसिपी को सही करने के अपने सपने का पीछा करती है, लेकिन झूठ और कवर-अप के जाल में फंस जाती है। एक्टर ने दर्शकों से सीरीज को बार-बार देखने का आग्रह किया है, और एक बेहतर मनोरंजन अनुभव के लिए प्रत्येक एपिसोड का आनंद लेने के महत्व पर जोर दिया है। मनोज ने कहा, किलर सूप सिर्फ एक बार देखने वाली फिल्म नहीं है। सीरीज में की गई कलात्मकता और प्रयास की वास्तव में सराहना करने के लिए, मैं दर्शकों से इसे कम से कम तीन बार देखने का आग्रह करता हूं। हर बार देखने से नई अनुभूतियां सामने आएंगी और पात्रों और उनके संकल्पों के साथ गहरा संबंध बनेगा। प्रभाकर प्रभु शेट्टी और उमेश शेट्टी की दोहरी भूमिका निभाने वाले मनोज ने साझा किया, यह प्याज की परतों को छीलने जैसा है, इसमें खोजने के लिए हमेशा कुछ न कुछ होता है। कहानी और पात्रों में बहुत सारे सूक्ष्म तत्व हैं, जिन पर यदि आप बारीकी से ध्यान नहीं देंगे तो आप चूक सकते हैं। हर कहानी अपने किरदार खुद चुनती है। मैं इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने के लिए भाग्यशाली हूं।

टाइगर 3 मेरे दिल के बहुत करीब है

बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान ने कहा कि एक अभिनेता के रूप में उनका सबसे बड़ा और एकमात्र काम लोगों का भरपूर मनोरंजन करना है। सलमान की नवीनतम रिलीज टाइगर 3 अब डिजिटल प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम हो रही है। उसी के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, टाइगर फ्रेंचाइजी को पहली फिल्म से ही सभी प्लेटफार्मों चाहे वह थियेटर हो, या सैटेलाइट भरपूर प्यार मिल रहा है। उन्होंने कहा, यह देखना आश्चर्यजनक लगता है कि टाइगर 3 पहले सिनेमाघरों और अब स्ट्रीमिंग पर कैसे हिट रही। उन्होंने कहा, मैं अपने सोशल मीडिया के माध्यम से अपने दर्शकों के साथ संपर्क में हूं और मैं अब टाइगर 3 के ओटीटी पर आने के बाद लोगों का प्यार देख सकता हूं। सलमान ने कहा, एक अभिनेता के रूप में मेरा सबसे बड़ा और एकमात्र काम लोगों का भरपूर मनोरंजन करना है और मुझे खुशी है कि टाइगर 3 को दुनिया भर के लोग पसंद कर रहे हैं। सलमान ने आगे कहा, टाइगर 3 एक ऐसी फिल्म है जो मेरे दिल के बहुत करीब है। जब यह सिनेमाघरों में हिट हो गई तो यह बेहद निजी लगा और अब यह रिलीज होने के कुछ ही दिनों के भीतर डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिट हो गई है। उन्होंने कहा, टाइगर हमेशा लोगों का मनोरंजन करने के लिए मौजूद रहेंगे। टाइगर 3 में कैटरीना कैफ और इमरान हाशमी भी हैं।